स्व० कवि श्री द्यानतरायजी कृत

चर्चा शतक

टीकाकार—

श्री हरजीमलजी पानीपतवाले

प्रकाशक—

सरस्वती भण्डार,

मंदिरजी श्री आदिनाथ स्वामी एवं महावीर स्वामी

(निर्माण-कर्ता-श्री मेघराजजी लुहाड़िया)

चोरूकों का रास्ता, जयपुर

दीपमालिका
वीर नि. सं. २४८२

मूल्य
सवा रुपया

मुद्रकः—
श्री वीर प्रेस
मनिहारों का रास्ता, जयपुर ।

प्रकाशकीय

जो हस्त लिखित प्रति चर्चाशतक की हमारेयहां मन्दिरजी में है उसकी टीका का ढंग बडा ही विशिष्ट व अनूठा है, एक एक पद के छोटे २ टुकड़े का न्यारा २ अर्थ इतनी उपयुक्तता से किया हुआ है कि साधारण से साधारण बुद्धिवाले व्यक्ति के भी ठीक २ भावार्थ समझ में आ जाता है; किन्तु अनेकानेक असुविधाओं के कारण उसको उस रूप में प्रकाशित न कराया जा सका, जिसका हमें बडा खेद है; क्योंकि वह अधिक उपयोगी प्रमाणित होता। इसके अतिरिक्त ब्लाक आदि न बन पाने आदि की दिक्कतों के फलस्वरूप बहुत से नकशे भी छपने से रह गये हैं फिर भी जो कुछ आपके सामने उपस्थित कर पाए हैं उसका सम्पूर्ण श्रेय श्रीमान् भंवरलालजी न्यायतीर्थ को ही है जिनकी कि देखरेख में पुस्तक के मुद्रण आदि को व्यवस्था हुई है तथा अपना अमूल्य सहयोग देकर जिन्होंने पुस्तक का सम्पादन किया है। श्री सुशील कुमारजी B. A. साहित्यरत्न, साहित्यालंकार, शास्त्री M.J.Ph. व श्री ज्ञानचन्दजी M A. को भी मैं धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकता जिन्होंने क्रमशः हिन्दी अंग्रेजी में पुस्तक का आमुख लिखने का कष्ट किया है।

आशा है विद्वान पाठक इस प्रयत्न को अपनाकर सफल बनावेंगे जिससे भविष्य में भी इसी प्रकार सत्साहित्य के सृजन व प्रकाशन के कार्य को चालू रखने की हमारी भावना को बल मिले।

चांदूलाल रांवका

विषय सूची

पद सं०	विषय	पृष्ठ सं०
१६	छहकाल और गुणस्थानों में संहनन	४५
२०	चौवीस तीर्थंकरों के अन्तराल	४८
२१	कर्म प्रकृतियों का कौन २ से गुणस्थान में बन्ध	५१
२२	मानुषोत्तर पर्वत का परिमाण	५४
२३	देवलोक प्रवीचार कथन	५६
२४	१६६ प्रधान पुरुषों की गणना	५६
२५	१४८ कर्म प्रकृतियां	६१
२६	भव-क्षेत्र-पुद्गल-जीव विपाकी प्रकृतियों का वर्णन	६३
२७	सर्वघाती, देशघाती और अघाति प्रकृतियों का वर्णन	६७
२८	पांच त्रिभंगी वर्णन	६६
२९	बन्ध-उदय-सत्ता	७०
३०	पाप प्रकृतियां	७३
३१	पुण्य प्रकृतियां	७५
३२	जिनमत की श्रद्धा	७६
३३	एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख कुल कोड का वर्णन	७८
३४	अंक गणना के भेद	८०
३५	तेरहवें गुणस्थान में सात त्रिभंगी	८३
३६	बंध दशक कथन	८६
३७	तीन लोक के अकृत्रिम चैत्यालयों की संख्या	८८
३८	तीन कम नवकोटि मुनियों की उत्कृष्ट संख्या	९१
३९	अढाई द्वीप का ज्योतिष मंडल	९३

पद् सं०	विषय	पृष्ठ सं०
४०	आयु कर्म के बंध के नव भेद	९६
४१	सत्तावन जीव समास	९८
४२	अट्ठानवैं जीव समास	१०१
४३	साढे सैंतीस हजार प्रमादों के भेद	१०३
४४	ज्योतिष मंडल की ऊँचाई	१०५
४५	गुणस्थानों का गमनागमन	१११
४६	चौबीस तीर्थंकरों के शरीर का वर्णन	११५
४७	गोम्मटसार का आदि नमस्कार अष्टक सूचक	११६
४८	षट् विधि मंगल	११८
४९	पांच प्ररूपणा चौदह मार्गणा में गर्भित	१२०
५०	बारह प्रसिद्ध पुरुषों के नाम	१२१
५१	सम्पूर्ण द्वीप समुद्रों के चन्द्रमाओं की गिनती	१२२
५२	अधोलोक के चैत्यालयों की संख्या	१२५
५३	मध्यलोक के चैत्यालयों की संख्या	१२६
५४	उर्ध्वलोक के अकृत्रिम चैत्यालय	१२८
५५	सौधर्म इन्द्र की सेना की गणना	१३०
५६	एकेन्द्री से सैनी पर्यंत जीवनि के इंद्रियों के विषय की सीमा	१३२
५७	केवली समुद्घात समय कौन २ से योग होते हैं	१३५
५८	मिथ्यात्वी की मुक्ति न हो, सम्यक्त्वी की हो	१३७
५९	आठ कर्मों के आठ दृष्टान्त	१३९

पद सं०	विषय	पृष्ठ सं०
६०	गुणस्थानों के ५७ आस्रव	१४१
६१	गुणस्थानों में १२० प्रकृतियों का बंध	१४४
६२	गुणस्थानों में १२२ प्रकृतियों का उदय	१४७
६३	गुणस्थानों में १२२ प्रकृतियों की उदीरणा	१५०
६४	गुणस्थानों में नाना जीवों की अपेक्षा १४८ प्रकृतियों की सत्ता	१५१
६५	अन्तर्मुहूर्त की जन्म मरणों की संख्या	१५५
६६	घातिया कर्मों की ४ प्रकृतियां	१५६
६७	मोहनीय कर्म की २८ प्रकृतियां	१६१
६८	अघाती कर्मों की प्रकृतियां एवं कर्मों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	१६३
६९	नाम कर्म की प्रकृतियां	१६५
७०	भाव त्रिभंगी कथन गुणस्थानों में ५३ भाव	१६७
७१	जंबूद्वीप के पूर्व पश्चिम का वर्णन	१७०
७२	जंबूद्वीप के दक्षिण उत्तर का वर्णन	१७३
७३	अधोलोक के श्रेणीबद्ध बिलों की संख्या	१७५
७४	उर्ध्वलोक के श्रेणीबद्ध विमान	१७८
७५	त्रेसठ इन्द्रक विमान का वर्णन	१८०
७६	लवणोदधि के १००८ बड़वानल कथन	१८२
७७	प्रकृतियों का बन्ध और उदय	१८४
७८	पंचपरावर्तन का स्वरूप	१९०



Introduction

The author of the present work, Shri Dhyanat Rai a jaina poet of 18th century A D., lived at Agra. He is acknowledged as a first grade jaina poet of that period.

In the present work, the author has dealt upon the subject matter of karnanuyoga mainly. He has given the details of verious topics in a very concise and lucid form, such as:—the constitution of the universe with its three regions : upper, lower and middle, the jaina chatalayas (temples) situated in different regions of the universe, general theory of karmas and the special principles of karmic bondage, stoppage and destruction; the theory of Gunasthanas (stages of spiritual evolution), the one hundred sixty nine great persons—Tirthamkaras, Narayanas etc., the causes of birth in various Gatis. It is important to note that the author has not merely explained these notions but has put the numerical calculations into verse form, which is really a very difficult job. (It may be added that this is the only work of its own kind in whole of the Hindi jaina Literature.)

It is very interesting to note, as is clear from verse No. 103 and the name of the work 'charcha shatak'

itself that in that period Gommattsara and its difficult subject matter was a thing of common discourses. It shows the keenness of common man that he was not afraid of the difficult portions of Jain Vidya, but tried to understand even them. On the other hand, it reflects upon our deplorable condition that in this age of enlightenment today we are rather afraid of the subject matter of karnanuyoga as a whole. Being dazzled with the discoveries of modern science we have lost faith into the Jaina Geography and cosmology which had their source in the omniscience of Tirthamkaras themselves. But it is a fact that the modern Science and its discoveries do not satisfy the scientists themselves and they look upon their conclusions and upon the premises on which they draw those conclusions as final. Therefore there is no reason why should we lose faith or interest in Jaina Geography, cosmology and such subjects of karnanuyoga.

In the end it may be added that this versification of many topics of Gommattsara and Triloksara in summary form makes it elasy for us to memorise.

Its commentary by Shri Harjimal Panipat wala is in good prose in which he has explained well the terms used in the verses.

Biltiwala House,
Jaipur
18-11-55

Gyan chandra M.A.

— आमुख —

प्रस्तुत ग्रन्थ 'चरचा शतक' के रचयिता स्वर्गीय कवि द्यानतराय का जन्म संवत् १७३३ में हुआ था। इनके पितामह श्री वीरदासजी थे और पिता श्यामदासजी थे। आपका निवास स्थान आगरा था किन्तु आप दिल्ली भी आया जाया करते थे। ये गोयल गौत्रीय अग्रवाल श्रावक थे। द्यानतरायजी के चरित्र-निर्माण और अटल श्रद्धान को जागरूक बनाने का श्रेय पं० बिहारीदासजी और पं० मानसिंहजी को है जिनके धर्मोपदेश व प्रेरणा ने कवि के जीवन-क्रम को बदल दिया और यौवन की आंधी व वासना के कुचक्र से मुक्त होकर कवि द्यानतरायजी जैनत्व की ओर उन्मुख हो चले। संसर्ग का जीवन में कितना महत्व है यह कवि के जीवन से स्पष्ट है। एक ओर विषय-वासनाओं का मृदुतर आकर्षण, दूसरी ओर त्याग का कठोर तम संकल्प था। कविवर ने साधुजन संगति के प्रभाव से अपने संकल्पको पूर्ण किया. तीर्थयात्रा की, परम-पवित्र तीर्थराज सम्मेद-शिखर के दर्शन का आनन्द लाभ लिया, व अनुभव और अध्ययन के लिए अपने अमूल्य समय का सदुपयोग करना प्रारंभ कर दिया। वे जैन साहित्य के सांगोपांग अध्ययन में दत्तचित होगए। यह क्रमिक अभ्यास दिन प्रतिदिन उत्तरोत्तर उन्नति को प्राप्त होता गया। अन्त में कवि हृदय से जो भारती प्रस्रवित हुई वह पंडित मंडल में आदर एवं श्रद्धा की वस्तु बन गई।

महाकवि की साहित्य रचना मुख्यतः दिल्ली एवं आगरा में हुई। 'धर्म विलास' उनका अन्य संग्रह ग्रंथ है। इनका रचना काल लगभग ११७७ के आस-पास का प्रतीत होता है। धर्म-विलास' में अनेक पद और विविध विषयों की रचनाएँ हैं। द्यानतरायजी की पूजाएँ भी अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। इनमें भक्ति-भावना की जो विशिष्टता मिलती है वह निस्संदेह सराहनीय है।

'चरचा शतक' भी सुप्रसिद्ध ग्रंथ है। सूत्ररूपसे किसी बात को समझाना और सरलतम भाषा का उपयोग रचना के महत्त्व को द्विगुणित कर देता है। तत्कालीन जनता को इस ग्रन्थराज से अवश्य अत्यन्त लाभ हुआ होगा क्योंकि कठिन से कठिन विषय को भी उन्होंने इनकी रचनाओं में साररूप में अत्यन्त सुन्दर व सुव्यवस्थित रूप में पाया। अतः कंठाग्र करने में बड़ी सुविधा रही। आज तक भी अनेक व्यक्तियोंको इसके अंश याद हैं जो इसकी लोकप्रियता का प्रमाण है। धर्म साहित्य और दर्शन अगाध है। इसके बिना वास्तविकता को नहीं समझा जा सकता है। द्यानत-रायजी का यह प्रयत्न इस दिशा में विशेष उपादेय सिद्ध हुआ है। कमसे कम शब्द, सरल भाषा, मनहर पद, छंद और अलंकारों के सौष्ठव से युक्त कवि की यह रचना जो अपना साहित्यिक महत्त्व रखती है, वह हिन्दी साहित्य के कवियों में दुर्लभ है और धार्मिक महत्व कितना है, जो तो सर्व विदित ही है। तिस पर करणानुयोग के शुष्क एवं जटिल विषय पर लेखनी उठाकर उसे सफलता के साथ कवितावद्ध करने का कवि का साहस अत्यंत्य श्लाघनीय है।

चरचा शतक में साहित्यिक सौंदर्य की अभिश्री मन्दाकिनी तरंगित-सरिता को भांति निरंतर प्रवाहित होती प्रतीत होती है, साथ ही इस अभिनव अभिव्यक्ति के पृष्ठ में सैद्धांतिक तथ्य का सुदृढ़ गढ़ भी है। धार्मिक मान्यताएँ और पूर्वाचार्यों के ज्ञाना-लोक में प्रतिभासित जो सामग्री इसमें है, वह आधुनिक विज्ञान के युग में चाहे हमारे मस्तिष्क में न उतरे तथापि इससे इसका महत्त्व कम नहीं हो जाता। यह युग विज्ञान का है, आत्मज्ञान का नहीं, जिसके अभाव में मानव अज्ञानान्धकार में डूब रहा है। जो कुछ इस पुस्तक में है वह विज्ञान की वस्तु नहीं, इसके परे, इसकी पहुंच के बाहर की है। हमारी ससीम शक्तिवाली आंखें वहां तक नहीं पहुंच सकतीं। अतएव आजके युग में यह तर्क की अपेक्षा श्रद्धा की वस्तु अधिक है।

भारतीय परंपरा के अनुरूप मंगलाचरण से ग्रंथराज का प्रारंभ होता है। अपने इष्ट की स्तुति के द्वारा कवि उसकी विशिष्टताओं का वर्णन करता है। वह लक्षणहीन इष्ट नहीं मानता। उसके इष्ट का मापदण्ड है, एक कसोटी है जिसे वह गुणों के रूप में व्यक्त करता है और उसकी वन्दना कर अपना कल्याण समझता है। सम्पूर्ण लोकालोक जिनके ज्ञान में झलकता है ऐसे श्री अरहंत को नमस्कार कर कवि लोक अलोक का क्रमशः वर्णन करता है, उनके घनफल, स्वरूप आदि पर, ६ काल १४ गुणस्थान, कर्मों की १४८ प्रकृतियां, मानुषोत्तर पर्वत का परिमाण, १६६ प्रधान पुरुष, पञ्च त्रिभंगी आदि विषयों पर प्रकाश डालता है।

अंक गणना के प्रकार वैशिष्ट्य को समझाते हुए उन्होंने ग्यारह भेद किए हैं। तीन लोक के अकृत्रिम चैत्यालयों और अढ़ाई द्वीप के ज्योतिष मण्डल आदि का भी वर्णन किया गया है। आयु कर्म बंध के नो भेद, प्रमाद के भेद, गुणस्थानों के गमनागमन आदि विषयों को भी कवि ने स्पष्ट किया है। सातों नर्क, १६ स्वर्ग, ८४ लाख योनियां, ९३ कर्म प्रकृतियां, आश्रव, उदय, उदीरणा आदि की एक तालिका सी दी है जो कवि के असाधारण ज्ञान एवं अध्ययन की विशालता का परिचायक है।

जैन भूगोल का विषय अत्यंत विशाल है। आधुनिक विज्ञान के अनुसंधान से परे का सत्य जो आर्ष ग्रंथों और तपस्वी महर्षियों के आत्मज्ञान का परिणाम है, साधारण बुद्धि का व्यक्ति यदि उसे न समझ पाये तो इसमें आश्चर्य ही क्या है जब कि आज के चोटी के विद्वान भी उसकी वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग यथावत् किया गया है जो दुरूह नहीं है किन्तु जिन्हें जैनधर्म एवं सिद्धान्त का प्रारंभिक ज्ञान भी नहीं है उनके लिए अवश्य कठिन हो सकता है। इस दुरूहता को सरल बनाने के दृष्टिकोण से पानीपत निवासी श्री हरजीमल कृत टीका सहित यह पुस्तक प्रकाशित की जारही है। यह टीका अप्रकाशित थी। टीका की यह भाषा अवश्य ही आज पुरानी हो गई है किन्तु फिर भी इसमें आकर्षण व मधुरता है। सुन्दर संचयन, भावों की स्पष्टता, प्रश्नोत्तर का अपना प्रकार एवं भाषा की प्राजंलता से यह अब भी

उतनी ही उपयोगी है। सबसे बड़ा महत्त्व तो इसका यह है कि इससे हमें तत्कालीन हिन्दी भाषा के रूप का बोध होता है। चर्चा शतक ग्रंथ पहिले भी श्रद्धेय पं० नाथूलालजी प्रेमी के सम्पादकत्व में प्रकाशित हो चुकी है, परन्तु उसमें टीका आधुनिक खडो बोली में है। प्रश्नोत्तर रूप में अपने निराले ढंग के कारण इसकी शैली आज की खड़ी बोली से अधिक बोधगम्य प्रतीत होती है; जैसा कि इसका अपना नाम है, इसका प्रकार भी 'चरचा' का ही है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर इसको अपने असलीरूप में ही प्रकाशित कराया जा रहा है। आशा है यह प्रयत्न पाठकों को रुचिकर प्रतीत होगा।

इस ग्रंथ के प्रकाशन का भार सरस्वती भंडार स्थानीय मंदिरजी श्री मेघराजजी द्वारा वहन किया गया है जहां इसकी प्राचीन हस्त लिखित प्रति उपलब्ध थी। आज के युग में निःसंदेह यह एक आदर्श व अनुकरणीय कदम है। यदि मंदिरों की अतुल धनराशि का उपयोग इसी प्रकार के आदर्श को लेकर सत् साहित्य के प्रकाशन व प्रचार के कार्य में किया जाए तो बहुत कुछ सेवा हो सकती है।

साधना सदन
दीपमालिका
वीर नि० संवत् २४८२

सुशीलकुमार शाह





❀ श्रीवीतरागाय नमः ❀

स्व० कवि द्यानतरायजी कृत

चर्चा शतक

(टीका सहित)

मंगलाचरण

—: पंच परमेष्ठी की स्तुति :—

❀ छप्पय ❀

जय सरवज्ञ अलोक लोक इक उडुवत देखैं,
हस्तामल ज्यौं हाथलीक ज्यौं, सरव विशेखैं।
छहों दरव गुन परज कालत्रय वर्तमान सम,
दर्पण जेम प्रकाश नाशि मल कर्म महातम।
परमेष्ठी पांचौं विघनहर, मंगलकारी लोक मैं,
मनवचनकाय सिरनाय भुवि, आनंद सौं द्यौं ढोक मैं।१।

जै कहिए जयवंते प्रवर्तो, सर्वज्ञ कहिए अर्हंतदेव जी, कैसे हैं सर्वज्ञदेव, सबनै जानै हैं। जिस मांहि और द्रव्य

नाहीं पाईए सो अलोक, जा विषैं छहों द्रव्य पाईए सो लोक, सो सब लोक अलोक कूं, जैसे आकाश मंडल विषैं एक तारा सर्वांग दीसै तैसैं सर्व लोक अलोक कूं प्रत्यक्ष युगपत्–एक ही बार देखै और जानै, कैसे देखैं और जानैं, जैसे हाथ विषैं आँवला प्रत्यक्ष दीसै तैसें प्रत्यक्ष देखैं हैं, जानै हैं। अथवा हाथ की लीक जैसे प्रत्यक्ष दीसै तैसे सब प्रत्यक्ष देखैं और जानैं, सर्व विशेष करि भलै प्रकार युगपत्-एक ही वार देखै और जानैं। छह द्रव्य कौन कौन ? जीव, पुद्‌गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल। इन द्रव्यनि के गुण पर्याय, अनंतानंत गुण अनंतानंत पर्याय तिन द्रव्यौं की तीन काल संबंधी अतीत परनया, अनागत परणवैगा, वर्तमान परणवै है तिनकौं वर्तमान की नांई केवलज्ञान ज्योति विषैं युगपत्–एक ही बार अनंतानंत गुण अनंतानंत पर्याय सर्व प्रतिबिंबित ही है। जैसें आरसी की निर्मलता पाय सहज ही घटपट प्रतिभासै तैसैं केवलज्ञान मई ज्योति विषैं इच्छा विना सहज ही षट् द्रव्य गुण पर्याय सहित प्रत्यक्ष भासै, झलकै। नाश किए हैं च्यारि घातिया कर्ममल, ते कौन, ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय अंतराय। इनके घात करनेतैं अर्हंत कहाए। अर कर्मरूपी महान अंधकार के नाशतैं केवलान रूपी सूर्य उदय भया। परम कहिए परमात्मा के इष्टी तातैं परमेष्ठी, ते कौन कौन ?

अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु। कैसे हैं पंच परमेष्ठी, सर्वविघ्नों के हरनहारे हैं, नाश करनेवाले हैं सर्वथा, बहुरि कैसे हैं पंच परमेष्ठी, सर्व अपमंगल के हरनहारी हैं। तीनों लोक विषै मं कहिए पाप, तिसै गालै सो मंगल अथवा मंग जो सुख ताहि लाति कहिए देवे सो मंगल ताके करने वाले हैं। मन वचन काय की शुद्धता करिकै वंदौ हौं, मस्तक नमाय कैं पृथिवी सौं लगाइ कैं, खुस्यालगीस्यौं, प्रफुलितातासौं मगनतासौं बडा हर्ष सहित मैं वंदौ हौं, दंडौत करौं हौं, नमस्कार करौं हौं, अरिहंतदेवकौं वा परमेष्ठीनिकौं।

—: श्री नेमिनाथजी की स्तुति :—

बन्दौं नेमि जिनंद चंद, सबकौं सुखदाई।
बल नारायण वंदि, मुकुटमणि सोभा पाई॥
व्यंतर इंद्र बतीस, भवन चालीसौं आवैं।
रवि ससि चक्री सिंह, सुरग चौबीसौं ध्यावैं॥
सब देवन के सिरदेव जिन,
सुगुरुनि के गुरुराय हो।

हूजे दयाल मम हाल पै,
गुण अनंत समुदाय हौ ॥ २ ॥

वंदौहौं, नमस्कार करौहौं भाव सहित, किसकौं ? नेमिनाथ बावीसवां तीर्थंकर कौं। कैसे हैं नेमिनाथ, शरदकाल के चन्द्रमा समान निर्मल है शासन कहिए आज्ञा जिनकी, बहुरि कैसे हैं, तीन लोक के सब प्राणिनि कौं महा सुखदाई हैं, सबकौं सुख के करनहारे हैं। बल कहिए पद्मनामा बलभद्र वान व बलदेव, नारायण कहिए कृष्ण त्रिखंडीवान व नारायण चरण कमलनि कौं वंदतैं नमस्कार करतैं नेमिनाथ के चरण कमलनि की किरणनि के स्पर्शतैं तिस बलभद्रनारायणों के मुकुट माहिं लगे हैं रतन, तिन रतनों की अधिक सोभा भई। व्यंतर जाति के देव आठ प्रकार हैं। तहां एक एक जाति विषै दोय दोय इन्द्र अर दोय दोय प्रतीन्द्र, सब मिलि बत्तीस भए, बत्तीसों इन्द्र बड़े उत्साह सहित आवै। भवनवासी देव दश प्रकार हैं। तहां एक एक जातिविषै दोय दोय इंद्र अर दोय दोय प्रतीन्द्र सब मिलि चालीस भए, ते चालीसौं इंद्र उत्साह सहित पूजन के अर्थि आवै। ज्योतिषी देव पांच प्रकार हैं परंतु तिन विषैं इंद्र दोय हैं। रवि कहिए सूर्य तो प्रतीन्द्र शशि कहिए चन्द्रमा इन्द्र, ए दोय इन्द्र, मनुष्यनि का इंद्र

चक्रवर्ती, छह खंड का धनी, नवनिधि–चौदह रतन का स्वामी; तिरजंचनि को इंद्र सिंह पूजन कूं आवै। स्वर्ग सोलह तिनके इंद्र चौबीसः–पहले दोय स्वर्ग विषै दोय इंद्र दोय प्रतींद्र, तीजे चौथे में दोय इंद्र दोय प्रतींद्र, पांचवां छठा में एक इंद्र एक प्रतींद्र, सातवां आठवां में एक इंद्र एक प्रतींद्र, नवमां दसमां ग्यारमां बारमां मैं च्यारि इंद्र प्रतींद्र, (२ इन्द्र एवं २ प्रतींद्र) बाकी च्यारमैं च्यार इन्द्र, च्यार प्रतींद्र, सब देवनि के इंद्र भवन चालीस, व्यंतर बत्तीस, रवि शशि, चक्री, सिंह, स्वर्ग चौवीस तिन के सिरदेव सिरताज हैं।

तीन लोक का स्वामी भगवान वीतराग देव हैं। जिन वीतराग देव अठारह दोष रहित छयालिस गुन विराजमान हैं। सुगुरु कहिए निग्रंथ महाव्रती मुनीश्वर तिनके परम उपकारी गुरू हो। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्रनि की एकता रूप मोक्ष मार्ग के दिखावनहारे हो, सांचा सरधान सांचौ ज्ञान, सांचा चारित्र को स्वरूप जिनदेव विन कौन प्रकासे है। हे वीतराग देव दयाल हूजे कृपा कीजे, मो ऊपरि, संसार तैं छुडाय कें मोक्षपद दीजे औसी कृपा कीजे। कैसे हो तुम, अनंते गुणौं के समुदाय हौ, पूज्य हो, अनंत गुन तुम ही विषैं साक्षात् प्राप्त भये हैं, दोषनि की रंच मात्र निसांणी भी नाहीं है।

वीतराग स्तुति

इन्द फणिंद नरिंद, पूजि नमि भगति बढ़ावैं।
बल नारायण मुकटबंदि, पद शोभा पावैं ॥१॥
विन जानैं जग वन भ्रमैं, जानि छिन सुरग बसावै।
ध्यान आनि रिधिवान, अमरपद आप कहावै ॥२॥
सब देवनि के सिरदेव जिन,
सुगुरुनि के गुरुराय हौ।
हूजे दयाल मम हाल पै,
गुन अनंत समुदाय हौ ॥३॥

इन्द्र कहिए स्वर्गवासी इन्द्र, फणींद्र कहिए भवनवासीनि का इन्द्र, नरेन्द्र कहिए चक्रवर्ती, भक्तिसेती भावसहित पूजा करै, भावसेती नमस्कार करै, पूजा करिकैं नमस्कार करिकैं, स्तोत्र पढि जिनका गुणानुवाद गाय अत्यंत भक्ति बढ़ावै। बलभद्र वा नारायणों के मुकुट जिनके चरण कमल वंदतैं अत्यन्त शोभा पावैं, अपूर्व जिन चरणों की किरनि करकैं, महाशोभा पावै। वीतराग देवके चरण कमलोंके विना जानैं, विना पूजैं, विना सुमरैं यह जीव संसार वन विषैं अनंत काल भ्रमण करै है। महान घोर केवलीगम्य दुख सहै है, ते दुख वचनगोचर नांही। जे

वीतरागदेव के चरन कमल जानैं, पूजैं, सुमरैं, भक्ति बढावैं सो भक्ति क्षण एक मांही सिताबी[1] ही स्वर्ग मांहि ले जाय सही। और जो जीव अर्हंतदेव नैं भावसहित धारैं, स्मरैं सो जीव सांसारिक सुख ऋद्धि सिद्धि इन्द्र चक्रवर्त्ती के सुखनि कौं भोगिकैं पीछैं अमरपद कहिए मोक्ष ताहि पावै। ता मोक्ष विषैं अतींद्रिय सुख भोगवै, फेरि संसार विषैं भ्रमैं नाहीं, तातैं अमर कहिए। सब देवतानि के सिरदार हैं, सिरताज हैं, सबके बड़े हैं। एक जिन वीतरागदेव अठारह दोष रहित, छियालीस गुण सहित जिनेन्द्र हैं। सब सुगुरु के वीतरागदेव गुरू हैं। हूजै दयाल हूजे, कृपा कीजै मेरै उपरि, मोक्ष पद दीजे। कैसे हो तुम अनंत गुण करि पूज्य हो, अनंत गुण तुम विषैं साक्षात् प्रकट हैं।

अकृत्रिम चैत्यालय प्रतिमा संख्या—स्तुति

❋ छप्पय ❋

बन्दौं आठ किरोर, लाख छप्पन सत्तानौ।
सहस च्यारि सौ असी, एव. जिनमंदिर जानौ॥
नव से पच्चिस कोरि, लाख त्रेपन सत्ताइस।
बंदौं प्रतिमा सबै, सहस नौ सौ अड़तालिस॥

---

१ सिताबी–शीघ्र

व्यंतर ज्योतिक अगणित सकल,
चैत्यालय प्रतिमा नमौं।
आनन्दकार दुखहार सब,
फेर नहीं भववन भमौं॥ ४ ॥

अकृत्रिम चैत्यालय सब ८५६९७४८१ (आठ कोड़ि छप्पन लाख सित्याणवै हजार च्यारि सै इक्यासी) हैं। तिन मांहि प्रतिमा, नवसै पचीस करोड़, त्रेपन लाख, सत्ताईस हजार, नवसै अड़तालीस (९२५५३२७९४८) बंदों हौं नमस्कार करूं हूँ। ए सब तीन लोकके चैत्यालयनि की संख्या पाताल लोक, मध्यलोक, उर्द्धवलोक संबंधी जिनदेव कही। तिन चैत्यालयनि विषैं प्रतिमा बंदों हौं, समस्त प्रतिमांजीनिकौं। व्यंतरदेव अष्टविध—१.किंनर, २. किंपुरुष, ३. महोरग, ४. गंधर्व, ५. यक्ष, ६. राक्षस, ७. भूत, ८. पिशाच, इनि विषैं, अर ज्योतिषी पांच प्रकार—१ चंद्रमा, २ सूर्य, ३ ग्रह, ४ नक्षत्र, ५ तारा, इन विषैं, असंख्याते चैत्यालय हैं, अर असंख्याती ही प्रतिमा हैं तिनकों बंदौं मन वचन कायतैं नमस्कार करौं हौं। जगतप्रतरकै तीनसै जोजन की कृति[1] रूप प्रतरांगुलनि का अर संख्यात का भाग दीजे इतने व्यंतरदेवनि के जिन मंदिर हैं। अर

१–कृति-वर्ग अर्थात् तीन सौ योजन के वर्ग का

जगत प्रतरकै दोयसै छप्पन प्रतरांगुल का वर्ग का अर संख्यात का भाग दीजे, इतने ज्योतिषी देवनिके जिन मन्दिर हैं। कैसी हैं प्रतिमां ? आनन्द की करनहारी हैं। बहुरि कैसी हैं सब दुखनि की हरनहारी हैं, नाशकरनहारी हैं। तिनके बन्दिवे तैं बहुरि संसार वन का भ्रमण नाहीं होय है, कर्मनि का नाश करि अविनाशी सुखका लाभ होय है।

अब सर्व जीव राशि के अनन्तवें भाग प्रमाण अनन्ते सिद्धनि नैं नमस्कार।

॥ सिद्ध स्तुति ॥ (छन्द छप्पय)

लोकईस तनुवात सीस, जगदीश विराजैं।
एकरूप वसुरूप, गुन अनतातम छाजैं॥
अस्ति वस्तु परमेय, अगुरु लघु द्रव्य प्रदेसी।
चेतन अमूरतीक, आठ गुन अमल सुदेसी॥
उतकृष्ट जघन अवगाह,
पदमासन खरगासन लसैं।
सब ज्ञायक लोक अलोक विधि,
नमों सिद्ध भवभय नसैं॥ ५ ॥

अर्थ—तीन लोक के ईश्वर हैं सिद्ध परमेष्ठी, तनुवात-वलय के अन्तविषैं शिर परि लोक कै ऊपरि सिद्ध परमेष्ठी

विराजे हैं, तिष्ठैं हैं। जगत के मांही ईश्वर अनन्ते सिद्ध परमेष्ठी तनुवातवलय कै अन्त विराजै हैं। बहुरि कैसे हैं सिद्ध परमेष्ठी, कैसे हैं सिद्ध द्रव्य की अपेक्षा एकरूप हैं। बहुरि कैसे हैं—व्यवहार करि आठ गुनमई हैं। १-सम्यक्त्व, २-ज्ञान. ३-दर्शन, ४-वीर्य, ५-सूक्ष्मत्व, ६-अवगाहना, ७-अगुरु लघु,८-अव्याबाध। बहुरि कैसे हैं सिद्ध परमेष्ठी निश्चयनयकरि अनन्तानन्त गुणनि करि विराजमान हैं सिद्ध समूह। अर अनेक वस्तु स्वभावनैं लीए होय सो अस्तित्व कहिए, अनेक वस्तु स्वभाव सहित वस्तुत्त्व कहिए, अपनी मर्यादा लीए होय सो प्रमेयत्व कहिए, न भास्वान ऐसा स्वभाव लीए होय सो अगुरुलघु कहिए, अपने गुन पर्याय नैं लीए द्रवै सो द्रव्य कहिए, अपनी सत्ता विषैं तिष्ठै सो प्रदेशी कहिए, अपना चेतन ज्ञान स्वभाव लीए होय सो चेतन कहिए, चेतन स्वभाव सहित पुद्गल के बीस गुण रहित होय सो अमूर्तिक कहिए, ज्ञानदर्शन सहित स्पर्श रस, गंध, वर्ण, रहित अमूर्तीक है। ए आठ गुन निर्मल हैं। विशुद्ध हैं। द्रव्य के स्वाभाविक आठौं गुन हैं, शुद्ध हैं। सुदेसी कहिए सब जीवनि विषैं ए आठौं गुन पाईए। सिद्धालय विषैं सिद्धनि की उत्कृष्ट अवगाहना सवा पांचसै धनुष की पाईए, अधिक नाहीं पाईए, अर आठ वर्षका कै केवलज्ञान उपजै तिस

की साढ़े तीन हाथ की जघन्य अवगाहना पाईए। यातैं घाटि न पाईए यह नियम है। और सिद्धालय विषैं दोय आसन पाईए:- एक पद्मासन, दूसरा कायोत्सर्ग आसन। इन दोनों ही आसनों तैं मोक्ष हो है, यह नियम है। और सिद्धान्तनि विषैं आसन चौरासी कहे हैं, तिन विषैं मोक्ष योग्य दोय आसन १-पद्मासन, २-कायोत्सर्ग हैं, और नाहीं, यह नियम है। मोक्ष विषै सिद्ध जीव कैसे हैं?जिस मांहि छहों द्रव्य पाईए सो लोक तनुवातवलय तांई, उसतैं ऊपरि अलोक, ऐसे सब लोकालोक के ज्ञायक कहिए एक समय मांहि देखन जानन हारे हैं, ऐसे सिद्ध परमेष्ठी, ऐसे अनन्त सिद्धों कौं नमस्कार करौं हौं। भव कहिए संसारका भय वा भ्रमण तिसका नाश हो है।

अथ आचारज, उपाध्याय और मुनीश्वर ए तीनों साधु कहे हैं तातैं इन तीनों को वन्दना करौंहो।

॥ आचार्य उपाध्याय सर्व साधु की बन्दना ॥

॥ छन्द छप्पय ॥

आचारज उवझाय, साधु तीनों मन ध्याऊँ।
गुन छत्तीस पचीस बीस, अरु आठ मनाऊँ।
तीनों कौं पद साध, मुकतिको मारग साधैं।
भवतन भोग विराग राग सिव ध्यान अराधैं ॥

गुनसागर अविचल मेरुसम, धीरजसौं परिसह सहैं ।
मैं नमौं पाय जुग लाय मन, मेरौ जिय वांछित लहैं ।५।

अर्थः—१— दर्शनाचार, २—ज्ञानाचार, ३—चारित्राचार, ४—तप आचार, ५—वीर्याचार ए पांच आचार आप आचारैं, औरनि आचरावैं सो आचारिज, ग्यारह अङ्ग चौदह पूर्व कण्ठ पाठ पढैं सो उपाध्याय कहिए, पांचों इन्द्रिय छठा मननैं वसि करै सो साधु कहिए, इन तीनौं को मन विषै ध्याऊँ हूँ, पूजौं हूं, नमस्कार करौं हौं । कैसे हैं ए तीनों साधु—आचारिज उपाध्याय सर्वसाधु ? तिन विषैं आचारिज कै तौ गुन छत्तीसः—बारह तप छह आवश्यक क्रिया, पंचाचार, दश लक्षण धर्म, तीन गुप्ति ए छत्तीस भए । उपाध्याय के गुन पच्चीसः—ग्यारह अङ्ग, चौदह पूर्व सब पचीस भए । उक्तं च गोमट्टसारविषै—

"वारस तव छा वासा पंचाचारा तहेव दह धम्मो ।
गुत्ती तियसंजुत्तो छत्तीस गुरुस्सणायव्वो"

मुनीश्वरों के गुन अट्ठाईसः—सो पांच महाव्रत, पांच समिति, पांच इन्द्रियनिका वसि करना, छह आवश्यक क्रिया, केशनि का लौंच, वस्त्र त्याग, स्नान का त्याग, भूमि पै सोवनां, दांत धोवा का त्याग, खड़ा भोजन लेनां, एक

बार लघु भोजन करना, ए अट्ठाईस मूलगुण अरु चौरासी लाख उत्तर गुणों कूं पालै ऐसे मुनिराजों कौ ध्याऊँ हूँ। आचारज उपाध्याय सर्वसाधु इनि तीनों का पद जो है ताहि साधि करिकैं, कहा साधैं? मुक्ति कहिए कर्म-क्षय लक्षण निर्वाण मोक्ष जामें समस्त कर्मनि का क्षय होय ताका मार्ग कहिए, सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र ए तीन रत्नत्रय के निरन्तर साधक हैं। तातैं तीनौं नै साध कहिए। उक्तं च दशाध्याय विषै—"सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः"। बहुरि कैसे हैं आचार्य उपाध्याय साधु? भव कहिए संसार, तनु कहिए शरीर अर भोग कहिए पांचौं इन्द्रियनि के विषय, तिन तैं अत्यन्त विरक्त हैं। बहुरि कैसे हैं—जिनका एक मोक्ष पै राग है और क्यांही पै राग नाहीं, एक मोक्ष की ही वांछा है और नाहीं। बहुरि कैसे हैं—च्यारि भेद धर्मध्यान—आज्ञा विचय, अपाय विचय, विपाक विचय, संस्थान विचय, च्यारि प्रकार शुक्लध्यान—पृथक्त्व, वितर्क विचार, एकत्व वितर्क विचार, सूक्ष्म क्रियाप्रतिपाति, व्युपरत क्रियानिवृत्ति, ध्यान आराधै हैं ध्यावै हैं। बहुरि कैसे हैं? गुणनि के समुद्र हैं, गुणनि करि गंभीर हैं, जिन समान औरनि में ए कभी गुण नांहीं। अविचल कहिए अडोल निकंप मेरू बराबर हैं। ऐसे साधु बडे धीर वीर हैं, बडे साहसी हैं, उपसर्ग परीषहादि तैं कदा

काल नैंकमात्र भी नांही चिगै हैं। मैं नमस्कार करौं हौं जिनूं के चरणकमलनि कूं मन लायकै। मेरा जीव वांछित फल पावै।

अथ लोकाकाश अलोकाकाश का वर्णन कीजै है।

अलोक और लोक का स्वरूप (छप्पय)

अमल अनादि अनंत, अकृत अनमित अखंड सब
अचल अजीव अरूप पंच नहिं इक अलोक नभ॥
निराकार अविकार, अनंत प्रदेश विराजै।
सुद्ध सुगुन अवगाह, दशौं दिश अन्त न पाजै॥
या मध्य लोक नभ तीन विध,
अकृत अमिट अनईसरौ।
अविचल अनादि अनंत सब,
भाख्यो श्री आदीश्वरौ॥ ७॥

अर्थ—कैसा है अलोकाकाश—अत्यन्त निर्मलहै, अनादिकाल का है, जाकी आदि नाहीं। अनंत काल ताईं रहेगा, अर जाका अन्त नाहीं। काहू करि कीया नांहीं, जाकी मर्यादा नाहीं, अनन्ता है। एक प्रकार अखण्ड है, जामें दूजा खण्ड नांही। सब जायगां फैलि रह्या है। चलाचल नाहीं, सास्वता है। चेतन स्वभाव

तैं रहित है, अरूप कहिए अमूर्तिक है, और पांच द्रव्य १–जीव, २–पुद्गल, ३–धर्म, ४–अधर्म, ५–कालरूप नांही। एक अलोकाकाश द्रव्यरूप है। जा विषै धर्म, अधर्म, पुद्गल, जीव, काल ए पाइए सो लोक, याँ सिवाय और सब अलोक है। जिसका कोई आकार नांही, गोल तिकोणां, चौकोणां इत्यादि आकार नांहीं। जिस मांहिं कोई विकार नाहीं, शुद्ध है। जिस आलोकाकाश के अनन्त प्रदेश हैं अनन्त प्रदेशों करि विराजमान है, शोभायमान है। जिसके शुद्ध गुन हैं अशुद्धता नांही। जिसकी अवगाहना सर्वत्र दशौं दिशा मांहि फैल रही है जिसका अन्त नाहीं। ऐसा अनन्ता सास्वता पाईए है।

इस अलोकाकाश के मध्य लोकाकाश तीन प्रकार है। सो १–अधोलोक, २–मध्यलोक, ३–उर्द्ध्वलोक, ऐसा लोकाकाश तीन प्रकार है। बहुरि कैसा है लोकाकाश द्रव्य-काहूनै कीया नांही, अनादि निधन है। निज स्वभाव तैं चलेगा नांहीं, मिटैगा नांही, कोई ईश्वर याँका कर्त्ता नांही स्वयं सिद्ध है। इससौं चलाचल नाहीं, अचल है। अनादि काल का है। अनन्तकाल ताईं सब लोकाकाश रहेगा। श्री आदि जिन वृषभदेवनैं यह दिव्यध्वनि करि कह्या है, भाख्या है।

आगे लोकाकाश स्वरूप का वर्णन कीजिए है—

[तीन लोक का स्वरूप]

सवैया इकतीसां (मनहर)

पूरव पच्छिम सात नर्क तलैं राजू सात,
आगैं घटा मध्यलोक राजू एक रहा है ।
ऊंचै वढि गया ब्रह्मलोक राजू पांच भया,
आगैं घटा अंत एक राजू सरदहा है ॥
दच्छिन उत्तर आदि मध्य अंत राजू सात,
ऊँचा चौदह राजू षट् द्रव्य भरा लहा है ।
असंख्यात परदेस मूरतीक कियौ भेस,
करै धरै हरै कौन स्वयं सिद्ध कहा है ॥८॥

अर्थः—पूर्व दिशा पश्चिम दिशा विषैं सातवां नरक तलैं एक राजू मांहि निगोद है, तहां चौडाई राजू सात की है। पूर्व पश्चिम दिशा तैं आगैं सातमं नरक तैं ले अनुक्रम तैं घटा, मध्यलोक विषैं पूर्व पश्चिम राजू एक चौडा रहा मेरू की चूलिका ताईं, आगैं ऊपरि तैं चौडाई मांहि वढि गया। कहां तक ताईं वढि गया—ब्रह्मलोक कहिए पांचमां स्वर्ग तहाँ पूर्व पश्चिम चोडा राजू पांच रहा। मेरू की जड तैं लेय पांचमा स्वर्ग तक साढे तीन राजू ऊँचा है।

आगै पंचम स्वर्ग तैं ऊपरि तैं सिद्धालय ताईं चोडाई विषैं घटि गया, अन्त कहिए लोक का अन्त सिद्धालय तहाँ एक राजू चोड़ा है। हमनैं इस भांति सरधान करया है। यह चौडाई पूर्व पश्चिम सम्बन्धी जाननी। दक्षिण उत्तर दोन्यूं दिशानि विषैं आदि कहिए निगोद तलै तैं ले करि, मध्य कहिए मध्यलोक विषैं अरु अन्त कहिए सिद्धालय ताईं सब ठौर दक्षिण उत्तर सात राजू चौडा है। बहुरि सर्व लोक कैसा है—चौदह राजू ऊँचा है, चौडाई पीछै कहि आए हैं। जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल, ऐसे छहों द्रव्यनि करिकैं भरया है। जहाँ ताईं ए द्रव्य पाइये तहां ताईं लोकाकाश कहिए, अर जहाँ तैं ए आकाश विनां पांचों न पावैं तहाँ तैं अनन्तो अलोकाकाश जानना। बहुरि कैसा है लोकाकाश—असंख्यात प्रदेशी है। एक परमाणूं जितनी जायगां दाबै तिसका नाम प्रदेश है। बहुरि कैसा है लोकाकाश द्रव्य—अधः, मध्य, उदूर्ध्व ऐसे तीन भेद वा भेष धरनैं तैं लोक कौ व्यवहार करि मूर्तिक कहिए, निश्चय करि अमूर्तिक है। कोई ब्रह्मादिक लोक का कर्त्ता नाहीं। कोई विष्णु आदि धारणां पालना का कर्त्ता नाहीं, जिस लोक का ईश्वरादिक हरता, नाश करता नाहीं है, ऐसा है। बहुरि कैसा है लोकाकाश—आप ही तैं निष्पन्न है, काहूं नें

किया नाहीं, अनादिकाल का है। ऐसा अरहन्त भगवान ने कहा हैं।

पुनः कहिए फेरि लोकाकाशका विशेष वर्णन कीजै है।

तीनों लोक तीनों वातवलै बेढे सब ठौर,
वृच्छछाल अण्डजाल तनचाम देखिए।
अधोलोक वेत्रासन मध्यलोक थाली भन,
ऊरध मृदङ्ग गनि ऐसो हि विशेखिए॥
कर कटि धारि पाउं कौं पसारि नराकार,
डेढ मुरज आकार अविनासी पेखिए।
घरमांहि छीको जैसे लोक है अलोक बीचि,
छीके कौं अधार यह निराधार लेखिए॥

अर्थ—कैसा है लोकाकाश द्रव्य—अधोलोक, मध्यलोक, उदूर्ध्वलोक, ऐसे तीन लोक। १—घनोदधिवातवलय २—घन वातवलय, ३—तनुवातवलय, इन तीनों वातवलयनि करि सर्वलोक सर्व ठौर वेष्टित है, बेढ़ि राख्या है, आच्छादित करि राख्या है। इहाँ दृष्टांत कहै हैं—जैसे वृक्ष कै सर्व जायगां छाल कहिए वलकल लिपटी रहै तैसे वातवलय तीन लोक कै लिपटे हैं। जैसे शरीर परि सर्वांग चाम लिपटा रहै तैसें तीन लोक वातवलय

वेष्टित हैं। जैसें अंडा कै ऊपरि चाम जाल सर्वत्र लिपटा रहै तैसें तीन लोक कौं तीनों वातवलय सब जायगां लिपटा है, आच्छादि रह्या है। बहुरि तीनों लोक किस आकार है–तहाँ अधोलोक तलैं तैं जड मांही वेत्रासन कहिए खारी के आकार (बेत के बने हुए आसन के समान) है एतावत चौरस है। मध्य लोक थाली कै आकार है एतावत गिरदाकार है, वलयाकार है, थंडिल भूमि चौकोर है। उद्र्ध्वलोक मृदंग कै आकर है एतावत ऊँचाई रूप है।

यह कथन भलै प्रकार जांनि चित्त विषैं श्रद्धान करिए। बहुरि सर्वलोक किस आकार है-दोनों हाथ कमरि परि धरि कैं दोनौं पांव पसारैं हैं तलैं तैं. ऐसे नर के आकार है, मनुष्य के आकार है। बहुरि सर्व लोक किस आकार है–आधा मृदंग सूधा औंधा धरिकैं ता ऊपरि सारा मृदंग धरिये, ऐसैं डेढ मृदंग के आकार है। मुरज कहिए मृदंग ताकै आकार। बहुरि कैसा है लोक–अविनाशी सास्वता है। यह निश्चय जांननां। जैसे घर के कोठे कै बीचि छींका एक लटकै है तैसे लोकाकाश असंख्यात प्रदेशी अनंत अलोककाश कै मध्य विराजै है, सोहै है, तिष्ठै है। और छींका घर मांहि कोठा तिसकै लगी है कडी, तिसकैं लगा है कडा, तिस कडा कै आधार लटकै

है। और यह लोकाकाश सो निराधार है किसी के आधार नांही। स्वयं सिद्ध है, अपने ही आधार है, इस भांति कहा है सो श्रद्धान करिए।

बहुरि लोकाकाश का वर्णन कीजिए है।

तीन सौ तेताल राजू घनाकार सब लोक,
घनोदधि घन तनुवात के आधार है।
तामें चौदह चौकूंटी त्रसनाली त्रस थावर,
परैं तीनसौ उन्तीस थावर सदा रहै।
दच्छिन उत्तर डोरी त्रियालीस राजू सब,
पूरब पश्चिम उनताल कौ विचार है।
राज अंस बीसासौ तेतालीस अधिक कहे,
लोक सीस सिद्धनि कौं मेरो नमोकार है।१०।

अर्थ–तीन सै तीयालीस राजू का घनाकार सर्व लोक–निगोद तैं लेकरि सिद्धालय पर्यंत घन है। एक राजू चौड़ा एक राजू लंबा, एक राजू ऊंचा खंड कल्पना कीजिए तो लोक का घन रूप तीनसे तीयालीस खंड हो है।

भावार्थ—सात राजू की जगत श्रेणी ताका वर्ग गुणचास राजू सो जगत्प्रतर अर ताको ऊंचाई सात करि गुणें तीनसे तीयालीस राजू सर्व लोक का घनाकार हो

है। कैसा है सर्वलोक—घनोदधिवातवलय जल और पवनका ताकैं आधार है। घनवातवलय—पवन का ताके आधार घनोदधि वातवलय है। अर घन वातवलय तनुवातवलय के आधार है। अरु तनुवातवलय निराधार सर्व अनन्ता अलोकाकाश के बीचाबीच है। सो ए आधार व्यवहार कल्पनां है निश्चयनयतें सब ही आप आपके आधार हैं। किसी का किसी के आधारपना नाहीं। तिस लोकाकाश के मध्यविषैं चौदह राजू ऊंची त्रस नाडी, एक राजू लम्बी चौडी चौकोर फासा के आकार त्रस नाडी है। जैसे ओंखली के बीच बांस की भोगली गाडिए तैसे लोक के मध्य त्रस नाडी है। एता विशेषः भोगली तो पोली अर गोल है अर त्रस नाडी त्रस थावर जीवनि करि भरी सघन चौकोर है। त्रस नाली बाहिर लोक केवल थावरनि करि भरया है, त्रस जीव तहां नांही। इस त्रस नाली तैं परैं तीनसै उनतीस राजू विषैं स्थावर एकेन्द्री जीव सदा पाइए और त्रस जीव त्रस नाडी विषैं ही पाईए, बाहरि नांही पाईए। बाहिर तौ एकेन्द्रिय जीव सदा पाईए। सो सर्व लोक का दक्षिण उत्तर की डोरी बीयालीस राजू है। लोक तलैं जड विषैं लम्बाई राजू सात और ऊपरि अंत विषैं राजू सात और ऊंचा चौदह राजू। दोन्यौं तरफ कैं चौदह राजू मिले ७+७+१४+१४=

सर्व बीयालीस राजू की डोरी भई। और सर्व लोक के पूर्व पश्चिम दिशादिशानि सम्बन्धी डोरी उणतालीस राजू की है। सो पूर्व पश्चिम की चौडाई विषैं घटाव बढाव है। तहां लोक तलैं राजू सात, अरु लोक तलैं तैं लेइ मध्यलोक तक राजू सात,अरु क्यू ंक घाटि नौ कौं चौदहवौं भाग दोऊ तरफ का मिले पंदरह राजू किंचित् ऊन च्यारि को चोदहवों भाग अमध्य लोक तैं ब्रह्म स्वर्ग तक, ब्रह्म स्वर्ग तैं लोक अन्त तक राजू च्यारि अर एक को आठवों भाग किंचित् ऊन च्यारि तरफ मिले सोलह राजू साढा किंचित् ऊन लोक शिखर राजू एक, सब मिलि आठ स्थान गुणतालीस राजू भए अरु अंश–अरु एक राजू का एक सौ बीस भाग करिए ता विषै तीयालीस भाग अधिक लेनें तब पूर्व पश्चिम की सर्व तरफ डौरी गुणतालीस राजू अर एकसौ बीस भागनि विषैं तीयालीस भाग अधिक जानने। ऐसे लोक के सीस कहिए अग्र भाग तनुवातवलयविषैं निः कल परमात्मा–अनंते सिद्ध विराजमान हैं। तिनकौं मन, वचन, काय करि भावपूर्वक मेरा नमस्कार है। दंडौत है।

ऊँखलमै छेक वंशनाल लोक त्रसनाली,
ऊंची चौदै चौरी एक राजू त्रस भरी है।

यामें त्रस बाहिर थावर आउ बांधी कहूँ,
मर्नसों अगाऊ गयौ त्रस चाल करी है ॥
बाहिर थावर कोउ त्रस आउ बांधी होउ,
मर्न समै कारमान त्रसरीति धरी है।
केवल समुद्घात त्रस रूप तहां जात,
तीनों भांति उहां त्रस जिनवानी खिरी है।११।

फेरि लौक का वर्णन कीजिए है।

जैसें एक ऊँखल मांहि एक छेद करिकैं तिस छेद विषैं बांस की नल कहिए पोरी दीजे तैसे ऊँखल तौ लोक तिस मांहि पोरी त्रसनाडी है।

भावार्थ—लोक कै बीचि त्रसनाडी है। कैसी है त्रस नाडी—चौदह राजू की ऊंची समानपनैं और विशेषपनैं किंचित् ऊन तेरा राजू की ऊंची है।

भावार्थ—जिस मांहि त्रस जीव पाईए सो त्रसनाडी कहिए। तातैं निगोद मांहि त्रस नांही और सर्वार्थसिद्धि तें ऊपरि इकईस जोजन मांहि त्रस जोव नांहि। तातै किंचित् ऊन तेरा राजू ऊंची त्रस नाडो है सोही त्रिलोक प्रज्ञप्ति विषैं कही है।

लोय वहुमज्झदेसे चउरस्सा एक्क जोयण सेव।
तेरस रज्जूस्सेही किंचूण होदि त्रसणाली ॥

बहुरि कैसी है त्रसनाली, चौडी एकराजू की है।

भावार्थ—आदितैं लेइ अन्त ताईं एक राजू की सम चौकोर चौरस चली गई है। बहुरि कैसी है त्रसनाली–त्रसजीव जे बेइन्द्रियादिक संज्ञी पंचेंद्री तक, अरु सूक्ष्म वादर स्थावर इन करि भरी है। इस त्रस नाडी विषैं त्रस जीव है सो इहां त्रस जीवनि करि भरी सो त्रसनाली ऐसा बचन नियमवाची नांही, उपलक्षणवाची है। तातैं त्रसनाडी विषैं तौ त्रस थावर सब ही जीव हैं। केवल त्रस ही हैं अरु स्थावर नाहीं ऐसा नाहीं है। त्रसनि की प्रधानता तैं त्रसनाली है। अरु त्रस नाडी कै बाहिर एकेन्द्री स्थावर है। त्रिभाग करिकै आउ बांधी सो किन बांधी–काहू कहिए किसी त्रस जीव नैं आयु बाधी।

भावार्थ–भुज्यमान आयु के दोय भाग वितीत भएं परभव की आयु बन्ध की योग्यता हो है। सो आठ अपकर्षणनि विषैं जोग्यता हो है। आगैं जोग्यता नाहीं। अर भुज्यमान आयु विषैं अन्तमुहूर्त बाकी रहे तब पर-भव की आयु अवश्य बांधे ही। सो त्रस जीव आयु कब बांधी मरनतैं अगाऊ त्रस पर्याय विषैं थावर सम्बन्धी आयु बांधी सो त्रस जीव मारणान्तिक समुद्घात करिकैं आत्मप्रदेशनि का फैलाव किया, सो त्रस जीव आयु पूरि करि गयो। तिन त्रस जीव नैं मरनसमुद्घघात कहिए

प्रदेसौं का बाहरि थावर सेती तांतू पूरया तातैं इसन्याय त्रस नाडी तैं अथवा त्रस नाडी तैं बाहरि एकेंद्री थावर जीव है तिन किसी थावर जीवनैं त्रिभंगी करिकैं त्रस जीव की जिस जीवका जितनां आयुष होय तिस आयु के तीन भाग करैं। जब दोय भाग संपूर्ण वितीतैं तब तीसरे भाग के अर अन्त मुहूर्त मांहि आयु बांधै इसका नाम त्रिभंगी जानना। मरन समय—अन्त समय तिस जीव का कार्माण त्रस रूप निकालै सो थावर जीव अपने प्रदेसां करिकैं त्रस सेती तातू पूरै इस न्याय तैं त्रस नाडी तैं बाहरि त्रस जीव पाइए। और कारणतैं त्रस जीव नांही पाईए। अथवा केवली केवलसमुद्घात करैं तब तिसके प्रदेश सर्वलोक मांहि दंड कपाट प्रतर तीन भए पीछैं लोक पूरविषैं सर्वलोक विषैं आत्माका प्रदेश विस्तरै। त्रस नाडी तैं बाहरि त्रस जीव पाईए। एक त्रस जीव के प्रदेश त्रस नाडी तैं बाहिर गए। इस जुगति सौं—इस न्याय सौं इन तीनों भांति उहां त्रस नाडी तैं बाहरि भी त्रस जीव पाईए। सो कौन कौन ? एक तो त्रस जीव बाहरिके जीव सेती तांतू पूरै, दूसरा बाहरि के जीवनै त्रससेती तांतू पूरा, तीसरा केवल समुद्घात करिकै परमौदारिक आत्मा का प्रदेश सर्वत्र फैले। जिनेश्वर की वाणी विषै इस तरह तीन भांति त्रस जीव त्रस नाडी तैं बाहरि पाईए और भांति नाहीं

पाईए । यह जिनवाणी विषैं सत्यार्थ व्याख्यान हुवा है सो श्रद्धान करना ।

अथ समुच्चय तीनसै तेतालीस राजू घनाकार की फलावटी का कथन कीजिए है ।

॥ तीनों लोकों का घनफल ॥

॥ छप्पय ॥

पूरव पच्छिम तलैं सात, मधि एक बखानी ।
पञ्च स्वर्गमें पांच, अन्तमें एक प्रवांनी ॥
चहुँ मिलाय चहुं अंस, तीनि साढे परमानौं ।
दच्छिन उत्तर सात, साढ चौवीस बखानौं ॥
ऊंचा चौदे राजू गुणौ, अधिक तितालिस तीनसै ।
यह घनाकार तिहुँलोककौ, केवलज्ञानविषैलसै ।१२

अर्थ---अब सर्व तीन लोक का समुच्चय तीन सै तेतालीस राजू के घनाकार की फलावेटी का कथन कीजिए है । तहां सर्वलोक विषै चौदह राजू ऊंचा एक राजू चौकोर पूर्व पश्चिम समान है । यामें तो हानि नाहीं अर दक्षिण उत्तर सात राजू सर्वत्र मोटा है ही, अवशेष अधोलोक विषम चतुरस्र तीन राजू चौडा, सात राजू लम्बा, सात राजू मोटा, अर उर्द्ध्वलोक विषम चतुरस्र दोय दोय

राजू चौडा, सात राजू लम्बा, सात राजू ऊंचा इस विषैं अधोलोक मिलाइए अरु चौदह राजू का मध्यतै तिरछा दोय खंड करि एक खंड तौ उदुर्ध्वलोक समस्त मिलाइए। अरु एक खंडकूं ऊपरितैं नीचैं तक छेदे आधा आधा सर्वत्र मिलाइए। ऐसे साढा तीन राजू चौडा, चौदह राजू ऊंचा, सात राजू मोटा भया। लोक कै तलैं निगोदमांहि पूर्व पश्चिम चौड़ा लोक राजू सात है। और मध्यलोक विषैं क्रमहानि के सद्भावतैं पूर्व पश्चिम चौडा राजू एक का है। सो सात राजू लम्बी जगत श्रेणी है। ताका सातवां भाग प्रमाण क्षेत्र के प्रदेशनी राजू ऐसी संज्ञा है। बहुरि क्रमवृद्धि के सद्भावतैं पांचमा ब्रह्मस्वर्ग विषै चौडा राजू पांच है। सो जगत श्रेणी का सात भाग मैं पाँच भाग प्रमाण है। लोक के अग्रभाग विषैं अनुक्रमतैं हानि का सद्भावतैं पूर्व पश्चिम चौड़ा राजू एक है। च्यारूं ठौर के मिलाइए तब ७+१+५+१ चौदह भए, तिन चौदह के च्यारि अंश किएं, तिन विषैं चौथा अंश कीजिए तब चौदह की चौथाई करि लीजिए तब साढे तीन रहे। सात का आधा कौं साढा तीन कहिए। इन साढा तीन प्रमान कूं वक्ष्यमाण गुणाकार करि गुणिए तब सर्व लोक आदितैं लेकरि अन्त पर्यन्त ताईं दक्षिण उत्तर चौडा राजू सात का है तब, साढे तीन सात सेती गुणिये तब किनने भए। तब साढे चौबीस

राजू कहिए गुणचास का आधा साढा चौबीस राजू प्रतर भया। सर्व लोक आदितें लेइ अन्त ताईं ऊंचा राजू चौदह का है। १४ वे साढे चौबीस राजूकूं गुणिए तब कितने भए। सो कहै हैं–तीनसै तेतालीस भए। सर्व लोक का समुच्चयरूप घनाकार तीन सै तेतालीस राजू घनाकार इस भांति कहा है। एक राजू लम्बे, एक राजू चौड़े, एक राजू मोटे खंड करिए वा कल्पिए तब तीन सै तेतालीस खण्ड हो है। या भांति तीन लोक का घनाकार केवल ज्ञान विषैं लसै है, झलकै है। केवल ज्ञान विषैं हस्त की रेखा कै समान प्रत्यक्ष भासै है।

॥ अधोलोक का १९६ राजू का घनफल ॥

पूरब पच्छिम तलैं सात, मधि एकैं गाई।
उभय मिलेसैं आठ, अर्धकार चारि बताई॥
दच्छिन उत्तर सात, गुणो अट्ठाइस राजू।
ऊंचा राजू सात, सतक छयानवै भया जू।
यह अधोलोकका सब कहा, घनाकार जिन धरममैं।
मति परो नरक मैं पाप करि, रहो सुमारग परममैं १३

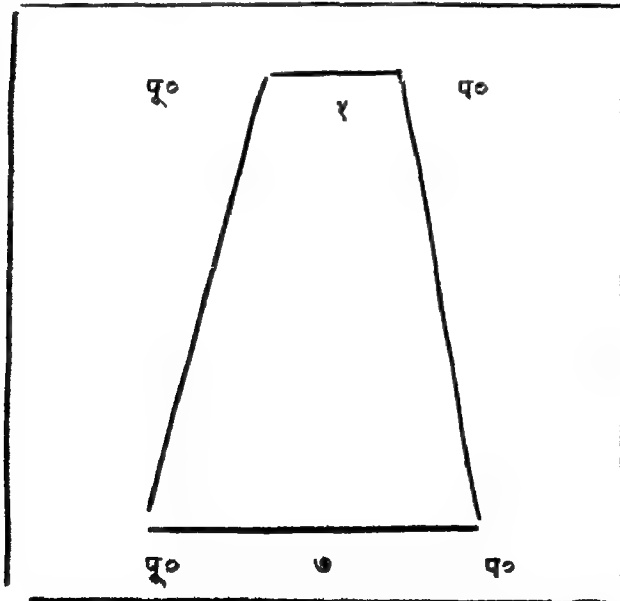
अब तीनसै तेतालीस राजू मांहि अलोलोक का एक सौ छिनवैं राजू का घनफल है। तिसकी गिनती पाषाण

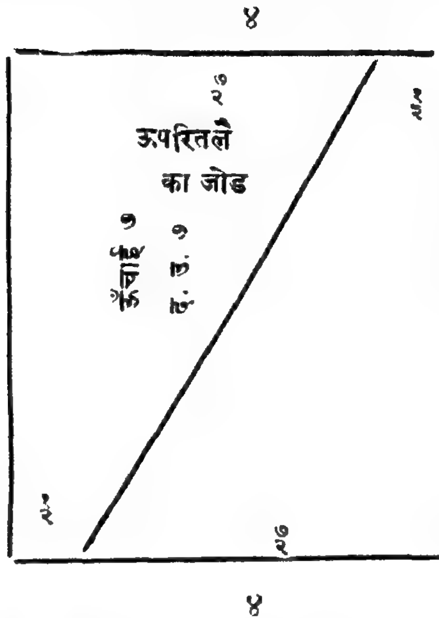
की गिणती की नाईं है सो उक्तं च सूत्र करि ल्याईए।

मुह भूमीणविसेसे उदयहिदे भूमुहम्मि हाणि च ।
यं जोगदले पदगुणिदे फलं घणं वेध गुणिदफलं ।।

अर्थ—मुख अरु भूमिकूं जोडि आधा करनो अर पद जोग छ ताकरि गुणना सो प्रतर फल है। ताकूं वेध जो मोटाई ताकरि गुणें घनफल होहै। लोक कै तलैरौं जड मांहि पूर्व पश्चिम चौडा राजू सात का है, अधिक नाहीं। और मध्यलोक विषैं पूर्व पश्चिम चौडा राजू एक का है। उभय कहिए दोऊ सात और एक ए दोन्यौं इन दौन्यों को मिलायें आठ भए। इन आठ कूं आधे च्यारि करिए। और लोक दक्षिण उत्तर चौडा सात राजू है तिन च्यारौं कौं इन सात सैं गुणै अठाईस राजू भए। सो अठाईस राजू का प्रतर क्षेत्र भया। ता प्रतरक्षेत्रकूं अधोलोक निगोद तैं लेकरि मेरू की जडताईं ऊंचा राज सातका है तिन अठाईस राजूनि कौं सात करि गुणे कितने भए। सोकहै हैं—एक सौ छिनवै भए अठाईस साता छिनवैंसौ, ऐसे गणित पाटी विषै कह्या है। या भांति अधोलोक का घनफल एक सौ छिनवैं राजू भया है। यह कहिए इस भांति इस प्रकार अधोलोक का सब घनाकार एक सौ छिनवैं राजू का कह्या। जिनेश्वर देवकी वानी विषैं सो अधोलोक मांहि चित्राभूमि

तैं जलबहल, थलबहल, पंकबहल सातौ निगोद नरक ताईं अधोलोक कहिए। अधो नाम तलै का है। सो अधो लोक तक गति पाप के उदय करि पाइए है। सो भव्य जीव ऐसी जानिकै पाप करिकैं नरक विषैं मतिनैं परौ, परिणामनि की उज्ज्वलता करिकैं सुमार्ग कहिए भला मार्ग वीतराग देवका तिस मार्ग विषै रहौ, प्रवर्तो। भो भव्य जीव हो! सो कैसा है मार्ग—परम कहिए सब तैं उत्कृष्ट है, तिनकूं अंगीकार करौ। ताके अंगीकार करिबे तैं परम सुख पाऔ। [१९६ राजू घनाकार सूचक यंत्र]





या भांति अधोलोक एकसौ छिनवैं राजू कौ, तांहि कहि अब ऊद्र्ध्वलोक का एकसौ सैंतालीस राजू का घनाकार है, मेरु की जड तै लेइ सिद्धालय ताईं, तिनकी फलावटिका वर्णन करिए है।

॥ उर्द्ध्वलोक का घनफल ॥

मध्यलोक इक ब्रह्म, पांच दुहुं मिले भए षट्।
पूरब पच्छिम दिसा, अर्द्धकरि तीन राजु रट॥

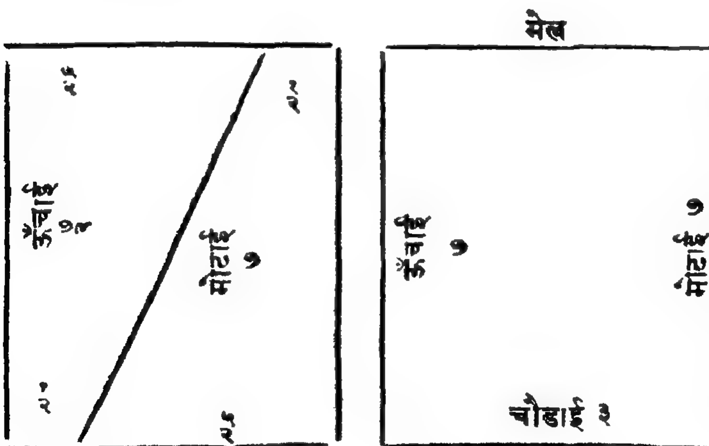
दच्छिन उत्तर सात, गुणी इकईस बखानी ।
ऊँचे साढे तीन, साड तेहत्तरि जानी ॥
साढ तिहत्तरि विधि यही, लोक अंतसौं ब्रह्मलग।
राजू इकसौ सैंताल सब, धरम करैं पावैं सुमग। १४

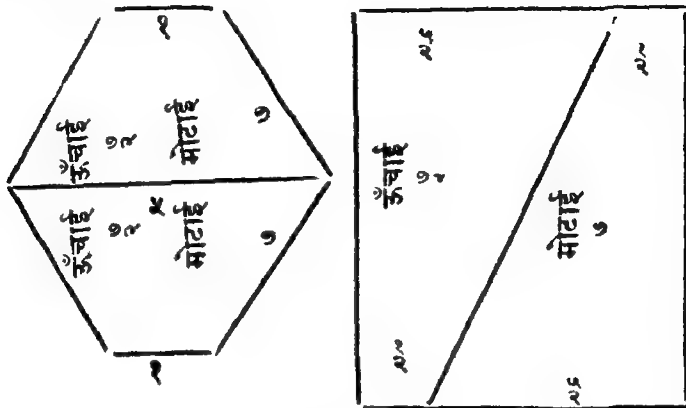
मध्यलोक विषें पूर्व पश्चिम चौडा राजू एक का है। पांचमां ब्रह्मस्वर्ग विषें चौडा राजू पांच का है । दौन्यौं मिलायें चौडा पांच में स्वर्ग तक छह होहैं–छह राजू होय। सो यह चौडाई पूर्व पश्चिम दिशा सम्बन्धी है। इन छहौं कूं आधे कीजे तब तीन राजू रहै। तिन तीन राजूनि कों उस मेरू की जडतैं लेइ पंचम स्वर्ग ताईं दक्षिन उत्तर चौडा राजू सात का है। वै तीन राजू सात राजू सूं गुणिए तब इक्कीस राजू भया। इस भांति तिन इक्कीस राजूनि कौं, मेरू की चूलिका तैं ले करि पंचम स्वर्ग ताईं ऊंचा राजू साढा तीन का है। वे इक्कीस राजू इन साढे तीन राजूनि करि गुणिये। तब साढे तिहत्तरि भये । पञ्चम स्वर्ग ताईं घनाकार साढे तिहत्तरि राजू का है। यह जानि श्रद्धान करिए। साढे तिहत्तरि एक सौ सैंतालीस के आधे हैं। इस विधि साढा तिहत्तरि घनाकार ऊपरि ब्रह्म स्वर्ग तै लेइ सिद्धालय तक है। सो किस विधि है :—लोक कहिए उदूर्ध्वलोक, कहां ताईं–पंचम स्वर्ग तैं लेइ सिद्धा-

लय ताईं, घनाकार राजू साढे तिहत्तरि का है सो दौन्यौं मिलें एक सौ सैंतालीस राजू भए।

भावार्थ :—मेरू तैं लेइ सिद्धालय ताईं सर्व उद्र्ध्व-लोक का घनाकार राजू एक सौ सैंतालीस का है। जे जीव धर्म करैं पूजा करैं दान देवैं जिनवांनी सुनें ते जीव भला मारग पावैं। ते जीव शुभोपयोग तैं स्वर्ग जाय, शुद्धोपयोग तैं निर्वाण जाय।

इनके यंत्र इस प्रकार हैं:—





अथ कहिए अब सर्वलोक घनाकार तीनसै तेतालीस राजू का है ताका जुदा जुदा ब्यौरा कहिए हैं—सो किस भांति है :—

॥ तीनसौ तैतालीस राजू का जुदा जुदा ब्यौरा ॥

छियालीस चालीस, और चौतीस अठाई ।
बाइस सोलै दस, उनीस साढे बतलाई ॥
साढे सैंतिस साढ, सोल साढे सोला भनि ।
आगैं दो दो हीन, अंत ग्यारा राजू गनि ॥
इम सात नरक आठों जुगल, ऊपर सोला थानमें ।
राजू तेतालिस तीनसै, घनाकार कहि ग्यानमें।१५

निगोद मांहि पूर्व पश्चिम चौडा राजू सात है और तिसतैं ऊपरि सातवां नरक तक पूरब पश्चिम चोडा राजू छह का है। दोन्यौं मिलाए तेरा भए, तिनके आधे साढे छह राजू भए, तिन साढे छह तैं दक्षिण उत्तर सात राजू से गुणिये। तब साढे पैंतालीस होय, अर आधा राजू दोनौं का बधाया तब छीयालीस भए। इस भांति सब का जुदा जुदा लेखा फलाइ लेनां, जैसा पहला छीयालीस सोलवें स्वर्ग तैं लेइ सिद्धालय ताईं पटल ग्यारा, तिनकौं घनफल ग्यारा राजू है। या भांति सातौं नरकनि विषैं और आठौं जुगलनि कै विषैं और ऊपरि सिद्धालय ताईं सोलह ठिकाने भए। आगैं अच्युत स्वर्ग ताईं दोय दोय घटे तिनके सब इन सोलह स्थानक के मिलायकै, घनाकार तीनसै तेतालीस राजू का सर्व लोक भया। ऐसा केवल ज्ञान विषैं कह्या है।

अब तीन लोक कौं जैसे गींदडी परि जाल तैसे तीन वातवलय सर्वाङ्ग लिपटि रहे है तिनका जुदा जुदा ब्यौरा।

॥ तीनों वातवलयों का जुदा जुदा परिमाण ॥

सवैया इकतीसा (मनहर)

तलैं बातबलै मोटे जोजन सहस साठ,
ऊँचे एक राजूलौं साठ सहस धारने।

आगैं सात पांच चारि तीनौं सोलै जोजन के,
मध्य पांच चारि तीन बाराकै चितारने ॥
ब्रह्मलोक तीनौ सोलैं अंतमांहि तीनौ बारैं,
सीस दोय कोस एक कोस के बिचारने ।
तनुवात धनुष पौने सोलैसै ताके भाग,
पंद्रहसै सिद्ध एक भागमैं निहारने ॥ १६ ॥

तलैं जडमांहि तीनौं वातवलौंकी मौटाई बीस हजार योजन की है । तहां योजनौं करि तीनौं के साठि हजार जोजन भए । पहला घनोदधि वातवला जल और पौन का है । दूसरा घनवातवला बहुत पौन का है । तीसरा तनवातवला थोरा पवन का है । इसि भांति अनादि तै पडे हैं । सास्वते हैं । जड तैं ऊँचे ऊपरतैं एक राजू तांई तीनौं वातवलौं की मोटाई बीस २ हजार योजन की रही । सो मध्यमांहि ऐसी मोटाई और पसवाडौं बगलौं कमि है । सो आगैं कहिए हैं । आगै बगलौं की इस भांति मोटाईः—पहला घनोदधि वातवलय सात योजन का है । दूजा घनवात पांच योजन का है । तीजा तनुवात च्यारि योजन का है । ए तीनौं बातवले तलैं तैं बगल औनैं पौनैं सोला योजन के मोटे चले आए । एक सात का, एक पांच का,

एक चारि का। ए सब तीनौं मिले सोला योजनके भए। और मध्यलोक कै मांहि बगलौं पहला वातवला मोटा योजन पांच का है। दूसरा वातवला च्यार योजन का मोटा है। तीसरा वातवला मोटा योजन तीनका है। तीनौं मिले बारा भए। एक पांच, एक च्यारि, एक तीन का तीनौं मिलि बारा भए और मध्य लोकतैं ऊपरिनैं पंचम स्वर्ग मांहि पहला सातका, दूजा पांच का, तीजा च्यारि का इस भांति तीनौं की मोटाई ब्रह्मलोक मांहि रही। तीनौं मिलि सोला योजन के मोटे भए। और अन्तमांहि सिद्धालय कै पसवाडै तीनौं वातवलै की मोटाई योजन बारै की रही—पहला पांच का, दूसरा च्यारि का, तीसरा तीन का, सब मिलि बारह भए। अर सीस कहिये सिद्धालय कै अन्त घनोदधि वातवला मोटा चाक कै आकार दोयकोश का है। कोश बडे प्रमाण कोश जानने और दूसरा घनवातवला मोटा वात कै आकार कोश एक का है। तीसरा तनुवातवला वात कै आकार धनुष पौने सौलहसै का है, सो धनुष प्रमाण धनुष बडे है। तिस पौणां सोलासै धनुष के पंद्रहसै भाग करिए। साठे कै आकार ऊपरि ऊपरिनैं करिए, तिस पन्द्रहसै भाग मांहि अन्त का जु भाग है तिस भाग मांहि अनन्ते सिद्ध उत्कृष्ट अवगाहना तैं विराजै हैं और तिसके नवलाख भाग करिए तिस अन्त के एक भाग विषैं जघन्य

अवगाहनां तैं अनन्ते सिद्ध विराजै हैं। मध्य अवगाहनां के नाना भेद हैं। और एक सिद्ध की अवगाहनां विषैं अनन्ते सिद्ध पाईए है। इस भांति जानने।

अब तीन लोक विषैं एक सौ बारा पटल हैं। पटल नाम छातिका है। जैसें ऊपरि ऊपरि छाती होय तैसे ऊपरि ऊपरि पटल परै हैं। अनादिकाल के सब एकसौ बारह हैं। तिनका जुदा-जुदा ब्यौरा कहै है।

॥ तीन लोक के ११२ पटलों का वर्णन ॥

॥ छप्पय ॥

एक तीन पन सात, और नव ग्यार तेर जिय।
इकतिस सात सुचारि, दोय इक एक तीनि तिय॥
तीनि तीनि अरु तीनि एक, इक पटल बताए।
एकसौ बारै सरब, बीस थानक के गाए॥
सब सात नरक आठोंजुगल, त्रय ग्रीवकद्वय उत्तरैं।
उनचासनरक त्रेसठसुरग, धन दोनों समाकितभरैं॥

सातमैं नरक में एक छाती है एक पटल है। छठै नरक विषैं तीन पटल हैं। पांचमैं नरक में पांच पटल हैं। चौथे में सात पटल हैं। अर तीसरै में नव पटल हैं। चौथेमें ग्यारा हैं। पहलै नरकमैं तेरा पटल हैं। सब मिलि गुणचास पटल भए। मेरू की चूलिका तैं लेइ दोय

स्वर्ग मांहि इकतीस पटल हैं। सनत्कुमार माहेन्द्र विषैं सात पटल हैं। ब्रह्मब्रह्मोत्तर विषैं च्यारि पटल हैं। लांतव-कापिष्ट विषैं दोय पटल हैं। शुक्र महाशुक्र विषैं एक पटल है। सतार सहस्रार विषैं एक पटल है। आनत प्राणत विषैं तीन पटल हैं। आरण अच्युत स्वर्ग विषैं तीन पटल हैं। अधो ग्रैवेयक विषैं तीन पटल हैं। मध्यमग्रैवेयक विषैं तीन पटल हैं। ऊपरि ग्रैवेयकविषैं तीन पटल हैं। नव अनुदिश विषैं एक पटल है। पंचानुत्तर–पंच विमान विषैं एक पटल है। ए सोलह स्वर्ग के आठ युगल, नव ग्रैवैयक, नव अनुदिश, पंचानुत्तर के त्रेसठि भए। सारे पटल मिलिके एक सौ बारह भए। तीन लोक के सब पटल–सारे पटल कितने स्थानक के भए? बीस ठिकाने के भए। जिन बीस ठिकानों के भए ते बीस ठिकाने कौन कौन से हैं? सब सारे सातौं नरक के स्थान सात पटल ४६। आठौं जुगल के स्थान ८ पटल ५२। तीन ग्रैवेयक के स्थान ३ पटल ६। दोन्यों उत्तर के स्थान २ पटल २। सातौं नरक के पटल उनचास, सात नरक की छाती उनचास है। सोला सुरग, नव ग्रैवैयक, नव अनुदिश पंचानुत्तर इन विषैं त्रेसठि पटल हैं। इन दोन्यौं ठिकानौं के एक सौ बारह पटलादिविषै जे जीव सम्यक्ती होय हैं ते धन्य हैं तेइ उत्तम है। सम्यक्त सहित ते जीव धन्य हैं।

समस्त पटल संख्या यंत्र

नाम स्थान	पटल संख्या	स्थान	संख्या
प्रथम नरक रत्न प्रभा	१३	द्वितीय नरक शर्करा	११
तृतीय नरक वालुका	९	चतुर्थ पंक प्रभा	७
पंचम धूम प्रभा	५	षष्ठम तम प्रभा	३
सप्तम महातम प्रभा	१		

सातों नरकों का जोड ४९

सौधर्म ईशान प्रथमयुगल	३१	सनत्कुमार माहेन्द्र	७
ब्रह्म ब्रह्मोत्तर	४	लांतव कापिष्ट	२
शुक्र महा शुक्र	१	सतार सहस्रार	१
आनत प्राणत	३	आरण अच्युत	३

आठों युगलों का जोड ५२

अधो ग्रैवेयक त्रिक	३	मध्य ग्रैवेयक त्रिक	३
उपरि ग्रैवेयक त्रिक	३	नव अनुदिश	१
पंचानुत्तर	१		

स्वर्गों का जोड ६३

समस्त पटल संख्या ११२

॥ छहों संहनन वाले जीव मरकर कहां २ उत्पन्न होते हैं ॥

छहों तीसरे जाहिं, पांच चौथे पचम लग ।
चार संहनन छठै, एक सातवां नरक मग ॥
छहों आठमें सुरग, पांच बारम सुर जावैं ।
चार सोलमें लोक तीन नौ ग्रीवक पावैं ॥
दोनों संहनन न उत्तरै एक पंच पंचोत्तरे ।
इक चरमशरीरी शिव लहै वंदों जैनवचन खरै॥१८

वज्र नाम हाड का है, वृषभ नाम ऊपरि के वेढने का है और नाराच नाम कीली का है। ऐसे जिस जीव के वज्र के हाड होइ और तिन विषैं वज्र की कीला लगी होय और जिस ऊपरि वज्र का वेढना होइ सो वज्र वृषभ नाराच संहनन कहिए। और जिस जीव कै ऊपरि का वेढना समान होय सो दूसरा वज्र नाराच है। और जिसकै हाड भी समान होइ सो तीसरा नाराच कहिए। और जिसके हाड़ों विषैं कीली पार न होइ गई आधी पैठी सो चौथा अर्ध नाराच कहिए। और जिसकै हाडौं विषैं जकरबन्द तौ है और कीली है नांही, परन्तु कीली सा जकड बन्ध लगा है, तातैं सो पांचमा कीलक संहनन कहिए। और जिसके हाड जुदा जुदा हैं परन्तु नस और

चाम करि जकड करि राखे हैं सो तातैं छटा स्फाटिक कहिए। इनका अर्थ इस भांति जानना और अब इन संहननौं करि नरक स्वर्गनि विषै उत्पत्ति का कथन आगम में जे जिनेन्द्रदेवनै भाषै सिद्धान्त तिनतें अविरुद्धपनेथकी यथा संभव कहै है।

च्यारि संहनन वाले जीव छठे नरक ताईं जाइ और कीलक संहनन वाला जीव छठै नरक जाइ नांही, तातैं आदि के च्यारौं छठे तांई कहे। कीलक अर स्फाटिक दोऊ संहनन की छठा में गति नांही। एक पहला वज्रवृषभ नाराच संहनन वाला जीव सातवैं नरक जाइ यह नियम है। और पांचौं संहनन वाले जीव कोई जाय नांहीं। या भांति कहा है। पहला संहनन ही जाइ। छहो संहनन वाले जीव तीसरे नरक तांई जाइ—पहला तैं लेकैं घम्मा वंसा मेघा तांई जाइ। पांच संहनन वाले जीव पहले तैं लेकै चौथे पांचवें नरक तक जाइ और स्फाटिक संहनन वाला जीव तीसरे तैं आगै जाइ नांही, यह नियम है। स्फाटिक संहनन वाला जीव तीसरे तक ही जाय है, तातें चौथे पांचवें में पांच संहनन सहित जीवनि की गति कही।

छहौं संहनन वाले जीव पहले स्वर्ग तैं लेइ आठमैं स्वर्गताईं जाइ। पांच संहनन वाले जीव पहले तैं लेकै बारमे

तक जाय और स्फाटिक संहनन आठमें तैं ऊपरि न जाइ यह नियम है। तातैं आदि के पांच वारमें तांई जाय। च्यारि संहनन वाले जीव पहले तैं लेइ सोलमैं स्वर्ग ताईं जाइ। कीलक वारमें तैं ऊपरि जाय नांही, तातैं आदि के च्यारि कहे कीलक स्फाटिक बिना। वज्र वृषभनाराच, वज्रनाराच, तीसरा नाराच ए आदि के तीन संहनन वाले जीव नौ ग्रैवेयक ताईं जाय। ए कहे आदि के तीन संहनन ते नव ग्रैवैयक ताईं जाय। अन्त के तीनौं अर्द्ध नाराच कीलक, स्फाटिक न जाय—यह नियम है। वज्रवृषभ नाराच और वज्र नाराच, ए आदि के दोय संहनन वाले जीव नव अनुदिश विमान ताईं जाय। और अन्त के नाराच, अर्द्ध नाराच, कीलिक, स्फाटिक, च्यारौं नाहीं जाय यह नियम है। एक आदिका वज्रवृषभ नाराच संहनन वाला जीव पांच अनुत्तर विमाननि विषैं जाइ और पांचों संहनन नाहीं जाय यह नियम है। एक आदि का बिना और संहनन वाले नाहीं जाय। जो जीव चरमशरीरी होइ तिसकैं एक पहला वज्रवृषभ नाराच होइ, और संहनन होय नाहीं यह नियम है। और चरम शरीरी कहिए संसार के अन्त का शरीर है, फेरि संसार विषैं शरीर धारैगा नांही, मोक्ष ही जायगा, यह नियम है। सो चरम शरीरी ही जीव अष्टकर्मनि का नाश करि मोक्ष पावै है। भाव सहित

छहों संहनन सहित जिन स्थाननि में जाय ताका अंत्र ।

नरक				स्वर्ग			नौग्रै	अनुदिश	पांच अनु	सिद्ध	
३	४ ५	६	७	८	१२	१६	९	९	५	१	स्थान
६	५	४	१	६	५	४	३	२	१	१	संहनन
वज्रवृष भादि सर्व	स्फाटिक बिना	स्फाटिक कीलक बिना	वज्र वृषभ नाराच	सर्व	स्फाटिक बिना	स्फाटिक कीलक बिना	आदि का	आदि का	वज्र वृषभ नाराच	आदि को	संहनन

वंदौ हौं नमस्कार करौंहौं, वीतराग देवकौं, वानी कौं दिव्यध्वनिकूं। बहुरि कैसी है वानी—खरी है। निर्मल है, प्रमाण है जा विषैं, यह कथन किया है तिस कौ बारम्बार बन्दौहौं। जैन बैन बिनां ऐसा मारग कौन दिखावै तीन लोक विषैं सूर्यवत् है।

छह कालों और चौदह गुणस्थानों में कौन २ संहनन होतेहैं?

प्रथम दुतिय अरु तृतिय कालमैं पहिला जानौ।
चौथे षट्संहनन, पंचमें तीन बखानौ॥
कर्मभूमि तिय तीन, एक छट्टे के मांहीं।
त्रिकल चतुष्कै एक, एक इन्द्री कै नांहीं॥
षट् कहे सात गुणथानलग, तीन इग्यारे लौं लहे
इक खिपक श्रेणिगुण तेरहैं, धन जिनवाणीमेंकहे।

पहला काल च्यारि कोडा कोडी सागर का, अर दूसरा काल तीन कोडा कोडी सागर का, तीसरा काल दोय कोडा कोडी सागर का, चौथा काल एक कोडा कोड़ी सागर का—बीयालीस हजार बरस घाटि, पांचमां काल इकईस हजार बरस का, छठा काल इकईस हजार बरसका। ६ काल और चौदह गुणस्थान, में छहौं संहनन कहां कहां पाईए। तिनका ब्यौरा कथन लिखिए है।

पहला काल सुखमा सुखमा निरंतर सुख ही है, कल्पवृक्ष के भोग करि। दूजा का नाम सुखमा है तामें सुख ही है। और तीसरा काल का नाम सुखमा दुखमा है—आदि में सुख अन्त विषैं दुख हैं। इन तीनौं कालनि विषैं वज्रवृषभ नाराच संहनन है। इन तीनौं काल विषैं भोग भूमि है। इन तीनौं काल के जीवौं कै एक उदै मरन है। सो मरि कैं देवगति जाइ, और गति न जाय, यह नियम है। जे सम्यग्दृष्टि हैं ते सौधर्म और ईशान स्वर्गविषैं जाइ, बाकी भवनत्रिक में जाइ। और चौथा काल का नाम दुखमा सुखमा है। जैसे किसान पहलैं खेती करैं तब पीछे खाइ तैसे पहलै दुखकरि उपारजै तब पीछैं सुख करि भोगवै, तातैं दुखमा सुखमा कहिए और तिस चौथे काल विषैं शलाका पुरुष उपजै हैं। या विषैं संहनन छहों ही हैं। पाँचवां काल का नाम दुखमा है। तिसके आदि तैं ले अन्त ताईं दुख ही है। तिस पंचम काल विषैं अर्द्ध नाराच कीलक, और स्फाटिक, ए अन्त के तीन संहनन पाईए और आदि के तीन संहनन पाईए नाहीं। और कर्मभूमि की स्त्रीनिकैं तीन संहनन हैं—अर्द्ध नाराच, कीलक, स्फाटिक, ए तीन संहनन अन्त के सदा काल पाईए और आदि के तीनौं पाइए नाहीं, यह नियम है।

छठा काल का नाम दुखमा दुखमा है। तिसके

आदि तैं लेकै अन्त ताईं अत्यन्त दुःख ही है तिस छठे काल विषैं एक अन्त का स्फाटिक संहनन है और कोऊ नाहीं, यह नियम है। बेइन्द्री, तेइन्द्री, चौइन्द्री, असंज्ञी पंचेन्द्री इन विकल चतुष्कविषैं एक अन्त का स्फाटिक संहनन है और कोऊ संहनन नाहीं, यह नियम है। एकेन्द्री कहिए पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति, ए पंच थावर एकेन्द्री हैं। इनकै कोई भी संहनन नांही। संहनन नाम हाड का है इनकै हाड है नाहीं। तातैं इनकै संहनन नाहीं। छहौं संहनन वाले जीव मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, असंजम, देश संयम प्रमत्त, अप्रमत्त तक सप्त गुणस्थान ताईं पाईए। गुणस्थान नाम परिणामनि की परिणति का है।

वज्रवृषभनाराच, वज्रनाराच, नाराच, ए तीन आदि के संहनन वाले जीव ग्यारमे गुणस्थान ताँई पाईए अरु अन्त कै तीनों सैं श्रेणी मांडै नाहीं तातैं सातमें ही रहै। और जो जीव चपक श्रेणी मांडै तो एक पहला वज्रवृषभ नाराच संहनन होइ तो मांडै, सो संहनन तेरमैं गुणस्थान ताईं कहिए, ऊपरि अजोग गुणस्थान है ता विषैं संहनन नाहीं, ऐसा जिनवाणी विषैं कह्या है, सो ही श्रद्धान करना। धन्य पुरुष जे कृतार्थ पुरुष वृषभादि चौबीस तीर्थङ्कर, वृषभसेनादि गणधरदेव वा सामान्य केवली भगवान तिननैं जिनवाणी द्वादशांग श्रुतविषैं यह सत्यार्थ उपदेश किया है सो आगम कै अनुकूल व्याख्यान किया है।

॥ चौबीसों तीर्थङ्करों के अन्तराल ॥

॥ सवैया इकतीसा ॥

पचास तीस दस नौ किरोर लाख नव्वै नौ,
सहसकोर नौसै कोर नव्वै नौकोर है।
सौ सागर वर्ष लाख छ्यासठ सहस छब्बीस,
घाट कोर सागर चौवन तीस और है ॥
नव चारि तीनि घाट पौन पल्य अर्ध पाव,
घाट लाखौं लाख वर्ष लाखौं लाख जोर है।
चौवन छः पांच लाख सहस पौने चौरासी,
पाव, अन्तरा जिनेस गावै निसि भोर है ॥२०॥

जब तीर्थङ्कर निर्वाण जाय जिसतैं जितने काल पीछै और तीर्थङ्कर उपजैं तिसका नाम अन्तर है। जैसे तीसरे काल के तीन वर्ष साढे आठ महीने बाकी रहे तब आदि जिन निर्वाण गये। उनका बारा पचास लाख कोटि सागर तांई वरत्या, तब अजितनाथजी उपजे, यह अन्तर है। तीस लाख कोडिसागर पीछे संभवनाथ जी उपजै। दस लाख कोडि सागर पीछे अभिनन्दनजी उपजे।

तिसतैं नवलाख कोडि सागर पीछै सुमतिनाथजी उपजै। तिसतैं निवै हजार कोडिसागर व्यतीत भए पीछें

पद्मप्रभुजी उपजै। तिसतैं नवहजार कोडि सागर व्यतीत भए पीछैं सुपारिसनाथजी उपजै। तिसतैं नवसै कोडि सागर पीछैं चन्द्रप्रभजी उपजे। तिसतैं निव्वै कोडिसागर सीछै पुष्पदंतजी उपजै। तिसतैं नव कोडि सागर पीछै शीतलनाथजी उपजै। तिसतैं पीछै छयाछठ लाख छबीस हजार एक सौ सागर वर्ष घाटि एक करोड सागर वर्ष पीछैं अर्थात् ३३७३६०० सागर पीछै श्रेयांसनाथजीउपजे। तिसतैं चौवन सागर पीछैं वासुपूज्य जी उपजे। तिसतैं तीस सागर पीछै विमलनाथजी उपजै। तिसतैं नव सागर पीछैं अनन्तनाथजी उपजे। तिसतै च्यारि सागर पीछैं धर्मनाथजी उपजै। तिसतैं पौण पल्य घाटि तीन सागर व्यतीत भए पीछं शान्तिनाथजी उपजे। तिसतैं आध पल्य पीछैं कुन्थनाथजी उपजैं। तिसतैं हजार कोडि वरष घाटि पाव पल्य व्यतीत भए पीछैं अरनाथजी उपजै। तिसतैं हजार कोडि बरस (१०००००००००) व्यतीत भए पीछैं उगणीसवाँ मल्लिनाथजी उपजे। तिसतैं चौवन लाख वर्ष पीछैं मुनि सुव्रत जी उपजे। तिसतैं छह लाख बरस पीछैं नमिनाथ जी उपजे। तिसतैं पांच लाख वर्ष व्यतीत भए पीछैं नेमिनाथ जी उपजे। तिसतैं पौणा चौरासी हजार वर्ष व्यतीत भए पीछैं पार्श्वनाथजी उपजे। तिसतैं अढाईसैं वर्ष व्यतीत भए पीछैं वर्द्धमान तीर्थंकर देव उपजे। सो

चौबीस तीर्थंकर अंतराल यंत्र

१. श्री ऋषभनाथजी	५० लाख कोटि सागर	१३. श्री विमलनाथजी	९ सागर
२. श्री अजितनाथजी	३० लाख कोटि सागर	१४. श्री अनन्तनाथजी	४ सागर
३. श्री संभवनाथजी	१० लाख कोटि सागर	१५. श्री धर्मनाथजी	३ पौण पल्य घाटि सागर
४. श्री अभिनन्दननाथजी	९ लाख कोटि सागर	१६. श्री शांतिनाथजी	आध पल्य वर्ष
५. श्री सुमतिनाथजी	९० सहस कोटि सागर	१७. श्री कुंथुनाथजी	हजार कोटि वर्ष घाटि पाव पल्य
६. श्री पद्मप्रभुजी	९ सहस कोटि सागर		
७. श्री सुपार्श्वनाथजी	९०० कोटि सागर	१८ श्री अरनाथजी	वर्ष १००००००००००
८. श्री चन्द्रप्रभुजी	९० कोटि सागर	१९. श्री मल्लिनाथजी	वर्ष ५४०००००
९. श्री पुष्पदन्तजी	९ कोटि सागर	२०. श्री मुनिसुव्रतनाथजी	वर्ष ६०००००
१०. श्री शीतलनाथजी	६६२६००० घाटि ९९९९९०० सागर	२१. श्री नमिनाथजी	वर्ष ५०००००
		२२. श्री नेमिनाथजी	वर्ष ८३७५०
११. श्री श्रेयांसनाथजी	५४ सागर	२३. पार्श्वनाथजी	वर्ष २५०
१२. श्री वासुपूज्यजी	३० सागर	२४. महावीर स्वामीजी	०

वर्द्धमानजी जब चौथे काल के तीन वर्ष साढ़े आठ महीने रहे तब निर्वाण गए। तिनका आरा अब वर्तै है, अर आगैं अंत ताई बर्तेगा। यह ४२००० वर्ष घट्यां कोडा कोडी सागर अंतराल कहा है।

अब एकसौ अडतालीस प्रकृतिसत्तातैं किसे किसे गुणस्थान क्षपिये है ताका व्यौरा कथन।

॥ कर्मों की १४८ प्रकृतियां कौन २ गुणस्थानों में क्षय होती हैं ?

छप्पय

सात प्रकृति को घात, ठीक सातम गुणथानै।
तीनि आठ नहिं होय, नवम छत्तीसों भानै॥
दसमैं लोभ विदार, बारहैं सोल मिटावै।
चौदहमैंके अंत, बहत्तर तेर खिपावै॥
इमि तोर करम अडताल सौ,
मुकतिमांहि सुखकरत हैं।
प्रभु हमहिं बुलावो आप ढिग,
हमइ पाँयनि परत हैं॥ २१॥

अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ और मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्वप्रकृति, इन सात प्रकृतिनि को घात सत्तातैं मोक्षगामी जीव कै ठीक चौथे अव्रतगुणस्थान सूं लेइ

करि सातमें अप्रमत्त गुणस्थान ताई क्षय होय सो अप्रमत्त दोय प्रकार है। एक स्वस्थान अप्रमत्त, एक सातिशय अप्रमत्त। जो श्रेणी के सन्मुख हुवा होय सो सातिशय अप्रमत्ती कहिए, सो तिसका कथन सात प्रकृति सातमैं घटी और मोक्षगामी जीव कै नरक आयु, तिर्यगायु, देवायु इन तीन आयु की सत्ता होय नांही, एक भुज्यमान मनुष्यायु है और नांही। इहाँ आयु तीन घटी। नवम अनिवृत्तिकरण गुणस्थान विषैं छत्तीस प्रकृतिनि का सत्तातैं नाश करै है। ते कौन, नरक तिर्यग्गति, इनकी आनुपूर्वी २, विकलत्रय ३, स्त्यानगृद्धि ३, उद्योत १, आताप १ एकेंद्री साधारण १ सूक्ष्म, थावर १, कषाय ११, हास्यादिक ६ वेद ३ ए छत्तीस नवमें घटी। अर दशमें गुणस्थान विषैं सूक्ष्म लोभ का सत्तातैं नाश किया। बारमैं क्षीणकषाय गुणस्थान विषै निद्रा प्रचला २, ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ४, अंतराय ५, इन सोला प्रकृतिनि का नाश कीया, ए सब मिलि त्रेसठि प्रकृति क्षयी और बाकी रही प्रकृति ८५, ते चौदह में अजोग गुणस्थान के अंतमें दोय समय बाकी रहे तिन दोय समयनि विषैं पहलै समय बहत्तरि प्रकृति खिपावै। दूसरै अंत समय विषैं तेरा प्रकृतिनि का नाश करै। या भांति एक सौ अड़तालीस प्रकृतिनि का सत्तातैं नाश करिकै, मोक्ष विषैं अनंते सिद्ध आतमीक स्वाभाविक स्वाधीन अनंता सुख का

एक सौ अडतालीस प्रकृति क्षपणा यंत्र

गुण स्थान	मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ	सू	उ	क्षी	स	अ
प्र. स.	०	०	०	७	७ वा	७ वा	७/३	०	३६	१	०	१६	०	७२/१३
भेद	०	०	०	अनंतानु बंधी ४ मिथ्यात्व ३	आ० ४ मि० ३	आ० ४ मि ३	आ० ४ मि० ३ भुज्य मान बिना न० १ ति० १ दे० १	०	न २ ति २ ति ३ नि ३ न ६ वे ३ हा ६ का ११	सूक्ष्म लोभ	०	निद्रा २ ज्ञान ५ द० ४ अंतराय ५	०	उपांतस ७२ अंत सम १३

अनुभव करै है। तिनका एक समय का सुखका उपमा लाय तीन लोक विषैं कोऊ भी सुख नांही जाकी उपमां दीजिए। भो सिद्ध परमेष्ठी प्रभु हो ! कृपा करिकैं अनुग्रह करिकैं हमारे ताइं भी अपनै ढिग पास बुलावौ। ऐसी कृपा करौ जो तुम्हारे चरण कमलनिकै निकटि हम सासते हाजर रहैं। चरण कमलनि ही की सेवा करवौ करैं। भो सिद्ध परमेष्ठी हो। हम तुम्हारे ताइं इस वासतैं पूजै हैं, सुमरै हैं, ध्यावै हैं। हम परि कृपा करौ तुम, आप ढिग बुलावौ।

— मानुषोत्तर पर्वत का परिमाण —

(कवित्त ३१ मात्रा)

मानुषोत्तर पर्वत चौराई,
भूपरि एक सहस बाईस।
मध्य सात सौ तेइस जोजन,
ऊपर चार सतक चौईस॥
सतरहसौ इकईस ऊँचाई,
जड़ां चारसौ पाव अरु तीस॥
रिजु विमान किहि भांति मिल्यौ है,
जोजन लाख कह्यो जगदीश॥२२॥

मानुष हैं तिसतैं उत्तर, तातैं मानुषोत्तर कहिए। सो मानुषोत्तर पर्वत कैसा है वलयाकार है और पैंतालीस

लाख जोजन का है। अढ़ाई द्वीप मनुष्य क्षेत्र तिसकूं बेढि कैं चूड़ी कै आकार परया है। तिसकी चौड़ाई बाहरि के क्षेत्र विषैं गिननी तातैं मानुषोत्तर परैं मनुष्य न जाइ सकै इह नियम है। मानुषोत्तर पर्वतकी शिखा परि सास्वते च्यारों दिशानि विषै एक एक जिनालय हैं तिनकी बंदना देव करैं हैं। और दूरितैं विद्याधर बंदै है, ऊपरि न जाय सकै हैं। सो कैसा है मानुषोत्तर पर्वत, चित्रा पृथ्वी परि चोडा एक हजार बाईस योजन का परया है, अढाई द्वीप कै धोरे और मध्य विषैं सात सै तेईस योजन का चौडा है। अर ऊपरि शिखर परि च्यारि सै चौबीस योजन का चौडा है। और मानुषोत्तर पर्वत सतरासै इकवीस योजन का ऊँचा है। बहुरि मानुषोत्तर पर्वत की जड़ चित्रा पृथ्वी विषैं ऊँचाई कै चौथे हिस्सै च्यारि सै सवातीस योजन की है। ऋजु विमाण तैं मध्य तैं लाख योजन ऊँचा है। सो मानुषोत्तर पर्वत सेती कैसें मिलैं न मिलै। और कोई जीव ऐसी शंका करै है कि ऋजुविमान मानुषोत्तर सेती आर लाग्या है इस वास्तै अढाई द्वीप तैं बाहरि मनुष्य जाता नाहीं, सो यह बात झूंठ गलत है और ऋजु विमान सीधे वलय कै आकार पडा है। वा आधे लडवे के आकार पडा है। सो इहां तैं लाख योजन ऊँचा है सो मानुषोत्तर सेती कैसें मिलै? ऋजुविमान इहाँ तैं लाख

मानुषोत्तर प्रमाण यंत्र

चौराई			उँचाई	जड	सूची
भू	म	ऊ			
१०२२ यो	७२३ यो	४२४ यो	१७२१ यो	४३०/$\frac{1}{4}$ यो	ला ४५००००० यो

योजन ऊँचा वीतराग देवनै कहा है। सो ऋजु विमान भी पैंतालीस लाख योजन का चौडा है।

देवलोक प्रवीचार कथन करिए हैः—

— देव देवी संभोग —

दोय सुरगमैं कायभोग है,
दोय सुरग मैं फरस निहार,
चार सुरगमैं रूप निहारैं,
चार सुरगमैं सबद विचार ॥
चार सुरगमैं मनकौ विकलप,
आगैं सहज सील निरधार।
अहमिंद्र सब महासुखी हैं,
बंदौं सिद्ध सुखी अविकार ॥२३॥

देवलोक विषैं देवांगनानि के उपजने की उत्पाद सज्या पहले दूसरे स्वर्ग विषैं है, ऊपरि नाहीं है, और ऊपरिले देवता सोलमें स्वर्ग ताईं अपनी २ नियोगिनी देवांगनानिनै ले जाइ हैं। तिन देवांगनानि सेती जो संयोग भोग तिनका कथन इस छप्पयविषैं कीजिए है। भवनवासी व्यन्तर ज्योतिषी ए भवनत्रिक अरु सौधर्म ईशान ए दोय स्वर्ग तिन विषैं भोग की वांछा उपजै तब स्त्री पुरुषनि की नाईं भोग काय सौ भोगवै है। याही तैं याका नाम काय प्रवीचार कहा है। तिसतैं ऊपरि दोय स्वर्गनि विषैं सनत्कुमार माहेन्द्र तीजे चौथे विषैं जब भोगनि की वांछा होय तब शरीर के स्पर्श तैं भोगनि की वांछा तृप्ति होय जाय है। शरीर का स्पर्श होतैं ही भोग वांछा मिटै है। तिसतैं ऊपरि ब्रह्म ब्रह्मोत्तर लांतव कापिष्ट इन च्यारि स्वर्गनिविषैं भोगनि की वांछा होय तब कामदृष्टि करि रूप के देखिवे तैं ही भोगानि की वांछा मिटि जाय है। केवल रूप देखवा मात्र का ही भोग है। तिसतैं ऊपरि शुक्र महा-शुक्र सतार सहस्रार इन च्यारि स्वर्गनि विषैं जब भोगनि की वांछा होय तब कामरूप शब्द बोलिवे तैं तिसकरि भोग वांछा मिटै है।

तिसतैं ऊपरि आनत प्राणत आरण अच्युत च्यारि स्वर्गनि विषैं जब भोगनि की वांछा होय तब कामरूप मन

विषैं विकल्प करै तिन करि भोगनि की वांछा पूरी होइ जाय। या भांति सोला स्वर्गनि विषैं निरन्तर भोग है सो जानना। इन सोला स्वर्गनि कै ऊपरि जे नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश, पांच अनुत्तर तिन विषैं देवाङ्गना हैं ही नांहीं, तहाँ सब देवताही हैं। तातैं ते देवता सहज शीलवन्त होइ। या जानि सहज ब्रह्मचारी है ऐसे लौकांतिक पाडे के भी देवता ब्रह्मचारी हैं। पांचमे के अन्त लौकांतिक देव बसै हैं। और नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश, पांच अनुत्तर इन विषैं जे देवता हैं ते सब अहमिन्द्र कहिए, काहे तैं ? इनकी दश प्रकारकी पारिषदादिक नहीं, सब बराबरि हैं, कोई घाटि बांधि नाहीं, तातैं अहमिन्द्र कहिए बहुरि। कैसे हैं—वे

देव लोक प्रवीचार यंत्र

स्थान	भ०त्रि	सौ	स २	ब्र ४	शु ४	आ ४	अह	सिद्ध
संख्या	५	५	४	३	२	१	०	०
भेद	काय स्पर्श रूप शब्द मन	का० स्प० रू० श० मन	स्पर्श रूप शब्द मन	रूप शब्द मन	शब्द मन	मन	अविकार	अविकार

अहमिन्द्र? महासुखी हैं, जिनका धर्मध्यान विषैं काल व्यतीत होइ है। एक जीव द्रव्य की चर्चा ही में काल पूरो होहै। मैं बन्दौं हौं नमस्कार करौंहौं, सिद्ध परमेष्ठीनिकौं। ते सिद्ध परमेष्ठी महासुखी हैं अर विकार रहित हैं, निज स्वभाव विषैं अविचल तिष्ठैं हैं।

— १६६ प्रधानपुरुषों की गणना —

छप्पय

चौबीसौं जिनराय–पाय बंदौं सुखदायक।
कामदेव चौबीस, ईस सुमरौं सिवनायक॥
भरत आदि चक्रीस, दुदस बहु सुरनरस्वामी।
नारद पदम मुरारि, और प्रतिहरि जगनामी॥
जिनमात तात कुलकर पुरुष, संकर उत्तम जियधरौं।
कछु तदभव कछु भव धरजगत, मुकतिरूपबंदन करौं

चौबीसौं तीर्थङ्करनि के चरणकमलनिकौं बन्दौं हौं। ते कैसे हैं, महान सुख के दायक कहिए दातार हैं। कामदेव चौबीस भए ते मोक्ष गए, तिनकौं बन्दौं हौं, स्मरौं हौं, पूजौं हौं। जो पुरुष कामदेव पदवी का धारक होइ ते मोक्ष ही जाइ यह नियम है। भरत आदि बारह चक्रवर्ति भए ते कैसे भए, छह खण्ड की धरा नवनिधि चौदह रतन तिनके स्वामी भए, तिन विषैं आठ मोक्ष गए, दोय स्वर्ग गए,

दोय नरक गये ते भी केईक भवनि विषैं मोक्ष जासी। नारद नव भए, ते अधोगामी, यह नियम है।

नव बलभद्र भए तिनमैं आठ मोक्ष गए एक स्वर्ग गया। नव नारायण भये ते भी अधोगामी ही भए। और नव प्रतिनारायण भए ते भी अधोगामी ही भए। चौबीस जिनेश्वर देव की मरुदेवी आदिमाता २४ भई और चौबीस ही नाभिराजानैं आदि देइ पिता भए। अरु चौदह कुलकर भए, और ग्यारा रुद्र भए। ए सब एकसौ गुणत्तरि जीव उत्तम पुरुष भए। तिन विषैं त्रेसठि शलाका पुरुष तौ किसी की सेवा करै नाहीं, उनही की सब सेवा करै। इन एक सौ गुणत्तरि जीवनि विषैं केई जीव तद्भव मोक्ष गए केई जीव संसार विषैं भव धरिकैं मोक्ष जाईंगैं तिन सबकूं मोक्षरूप बंदना करौं, हौं नमस्कार करौं हौं।

उत्तम पुरुष संख्या

तीर्थंकर २४	माता २४
चक्रवर्त्ति १२	पिता २४
बलभद्र ९	नारद ९
नारायण ९	रुद्र ११
प्रतिनारायण ९	कुलकर १४
कामदेव २४	

योग १६९

—: एकसौ अडतालीस कर्म प्रकृतियां :—

ज्ञानावरणी पांच, दर्शनावरनी नौ त्रिध ।
दोय वेदनी जान, मोहनी आठ वीस निध ॥
आव चार परकार, नाम की प्रकृति तिरानौ ।
तथा एकसौ तीन, गोत दो भेद प्रमानौ ॥
कहि अंतराय की पांच सब, सौ अडतालिस जानिए ।
इमि आठ करम अडतालिसौं, भिन्नरूप निजमानिए ॥

ज्ञानावरणी पांच प्रकारः-मतिज्ञानावरणी, श्रुतज्ञानावरणी अधिज्ञानावरणी, मनःपर्ययज्ञानावरणी, केवल ज्ञानावरणी ए पांच भेद ज्ञानावरण के कहे। दर्शनावरणी नव प्रकार हैः—चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धिनिद्रा, ए नव भेद कहे। वेदनीय दोय प्रकार हैः-एक साता वेदनीय, एक असाता वेदनीय, ए दोय भेद वेदनी के हैं। अरु मोहनीय अठाईस प्रकार है—दर्शनमोह ३ः—मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्वप्रकृति। चारित्रमोह २५ः—कषाय १६—अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया लोभ ४ प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ४, अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ ४, संज्वलन, क्रोध, मान, माया लोभ, ४ ए १६। नौ कषाय ९ः—हास्य, रति,

अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, ए २५ चारित्र मोह के। आयुकर्म च्यारि प्रकारः-नरकायु, तिर्यग्गायु, मनुष्यायु देव आयु ए च्यारि भेद। नामकर्म की तिराणवैं प्रकृतिः-सपिंड प्रकृति, गति ४, जाति ५, शरीर ५, अंगोपांग ३, बन्धन ५, संघात ५, संस्थान ६, संहनन ६, स्पर्श ८, रस ५, गंध २, वर्ण ५, आनुपूर्वी ४, विहायोगति २, ए ६५। अपिंडप्रकृति २८—अगुरुलघु १ उपघात १, परघात १ उस्वास १, आताप १ उद्योत १ निर्माण १, तीर्थङ्कर १ त्रस १ वादर १ पर्याप्त १, प्रत्येक १ थिर १ शुभ १ सुभग १ सुस्वर १ आदेय १ जसकीर्ति १ थावर १ सूक्ष्म १ अपर्याप्त १ साधारण १ अथिर १ अशुभ १ दुर्भग १ अनादेय १ अजसकीर्ति १ ए अठाईस अपिंड प्रकृति। सब मिलि तिराणवैं भई। तथा नामकर्म की एक सौ तीन प्रकृति कही हैं। शरीरके पांच और पंद्रा, दो प्रकार भेद कीए हैं, सो तिराणवें मांहि दस और मिलाए एक सौ तीन प्रकृति भी कहिए। अर दश बधी तिनका भेद कर्मकांड तैं जानना। अन्तराय कर्म पांच प्रकार है—दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय, वीर्यान्तराय, ए पांच अन्तराय कर्म की प्रकृति जाननी।

ए सर्व एक सौ अडतालीस कर्मनि की प्रकृति हैं। तहां मूलप्रकृति आठ, ज्ञानावरण १, दर्शनावरण १, वेदनीय १

मोहनीय १ आयु १ नाम १ गोत्र १ अन्तराय १। उत्तरप्रकृति एकसौ अडतालीसः-ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण९ वेदनीय २ मोहनीय २८, आयु ४, नाम ९३, गोत्र२, अन्तराय ५, ए सब आठ कर्मकी एकसौ अडतालीस प्रकृति भई। उत्तरोत्तर भेद असंख्यांते हैं, तथा अनन्ते हैं। आगम के अनुसार सब ही जानिवे योग्य हैं।

इस भांति आठ कर्मनि की एकसौ अडतालीस प्रकृति भई सो तिन आठ करमनि सेती अर एकसौ अडतालीस प्रकृतिनि सेती अपना आत्मा भिन्न जानना, जुदा जानना। ए कर्म जड हैं अर आत्मा चैतन्य है।

एक सौ अडतालीस कर्म प्रकृति यंत्र

मू० प्र०	ज्ञा	द	वे	मो	आ	ना	गो	अं
उ० प्र०	५	९	२	२८	४	९३	२	५
उत्तरोत्तर	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ

अब भवविपाकी, क्षेत्रविपाकी, पुद्गलविपाकी और जीव विपाकी प्रकृतियाँ १४८ तिनका ब्यौरा कहिए है—

सवैया इकतीसा

वरनादिक बीस संस्थान संहनन बारै,
बंधन संघात देह अङ्गोपांग ठारै हैं।
अगुरुलघु आतप उपघात परघात,
निरमान परतेक साधारन सारै हैं ॥
अथिर उदोत थिर सुभ असुभ बासठ,
पुग्गलविपाकी भौविपाकी आव चारै हैं ॥
क्षेत्र की विपाकी चार आनुपूर्वी अठत्तर,
बाकी जीवकी विपाकी धरैं अघ टारै हैं ॥२६॥

जिस प्रकृति का पुद्‌गलविषै उदय होय सो पुद्‌गलविपाकी कहिए है। और जो प्रकृति भवविषैं उदय आवै सो भव विपाकी कहिए है। अरु जो प्रकृति पर क्षेत्रविषैं ले जाइ सो क्षेत्रविपाकी कहिए। अरु जिस प्रकृति के उदय विषैं जीवनाम आवै सो जीवविपाकी कहिए।

सो पुद्‌गलविपाकी ६२, भव विपाकी ४, क्षेत्र विपाकी४, जीव विपाकी ७८, प्रकृतिनी का ब्यौरा कहिए है। वर्णादिक २०–वर्ण ५, कालो, पीलो, हरित, लाल, श्वेत. गंध–सुगंध, दुर्गंध। स्पर्श–तातो, सीलो, हलको, भारयो, लूखो, चिकणो, नरम, कठोर। रस ५–खाटो, मीठो,कडो,

कसायलो, चिरपरो ए वीस भेद भए । संस्थान छह, शरीर के आकारको संस्थान कहिए–समचतुरस्र, निग्रोध-परिमण्डल, स्वातिक, कुबजक, वामन, हुंडक, ए छह संस्थान हैं। संहनन छह–वज्रवृषभनाराच, वज्रनाराच, नाराच, अर्द्ध-नाराच, कीलित, स्फाटिक ए छह संहनन। ए बारह भए।

बंधन पांचः–औदारिक बंधन, वैक्रियक बंधन, आहारकबंधन, तैजसबंधन, कार्माण बंधन। संघात ५–औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्माण ए पांच हैं।

देह ५–औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्माण ए पांच देह हैं। अंगोपांग ३–औदारिक अंगोपांग, वैक्रियक अंगोपांग, आहारक अंगोपांग। ए सब मिलि अठारह भई। न हलको न भारयो, उष्णकिरन, आपतैं घात सो उपघात, परतैं घात सो परघात, अपनी मर्यादरूप होय सो निर्माण, स्थान निर्माण प्रमाण निर्माण। एकजीव कै होय सो प्रत्येक कहिए। जिस विषै अनंत जीव पाइए सो साधारण कहिए। धातु की चलाचल होय सो अथिर कहिए। दिपै सो उद्योत। धात स्थिर रहै। भला होना। बुरा होना। ए बासठि प्रकृति पुद्गलविपाकी हैं। इनका उदय पुद्गलविषैं है।

नरक आयु, तिर्यंच आयु, मानुष आयु, देव आयु, ए च्यारि आयु भवविपाकी हैं। इनका उदय भवधारण कीये

तैं हो है। अर क्षेत्रविपाकी च्यारिः—नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, देवगत्यानुपूर्वी, ये ४ क्षेत्रविपाकी हैं। इन प्रकृतितैं बाकी रही प्रकृति अठहत्तरि, ते जीव विपाकी कहिए। जिस प्रकृति का उदय विषै जीव का नाम आवै सो जीव विपाकी कहिए। विपाक नाम उदय का है। जैसा कथन जो धारन करै श्रद्धान करै सो पाप तैं छूटै है, परम पवित्र होय अनंत सुख पावै है।

एक सौ अठतालीस पुद्गल विपाकी आदि का यंत्र

पुद्गल विपाकी	भौ वि	क्षे वि	जीव विपाकी
६२	४	४	७८
वरण ५, गंध २, स्पर्श ८, रस ५, संस्थान ६, संहनन ६, बंधन ५, संघात ५, देह ५, अंगोपांग ३, अगु १, आ १, अ १. प १, नि १, प्र १, सा १, अ १, उ १, थि १, शु १, अ १।	नरक आयु १, तिर्यंच आयु १, नरायु १, देवायु १।	नरक गत्यानुपूर्वी, तिर्यंगत्यानुपूर्वी, नरानुपूर्वी, देवानुपूर्वी	ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ६, वेदनी २, मोहनी २८, गोत्र २, अंतराय ५, नाम २७:– ग ४, इं ५. उच्छ् १, चाल २, शुगा १, दुर्भ १, जस १, अ १, आदेय १. अनादेय १, सुस्व १, दु १ त्र १, था १, सू १, वा १, ती १ प २

— सर्वघाती, देशघाती और अघाति प्रकृतियों का कथन —

केवलदरस ज्ञान आवरण ताकी दोय,
मिथ्यात समैं मिथ्यात निद्रा पांच भानिये।
तीनौं चौकरी की बारै सर्वघाती इकईस,
संजुलन चार नव नोकषाय मानिये॥
ग्यानावरणी की चार दर्शनावरणी तीन,
अंतराय पांच सम्यक मिथ्यात ठानिये॥
देसघाती की छब्बीस बाकी एकसौ अघाती,
तीनौं घातीकर्म घात आप शुद्ध जानिये॥२७॥

जो प्रकृति आत्मा के गुणनि को सर्वांग घात करै सो सर्वघाती कहिए। ते सर्वघाती प्रकृति इकईस हैं। और जो प्रकृति आत्मा के एकदेशकूं घातै सो देशघाती कहिए, ते देशघाती छब्बीस प्रकृति हैं। अर जे प्रकृति आत्मगुण का घात करै नांही, अपनां उदय की साथि खिरि जाय ते अघाती हैं। ते प्रकृति एक सौ एक हैं। इन सबका जुदा जुदा ब्यौरा कथन इस प्रकार है—

केवलज्ञानावरणीय, केवलदर्शनावरणीय दोय ए मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व—मिश्रमोहनी प्रकृति, और पांच निद्रातें-निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला,प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि-

निद्रा,इन पांचनि का नाश करिए । तीनौं अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, अप्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया, लोभ, ए बारह । ए इकईस प्रकृति सर्वघाती हैं । इनका उदय आत्मा का सर्वगुण घातै है । तातैं सर्वघाती प्रकृति इकईस हैं ।

संज्वलन ४, क्रोध, मान, माया, लोभ, ए च्यारि हैं । नो कषाय नवः—तहाँ हास्यादिक छह—हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, ए ६ और वेद तीन-स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, ए ३, ए नव नौकषाय कहिए । मतिज्ञानावरणी, श्रुतज्ञानावरणी, अवधिज्ञानावरणी, मनः-पर्ययज्ञानावरणी, ए ज्ञानावरणी की च्यारि । दर्शनावरणी तीनः——चक्षुदर्शनावरणी, अचक्षुदर्शनावरणी, अवधि दर्शनावरणी । अंतराय कर्म की प्रकृति पांचः—दानांतराय लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यांतराय, ए अंतराय की पांच । दर्शनमोह की प्रकृति तीसरी सम्यक्त्व मोहनी । ए छब्बीस प्रकृति देश घातियां की हैं । इनके उदयमांहि गुन सर्वांग घात्या जाय नाहीं तातें ए देशघाति कहिए। च्यारौं घातिया कर्मनि की प्रकृतिनि विषैं सर्वघाति २१, देशघाति २६, इनतैं बाकी रही एकसौ एक प्रकृति, ते अघातिया कहिए हैं । ए प्रकृति किसी ही गुननैं घातती नांही, तातैं अघातिया कही हैं । ए घातिया, देशघातिया

अर अघातिया इन तीनौं ने घातै, नाश करै, क्षय करै तब आत्मा शुद्ध होय यह जानना।

घातिया अघातिया यन्त्र

घातिया		अघाति
घात	देषघा	
१	२६	१०१

पाच त्रिभंगी (बंध, उदय, उदीरणा, सत्ता, विशेष सत्ता)

सवैया इकतीसा

वर्णादिक च्यार सोलै नांही देह आदि पंच,
दस नांहि मिथ्या एक दोय बंध नाहीं है।
सोलै दस दोय विना बंध एक सतवीस,
मिथ्या उदै तीन दोय बढै उदै पाहीं हैं॥
उदय औ उदीरणा एक सत बाइस की,
सत्ता सौ अड़ताल विसेस सत्ता ठाहीं है।
मिथ्या गुण सौ छियाल काहू सत सत्ताईस,
पांचौं तिरभंगी सौं असंगी आपमांहि है॥२८॥

बंध, उदय, उदीरणा, सत्ता, विशेष सत्ता, इन पांचों त्रिभंगी का कथन है। पाचौं वर्णमांहि एक कोई

वर्ण, पांचौं रस मांहि एक कोई रस, दोन्यौं गंध विषैं एक कोई गंध, आठौं स्पर्श मांहि एक कोई स्पर्श। इन बीसौं मांहि बंध योग्य च्यारि प्रकृति है। और बाकी सोला इन च्यारिनि ही विषैं गर्भित हैं। शरीर ५, बंधन ५, संघात ५, इन पंद्रा जोग विषैं पांच शरीर ही बध योग्य हैं। वंधन और संघात ते इन विषैं गर्भित भए। तातैं दश प्रकृति और घटी, पांच बन्धन घटे, पांच संघात घटे। दर्शन मोहकी प्रकृति तीन। तिन विषैं एक मिथ्यात्वका बंध है। सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्वप्रकृति, ए दोय बंध जोग्य नांही तातैं मिथ्यात्व विषैं गर्भित भए, ए दोन्यौं प्रकृति और घटी। वर्णादिक की सोलह और बंधन संघात दश और दर्शन मोह की दोय ए अठाईस प्रकृति बंध योग्य नाहीं। इन अठाईस प्रकृति विनां, बाकी एक सौ बीस प्रकृति बंध योग्य हैं। और उदय विषैं एक सौ बाईस प्रकृति हैं। उदयविषैं मिथ्यात्व तीनौ आवै, बंध तैं उदय विषैं दोय मिथ्यात्व वधै है। जैसे उदय एक सौ बाईस का तैसे उदीरणां एक सौ बाईस की। उदीरणां एक सौ बाईस की, जोरावरी तप के बलि करिकै तपावै सो उदीरना कहिए। और नाना जीव अपेक्षा सत्ता एक सौ अडतालीस प्रकृति की पाईए। एक जीव की अपेक्षा कथन करिये सो विशेष सत्ता कहिए। सो कैसे कहिए, कही प्रकृति सोला

इन विषैं गर्भित भई तातैं सोला घटी। और जैसे कोई एक जीव मिथ्यात्व गुणस्थान विषैं है तिसकै बहुत पाईए तौ एक सौ छीयालीस की सत्ता पाईए, आयु दोय कोई सी न पाईए यह नियम है। और किसी जीव कै एक सौ

मूल उत्तर प्रकृति १४८ की पंच त्रिभंगी यंत्र

नाम	ज्ञा	द	वे	मो	आ	ना	गो	अं	यो०
बंध	५	६	२	२६	४	६७	२	५	१२०
उदय	५	६	२	२८	४	६७	२	५	१२२
उदीर	५	६	२	२८	४	६७	२	५	१२२
सत्ता नाना	५	६	२	२८	४	९३	२	५	१४८
जीव विशेयि सत्ता	५	६	२	२८	२	९३	२	५	१४६
एक अपेक्षा	५	६	२						१२७

सत्ताईस प्रकृति की सत्ता पाईए इनका । विशेष त्रिभंगीसार तैं देख लेना ।

बंध, उदय, उदीरणा, सत्ता, विशेष सत्ता, इन पांचौं त्रिभंगीनि सौं निश्चय करिकै आत्मा असंगी है । इन पांचौ त्रिभंगी तैं जुदा है, भिन्न है । बहुरि कैसा है आत्मा अपनी निज सत्ता विषैं विराजै है ।

अब सबका समुच्चय कथन

—: बंध, उदय, और सत्ता :—

छप्पय (२६)

बंध एकसौ वीस, उदय सौ बाइस आवै ।
सत्ता सौ अड़ताल, पाप की सौ कहलावै ॥
पुन्यप्रकृति अठसाठि, अठत्तर जीवविपाकी ।
बासठ देह-विपाकि, खेत भव चव चव बाकी ॥
इकईस सरवघाती प्रकृति, देशघाति छव्वीस हैं ।
बाक अघाति इक अधिकशत, भिन्न सिद्ध सिवईस हैं

बंध योग्य एक सौ बीस प्रकृति हैं, अठाईस प्रकृति इन विषैं गर्भित भई । उदय विषैं एक सो बाईस प्रकृति आवैं छब्बीस इन विषैं गर्भित होइ खिरी । और सत्ता विषैं एक सौ अडतालीस प्रकृति पाईए । और तिन एक सौ अडता-

तीस प्रकृतिनि विषैं पाप प्रकृति सौ है। अशुभ परिणामसैं बंधै सो पाप प्रकृति है।

और पुण्यप्रकृति अड़सठि हैं। जो शुभ परिणामौं सैं बंधै सो पुण्य-प्रकृति कहिए। और वर्णादिक बीस प्रकृति पाप विषैं भी गिनी अरु पुण्य विषैं भी गिनी तातैं अड़सठि भई। अर अठहत्तरि प्रकृति जीव विपाकी है। बासठि प्रकृति पुद्गलविपाकी है।

क्षेत्रविपाकी च्यारि प्रकृति हैं और भवविपाकी भी च्यारि प्रकृति हैं। और इकईस प्रकृति सर्वघातियां की हैं। और छब्बीस प्रकृति देश घातियां की है। इनतैं बाकी रही एक सौ एक प्रकृति ते अघातियां की है। जिनके उदय विषैं गुण घात्या न जाय ते अघाती प्रकृति एक सौ एक हैं। इन भेदनि तैं सिद्ध निःकलंक परमात्मा भिन्न हैं जुदा हैं और शिव कहिए मोक्ष तिसके ईश्वर हैं ऐसे अनन्ते सिद्धों नैं हमारा नमस्कार होऊ।

—: एकसौ पाप प्रकृतियों के नाम :—

सवैया इकतीसा

घाति सैंतालीस दुक्ख नीच नरकायु पंच,
संस्थान संहनन वर्ण रस मानिए।

नर्क पशुगति आनुपूरवी फरस आठ,
गंध दोय इंद्री चार, बुरी चाल ठानिए ॥
अथिर अपर्यापत सूक्षम औ साधारण,
उपघात थावर अशुभ परमानिए ।
दुर्भग दुस्वर औ अनादेय अजसरूप,
पापप्रकृति सौ भेद त्यागि धर्म जानिए ॥३०॥

मन वचन काय की वक्रता मांहि अशुभ परिणामों करिकैं जिन प्रकृतिनि का बंध पड़ै ते पाप प्रकृति कहिए। ते पाप प्रकृति एक सौ हैं तिनका नाममात्र संक्षेपता करिकैं कथन करिए है:—च्यारौं घातिया कर्मनि की प्रकृति सैंतालीस, असाता वेदनीय, नीचगोत्र, नरक आयु, समचतुरस्र संस्थान विना पांच संस्थान, वज्रवृषभनाराच संहनन विना पांच संहनन, पाँच वर्ण, पांच रस प्रमाण करिये। नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, नरकगति, तिर्यंचगति, आठ स्पर्श, गंध दोय, पंचेन्द्री विनां इंद्रिय ४, अप्रशस्त चाल, अस्थिर, अपर्याप्त, सूक्ष्म और साधारण, उपघात, स्थावर, अशुभ प्रमाण करिए। दुर्भाग्य, दुस्वर, अनादेय, अजसकीर्ति, ए सौ प्रकृति पापकी हैं। इनकै ताइं जो मन, वचन, काय करिकैं त्यागै सो ही जीव धर्मात्मा जानिए।

अब शुभ परिणामसों बंधे पुण्य प्रवृत्ति तिनका कथनः-

—: पुण्य प्रकृतियों के ६८ नाम :—

सवैया

सुर नर पशु आव साता ऊंच भली चाल,
सुर नर आनुपूर्व निरमान स्वास है।
बंधन संघात देह वर्ण रस पंच त्रस,
तीन अंग सुभ दोय गंध आठ फास है।
अगुरुलघु पंचेन्द्री संस्थान संहनन,
बादर प्रतेक थिर पर्यापत जस है।
आतप उद्योत परघात सुस्वर सुभग,
आदेय तीर्थंकर कों बंदों अघ नास है ॥३१॥

देव आयु, मनुष्य आयु, तिर्यंच आयु, साता वेदनीय ऊंचगोत्र, प्रशस्त चाल, देवगति, मनुष्यगति, देवगत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, निर्माण, श्वासोछ्वास, बंधन ५, संघात ५, देह ५. वर्ण ५. रस ५ ए पांच, तीन अंगोपांग, शुभ, दोय गंध, आठ स्पर्श ८, अगुरुलघु, पंचेन्द्री, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रवृषभनाराच संहनन, बादर, प्रत्येक स्थिर, पर्याप्त, जसकीर्ति, आताप, उद्योत, परघात, सुस्वर,

सौभाग्य, आदेय, तीर्थंकर ये पुण्य प्रकृति हैं। तिन तीर्थंकरौं के बंदिवे तैं पाप का नाश हो है।

—:जिनमत की श्रद्धाः—

छप्पय

तिहूँ काल षट दरब, पदारथ नव तुम भाखे।
सप्त तत्त्व पंचास्तिकाय, षटकायिक राखे॥
आठ कर्म गुण आठ, भेद लेस्या षट जानै।
पंच पंच व्रत समिति, चरित गति ग्यान बखानै॥
सरधै प्रतीत रुचि मन धरै,
मुकतिमूल समकित यही।
पदनमों जोरि कर सीस धर,
धनि सर्वंग इह विध कही॥३२॥

जिनेश्वर देव की वांनी विषैं जे कहे तिनकी जो श्रद्धा कीजे सो ही सम्यग्दर्शन तिसका वर्णनः—अतीत, अनागत, वर्तमान, ए ३ काल। जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म आकाश, काल, ए छह द्रव्य। जीव, अजीव, आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, पुन्य, पाप, ए नौ पदार्थ। जीव, अजीव, आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए सात तत्त्व हैं। जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, ए पंचास्ति-

काय। पांच स्थावर—पृथ्वी काय, जलकाय, तेजकाय, वनस्पति काय ए पांच, अर छठौ त्रस काय इन जीवनि की रक्षा करनी। ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनी, मोहनी, आयु, नाम, गोत्र, अंतराय ए आठ कर्म। निःशंकितादि आठ गुण वा सिद्धनि के आठगुण तिनका कथन की तथा लेश्या के छह भेद १ कृष्ण लेश्या, २ नील लेश्या, ३ कापोतलेश्या, ४ शुक्ललेश्या ५ पीतलेश्या, पद्मलेश्या ए छह लेश्या है। आगैं पांच पांच भेद कहे हैं। १ अहिंसा, २ सत्य, ३ अचौर्य, ब्रह्मचर्य ५ परिग्रह को त्याग,। १ ईर्या २ भाषा ३ एषणा ४ आदान निक्षेप ५ प्रतिष्ठापना। १ सामायिक २ छेदोपस्थापना, ३ परिहारविशुद्धि, ४ सूक्ष्मसांपराय ५ यथाख्यातचारित्र। नरक, तिर्यंच, मनुष, देव, अरु पंचमगति मोक्ष। १ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान ४ मनःपर्ययज्ञान ५ केवलज्ञान ए पांच ज्ञान। इतने कथन की जो जीव मन, वचन, काय करि श्रद्धा करै प्रतीति करै, रुचिसेती मन विषैं धारण करे। यही मोक्ष का मूल एक सम्यग्दर्शन है। केवली भगवान के वचनों की श्रद्धा करनी ताका नाम सम्यग्दर्शन है।

तिस भगवान सर्वज्ञदेव के चरणकमलनिनैं मस्तक परि हाथ धरिकैं नमस्कार करौं हौं। ते सर्वज्ञदेव धन्य हैं जिननैं दिव्यध्वनि करि यह विधि साक्षात् प्रकट दिखाई ते धन्य हैं।

१६६ ॥ लाख कुलकोड का ब्योरा

सवैया इकतीसा

पृथ्वीकाय बीस दोय जल सात तेज तीनि,
वायु सात तरु बीस आठ परमानिए।
वे ते चउ इंद्री सात आठ नव खग बारै,
जलचर साढ़े बारै चौपे दस जानिये॥
सरीसृप नव नारकी पचीस नर चौदै,
देवता छवीस लाख कुल कोरि मानिए।
दोय कोराकोरीमांहि आधलाख कोरि नांहि,
सबकों निहारिकै दयालभाव आनिए॥३३॥

कुल नाम पिता पक्ष का है सो कुल कोडि की गिणती एक सौ साढा निन्याणवै लाख कोटि है। तिनका जुदा जुदा ब्यौरा का कथन इस छंद विषै है। पृथ्वीकाय की बाईस लाख कुलकोडि है। जल काय का सात लाख कुल कोडि है। अग्निकाय का तीन लाख कुल कोडि है। वायुकाय सातलाख कुल कोडि है। वनस्पतिकाय की अठाईस लाख कुल कोडि प्रमाण जाननी। वेइन्द्री, ते इंद्री, चौइंद्री जीवनि की कुल कोडि अनुक्रम ते सात आठ नव लाख कुल कोडि है। नभचारीनि की बारा

एक सौ साढे निन्यान्वे लाख जीवनि की कुल कोडि का यंत्र

तिर्यंच	एकेंद्री जीव	पृथ्वी काय	२२००००००००००००
		जल काय	७००००००००००००
		अग्नि काय	३००००००००००००
		पवन काय	७००००००००००००
		वनस्पति	२८००००००००००००
		जोड	६७००००००००००००
	विकलत्रय	बेइंद्री	७००००००००००००
		तेइंद्री	८००००००००००००
		चौइंद्री	९००००००००००००
		योग	२४००००००००००००
	पंचेंद्री	जलचर	१२५०००००००००००
		नभचर	१२००००००००००००
		चौपद	१००००००००००००
		सरीसर्प	९००००००००००००
		योग	४३५००००००००००००
		योग	१३४५००००००००००००
देव,			२६००००००००००००
नारकी,			२५००००००००००००
मनुष्य			१४००००००००००००
जोड			१९९५००००००००००००

लाख कुल कोडि है। जलचर जीवनि की साढा बारा लाख कुल कोडि है। चौपद जीवनि की दशलाख कुल कोडि है। गोह आदि सरीसर्प जीवनि का कुल कोडि नव लाख कुल कोडि है। नारकी जीवनि की पचीस लाख कुल कोडि है। मनुष्यनि की कुल कोडि चौदह लाख कुल कोडि है। देवतांनि की छत्रीस लाख कुल कोडि है। दोय कोराकोरी विषै आधा लाख कोडि घटाई दीजे। इन सब जीवांनि की एक सौ साडा निन्याणबै लाख कुल कोडि देखिकै निहारिकै, निरखिकै, अपने मन विषै दयालभाव राखना, कृपाभाव राखना, इनकी रक्षा करनी।

—: अंकगणना के ग्यारह भेद :—

छप्पय

ग्यार अंक पद एक, अंक दस सब पद जानी।
पूरब चौदे अंक, बीस अच्छर जिनवानी॥
उनतिस अंक मनुष्य, पल्य पैंतालिस अच्छर।
सरसों कुंड छियाल, डेढ़सौ तिथि अच्छर वर॥
इकतीस अंक पल कलप के, जबु फलावटि दस वरन।
सब वातवलय ग्यारै वरन धन्य जैन संसै हरन॥३४॥

अब ग्यारै भेद अंक गिनती अंक कहिए कितने भए किस स्थान के यह कथन कीजिए है—

एक पद के सर्व ग्यारै अंक हैं अर्थात् १६३४८३०-७८८८, हैं। सब द्वादशांग वानी के पदों के दश अंक भए अर्थात् ११२८३५८००५ भये। एक पूर्व के चौदहै अंक हैं अर्थात् ७०५६०००००००००० हैं। और द्वादशांगवानी के वीस अक्षर हैं ते फलाय लेने, धर्म विलास विषैं यह कथन देखि लेना। अर्थात् १८४४६७४४०७३७०९५५१६१५ हैं। अरु गुणतीस अंक प्रमाण मनुष्य राशि पर्याप्त मनुष्यनि की है। एक योजन का कुंड ऊँचा, चौडा, गोल सो रोम करि भरिए। तब सौ सौ बरस पीछे एक एक रोम खाली होय तिसका नाम एक पल्य कहिए। सो ताके अंक पैंतालीस हैं। एक लाख योजन का कुंड चौडा लंबा हजार योजना ऊंचा ताकौं सरिसौनि सौं सिगाऊ भरै ते सरिसौं छीयालीस अंक प्रमाण माई। और डेढ़सौ अक्षरताई संख्यात की गिणती है। जैसे च्यारि कुंड स्थापै जब तीन कुंड संपूर्ण भरि ले तब अंत जहाँ पर्यंत पहुंचे द्वीप वा समुद्र विषैं उतना ही चौडा खोदै। तिस कुंड मांहि डेढ़सै १५० अंक प्रमाण सरिसौ माई। दश कोडा कोडि पल्य का एक सागर कहिए। अरबीस कोडा कोडी सागर का एक कल्प काल कहिए। तिस एक कल्प काल के इकतीस अंकनि प्रमांण पल्य जांनने। और जंबूद्वीप को चौरस करि तिसका घनाकार करि फलाईए तौ तिसका

ग्यारह भेद अंक गणना का यंत्र

१	जिनवाणी के एक पद अंक	१६३४८३०७८८८
२	द्वादशांग के अंक दस पद	११२८३५८००५
३	१४ पूर्व अंक	७०५६०००००००००००
४	जिनवाणी अंक २०	१८४४६७४४०७३७०९५५१६१५
५	पर्याप्तमनुष्य अंक २८	७९२२८१६२५१४२२६४३४७५९३५४३९५०३६
६	पल्य क लावा ४५	४१३४५६३०३०८२०३१७७७४९५१२१९२००००००००००००००००००
७	सरसों ४६	१९९७११२९३८४५१३१६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६
८	संख्यात ग० १५०	त्रिलोक सार सिद्धान्त तैं अक्षर अंक जानने १५०
९	कल्प काल पद ३१	२००००००००००००००००००००००००००००००००
१०	जम्बूद्वीप घनफल १०	७९०५६९४१५०
११	वातवलय	१०२४१९८३४८७

घनाकार के प्रमाण योजन दश अक्षर भए ७९०५६९-४१५० । स्थूल योजन ७५००००००००० इतने हो हैं और वातावलांनि की फलावटि ग्यारा अंक प्रमाण है सो विशेष आगम तैं जानना, १०२४१९८३४८७ अंक ए है। जगत प्रतर के गुणकार अंक ११ । जिनेन्द्र देव के दिव्य वचन धन्य हैं जिनके विषै संशय का नाश करनहारा यह सत्यार्थ व्याख्यान भया—जिनके सुनतैं ही अनादि का संशय दूरि हो जाय ते जिन वचन धन्य हैं, सर्वोत्कृष्ट परम पूज्य हैं ।

तेरहवें गुणस्थान में सात त्रिभंगी कनथ

छप्पय

सात जु आश्रव द्वार, बंध इक साता कहिए ।
चौदै भाव प्रमाण, पचासी सत्ता लहिए ॥
अस्सी चउरासीय, इक्यासी और पिच्यासी ।
यह सत्ता चौ भेद, विसेस जिनेसुर भासी ॥
इक कम चालीस उदीरना, उदय बियालिस मानिए।
यह तेरम गुणथानमैं सात त्रिभंगी जानिए ॥४५॥

अब तेरमां गुणस्थान सयोगकेवली ताविषैं त्रिभंगी पाइए तिनका कथन कहे हैं:—

कर्मनि के आगमन का नाम आश्रव है। ताके सात द्वार हैं १ सत्यमन, २ अनुभय मन, ३ सत्य वचन ४ अनुभय वचन, ५ औदारिक, ६ औदारिक मिश्र ७ कार्माण, ए सात योग आश्रव के द्वार हैं। इन मार्ग होय केवलीनि कै कर्म आवै है। और तेरमें गुणस्थान में बंध एक साता वेदनीय का ही है, औरनि का बंध नांही। और तेरमें गुणस्थान विषैं चौदह भाव पाईए है। सो भाव त्रिभंगी तैं देखि लेना और तेरम गुणस्थान विषै पिच्यासी प्रकृतिनि की सत्ता पाइए है। किसी जीव के अहारक चतुष्क और तीर्थंकर बिना सत्ता असी प्रकृतिनि की पाईए है। किसी जीव कै आहारक चतुष्क सहित तीर्थंकर बिना चौरासी प्रकृतिनि की सत्ता पाईए है। किसी जीव कै आहारक बिना तीर्थंकर सहित इक्यासी प्रकृतिनि की सत्ता पाईए है। और किसी जीव कै आहारक चतुष्क और तीर्थंकर इन पंच प्रकृतिनि सहित पिच्यासी प्रकृतिनि की सत्ता पाईए है। या भांति नाना जीवनि की अपेक्षा विशेष सत्ता असी की, चौरासी की, इक्यासी की, और पिच्यासी की, इन च्यारि भेदनि करि तेरम गुणस्थान विषैं वीतराग देव नैं दिव्यध्वनि करि द्वादशांग सूत्र विषैं कही है। और तेरम सजोग गुणस्थान विषैं उनतालीस प्रकृतिनि की उदरीणा है, जोरावरी उदै आनि खिपै सो उदरीणां ३९ की है। और तेरम गुण-

तेरमां गुणस्थान विषैं सात त्रिभंगी रचना यंत्र

आस्रव	बंध	भाव	सत्ता ८५/८० ८४/८१	उदीरणा	उदय रचना	विशेष सत्ता
आ ७	बंध १	भाव १४	सत्ता ८५	उदी ३६	उदय ४२	सत्ता ८५/८४/८१/८०
अ ५०	अ ११६	अ ३६	अस ६३	अनु ८२	अनु. ८०	अस ६३/६३/६३/६३
व्यु० ७	व्यु० १	व्यु १	व्यु० ०	व्यु ७६	व्यु० ३०	व्यु ० ० ० ०
जोड़ ५७	जोड़ १२०	जोड़ ५३	जोड़ १४८	जोड़ १०२	जोड़ १२२	जोड़ १४८/१४७/१४४/१४३

स्थान विषैं बीयालीस प्रकृतिनि का उदय पाईए है। आश्रव १ बंध १ एक सत्ता का भाव चौदह, सत्ता पिच्यासी की, विशेष सत्ता नाना जीव अपेक्षा अस्सी, चौरासी, इक्यासी पिच्यासी की, उदीरनां उनतालीस की उदय बीयालीस का, इन भंगिनि तैं तेरम गुणस्थान सयोग विषै सात त्रिभगी जांननी।

:—बंधदशक कथनः—

छप्पय

जीव करम मिलि बंध, देय रस तास उदै भनि।
उद्दीरणा उपाय, रहैं जबलौं सत्ता गनि॥
उतकर्षण थिति बढ़ैं, घटैं अपकर्षण कहियत।
संक्रमण पररूप, उदीरन विन उपशम मत॥
　संक्रमण उदीरन विन निधत,
　　　घट बढ़ उदीरन संक्रमन।
　चहुँ विना निकांचित बंध दस,
　　　भिन्न आप पद जानि मन॥३६॥

परिणति का भेद करि कर्मनि का बंध दश प्रकार है। जीवमैं परकौं आपा मान्यां तब कर्म का बंध हुवा। जे प्रकृति उदय आए विनां न खिरै सो उदय बंध कहिए।

आयु कर्म बिना और सात कर्मनि की प्रकृति जोरावरी उदीरणां करि खिपावै सो उदीरणां बंध कहिए। अरु कर्म प्रकृतिबंध होइ कै जब तांई उदय आवै नांही, सत्ताविषैं पडी रहै सो सत्ता बंध कहिए। उत्कर्षन परिणामौं करिकैं जो प्रकृति बांध: थी फेरि परिणामनि का निमित्त पाइ उस प्रकृति की थिति बढ़ावैं तिसका नाम उत्कर्षण कहिए। भुज्यमान आयु बिना और जिस प्रकृति का बंध कीया था फेरि परिणामनि का निमित्त पाइ उस प्रकृति की स्थिति घटावै तिसका नाम अपकर्षण कहिए। जो प्रकृति बांधी थी फेरि परिणामनि के बल करि कै उस प्रकृति कौं और प्रकृति मांहि मिलाइ दे, तिसका नाम संक्रमण बंध कहिए। जो कर्म प्रकृति बांधी थी फेरि उस प्रकृति की उदीरणां न होय सो उपशम बंध कहिए। जो कर्म प्रकृति बांधी थी फेरि वह प्रकृति और प्रकृतिविषैं न मिलै और उस प्रकृति की उदीरणां भी न होय तिसका नाम निधत्त बंध कहिए। और जो कर्मप्रकृति बांधी थी तिस प्रकृति की थिति न तो घटै, अर न बधै, अरु न उदीरणां होइ, न संक्रमण होइ। संक्रमण नाम परविषैं मिलने का है। ऐसे च्यारि प्रकार के भेदनि करिकैं रहित सो निःकांचित बंध कहिए। निकांचित बंध न घटै, न बधै, न उदीरना होइ, न संक्रमण होइ ताका नाम निकांचित बंध है। या भांति

दश प्रकार बंध आगम विषै कह्या है। इस दश प्रकार के बंध सेती अपनी आत्मा भिन्न जानना। आत्मा चैतन्य मई है, बन्ध जड है, पुद्गलीक है, तातैं जड पुद्गलनि तै आत्मा भिन्न जानना।

— तीन लोक के अकृत्रिम चैत्यालयों की संख्या —

सवैया तेईसा (मत्तगयन्द)

सात किरोर बहत्तर लाख,
पताल विषै जिनमन्दिर जानैं।
मध्य लोक में चारसौ ठावन,
व्यन्तर ज्योतिष के अधिकानै॥
लाख चौरासि हजार सतानव,
तेइस ऊरध लोक बखानें।
एकेक में प्रतिमा सत आठ,
नमैं तिहुजोग त्रिकाल सयानें॥३७॥

अब तीन लोकविषैं जे अकृत्रिम चैत्यालय हैं तिनकी संख्या का कथन करिए है।

चित्रा पृथ्वी कैं तलैं दश प्रकार के भवनवासी देव हैं। तिनके भवन हैं, तिन भवननि विषैं सात कोडि बहत्तरि लाख जिनेश्वरदेव के अकृत्रिम चैत्यालय हैं।

तहां असुरकुमारनि के ६४०००००, नागकुमारनि के ८४००००० सुपर्णकुमारनि के ७२०००००, पवनकुमारनि के ९६००००० और बाकी छह प्रकार के देवनि के छिहंतरिलाख २ चैत्यालय हैं ते सब ४५६००००० । या भांति भवनवासीनि विषैं जिनमंदिर जानने । और मध्यलोक विषैं च्यारिसै अठावन अकृत्रिम जिनमंदिर हैं । तहां पांच मेरू के ८०, अरु वक्षारपर्वतोपरि ८०, गजदंतनि पै बीस २०, कुलाचलनि परि ३०, एक सौ सत्तरि विजयार्द्धनि पैं, भोगभूमि के दश, इष्वाकार के च्यारि, मानुषोतर के च्यारि, नंदीश्वर द्वीपक के बावन, रुचक द्वीप के ४, कुंडलद्वीप के चार, ऐसे ४५८ जिन-मंदिर हैं । अरु व्यंतरदेव तथा ज्योतिषी देवनि के चैत्यालय असंख्याते हैं । तथापि व्यंतर देवनि के चैत्यालयनि तैं ज्योतिषीदेवनि के चैत्यालय असंख्यात गुणे हैं ।

सौधर्म स्वर्ग तैं लेइ सर्वार्थसिद्धि पर्यंत चौरासीलाख सित्यानवैं हजार तेईस अकृत्रिम जिनमंदिर हैं । तहां सौधर्म विषैं ३२ लाख, सनत्कुमाराविषैं २८ लाख, तीजे में १२ लाख, चौथेमें ८ लाख, पांचमे छठे स्वर्गविषैं ४ लाख, सातमें आठवेंमें ५० हजार, नोमें दशवेंमें ४० हजार, ग्यारहवें बारहवें में ६ हजार, तेरहवें चौदहवें पन्द्रहवें सौलहवें-में

७००, अधोग्रैवेयक में १११, मध्यग्रैवेयकमें १०७, ऊर्द्ध्व-ग्रैयेवकमें ९१, नवअनुदिशमें ९, पंचानुत्तर में पांच, ए उद्र्ध्वलोकविषैं चौरासी लाख सित्याणवैं हजार तेईस हैं। तिन एक एक चैत्यालयनि विषैं एक सौ आठ जिन

तीन लोक विषै अकृत्रिम चैत्यालय तिन प्रतिमा संख्या

अधोलोक	लाख	मध्यलोक	लाख	उर्ध्वलोक	लाख
असुरकुमार	६४	पंचमेरु	८०	सौधर्म	३२
नागकुमार	८४	वक्षार	८०	ईशान	२८
विद्युत्कुमार	७६	गजदंत	२०	सनत्कुमार	१२
सुपर्ण ,,	७२	कुलगिरि	३०	माहेन्द्र	८
अगनि ,,	७६	विजयार्ध	१७०	पांचमा छठा	४
पवनकुमार	९६	भोगभूमि	१०	लांतव कापिष्ठ	५० ह
मेघकुमार	७६	इष्वाकार	४	शुक्र महाशुक्र	४० ह
उदधिकुमार	७६	मानुषोत्तर	४	सतार सहस्रार	६ ह
द्वीप कुमार	७६	नंदीश्वर	५२	ते. चौ पं. सो.	७००
दिक्कुमार	७६	रूचक	४	अधो ग्रै वे.	१११
		कुंडल	४	मध्य ग्रै वे.	१०७
				उर्ध्व ग्रै वे.	९१
				नव अनुदिश	९
				पंचानुत्तर	५
जोड़	७७२०००००		४५८		८४९७०२३

प्रतिमा हैं। पंचवर्ण रत्नमई हैं। पद्मासन पांचसै धनुषी की सास्वती विराजमान हैं। ऐसी जिन प्रतिमांजी नैं त्रिकाल सम्यग्ज्ञान पूर्वक नमस्कार करू ं। अरु नौ सै पिच्यासी कोडि, तरेपन लाख, सत्ताईस हजार, नौ सै अडतालीस सब चैत्यालयनि की प्रतिमा का जोड है।

— तीन कम नव कोटि मुनियों की उत्कृष्ट संख्या —

॥ सवैया ॥

पांच किरोर तिराणवें लाख,
हजार अठानवें दोसै छ जाने।
जीव छठे गुणमें अध सातमें
ग्यारसै छयानवे चार ठिकाने॥
आठ नवै दस बारह चौदह,
सो उनतीस निवै परमाने।
तेरह आठ हि लाख हजार,
अठानवें पांचसै दोय बखानैं॥३८॥

छठा गुणस्थान तैं लेइकैं अजोगि गुणस्थान पर्यन्त नवगुणस्थाननि विषैं एकैकाल मुनि उत्कृष्ट पावै तौ तीन घाटि नव कोडि कहिए। अर्थात् आठ कोडि निन्याणवैं लाख, निन्याणवैं हजार, नौ सै सित्याणवैं मुनिराज पावैं,

इनते बधते नाहीं पावै । तिनका जुदा २ गुणस्थाननि विषैं कथन करै है ।

पांच कोडि तिराणवैं लाख अठ्याणवैं हजार दोय सै छह मुनिराज उत्कृष्टपनैं तैं छटे गुणस्थानवर्ती एकैकाल अढाईद्वीप विषैं पावै तौ ५९३९८२०६ इतनें पावै । इनतें सिवाय बधते नांहीं पावै। और छठा गुणस्थानविषैं जितने मुनिराज कहे हैं तिनतें आधे दोय कोड छिनवैं लाख निन्याणवैं हजार एक सौ तीन अप्रमत्त नाम सातमां गुणस्थानविषैं उत्कृष्ट एकैं काल इतने पावै, बधते नाहीं पावै । और उपशम श्रेणी के गुणस्थान च्यारि—आठमौं अपूर्वकरण, नवमौं अनिवृत्तिकरण, दशमौं सूक्ष्मसांपराय, ग्यारमां उपशांन्तमोह इन च्यारि गुणस्थाननि विषैं दोयसै निन्याणवैं दोयसै निन्याणवैं पावै। तब च्यारौं के ११९६ पावै। क्षपकश्रेणीके गुणस्थान पांच–आठमां अपूर्वकरणमें ५९८, नवमै अनिवृत्तिकरणमें ५९८, दशमाँ सूक्ष्मसांपराय में ५९८, बारहवां क्षीणमोहमें ५९८, चौदहमाँ अजोगीजिन में ५९८, इन क्षपकके पांच गुणस्थाननि विषैं पांचसै-अठ्याणवैं २ जीव पावै, और पांचौं इकट्ठे करिये तब दोय हजार नो सै निवै भए। इतने क्षपक श्रेणी के मुनिराज उत्कृष्ट पावै । और तेरमां सयोग केवली गुणस्थान तहां उत्कृष्ट आठ लाख अठ्यानवैं हजार पांच सै दोय

(८९८५०२) केवली भगवान उत्कृष्ट अढाई द्वीप विषैं एकै काल इतने पावैं ।

सर्वभाव लिंगी मुनि उत्कृष्ट संख्या

		प्रमत्त.	५९३९८२०६	
		अप्रमत्त	२९६९९१०३	
उपशम	२९९	अपूर्वकरण	५९८	क्षपक
,,	२९९	अनिवृत्ति०	५९८	क्षपक
,,	२९९	सूक्ष्मसां०	५९८	क्षपक
		उपशांतमोह	२९९	उपशम
		क्षीणमोह	२९८	क्षपक
		सयोग केवली	८९८५०२	
		अयोग केवली	५९८	क्षपक
		जोड	८९९९९९९७	

अढ़ाई द्वीप का ज्योतिष मंडल

(कवित्त ३१ मात्रा)

एक चन्द इक सूर्य अठासी,
ग्रह अट्ठाइस, नखत बखान ।

छ्यासठ सहस पचत्तर नवसै,
कोड़ाकोड़ी तारे जान ॥
इकसौ बत्तिस चंद इही विध,
ढाई द्वीप मध्य परवान ।
सब चैत्यालय प्रतिमा मंडित,
बंदन करौं जोरि जुगपान ॥ ३६ ॥

अढाई द्वीप मध्य ज्योतिषी देवनि की संख्या—चंद्रमा १ सूर्य १ ग्रह अठ्यासी कहे, नक्षत्र अठाईस कहे, अर एक चन्द्रमा संबन्धी तारे छ्यासठि हजार नवसै पिचेत्तरि कोडा-कोडी तारेनि के अकृत्रिम विमान हैं। ए सब एक चन्द्रमा का परिवार है। और अढाई द्वीप मध्य एकसौ बत्तीस चन्द्रमा हैं, और एकसौ बत्तीस ही सूर्य हैं। सो एक चंद्रमा का परिवार कहा। इस ही भांति सब एकसौ बत्तीसनिका जांनना।

ए सारे विमान अकृत्रिम चैत्यालय करि विराजमांन हैं तिन अकृत्रिम चैत्यालयनि नैं दोनों हाथ जोरि कैं मैं नमस्कार करौं हौं, पूजौं हौं, ध्यावौं हौं।

अढाई द्वीप संबन्धी चन्द्रमादि ज्योतिषिनि की संख्या

ज्यो० ५	चं०	सूर्य	ग्रह	नक्षत्र	प्रकीर्णक तारा
जम्बूद्वीप	२	२	१७६	५६	६६९७५,००००००००,००००००० ६६९७५,०००००००,०००००००
लवण	४	४	३५२	११२	२६७९००,०००००००,०००००००
धातुकीखंड	१२	१२	१०५६	३३६	८०३७००,०००००००,०००००००
कालोदधि	४२	४२	३६९६	११७६	२८१२९५०,०००००००,०००००००
पुष्करार्द्ध	७२	७२	६३३६	२०१६	४८२२२००,०००००००,०००००००
जोड	१३२	१३२	११६१६	३६९६	८८४०७००,०००००००,०००००००

— आयु कर्म के बंध के नव भेद —

आउ अंत पैंसठि सै इकसठि,
इकइस सै सित्यासी जानि ।
सात सतक उनतीस दोय सै,
तेतालिस इक्यासी मानि ॥
सत्ताईस और नौ तीनों,
एक आठवां भेद बखानि ॥
नौमीं अंतकाल में बांधै,
अगलि गति की आउ निदान ॥४०॥

अर्थ—अब आयु कर्म का बंध त्रिभाग विषैं परै है अर देव और नारकीनि कै जब आयु विषैं छह महीनें बाकी रहै तब त्रिभाग परै है। और भोगभूमियां मनुष्य तिर्यंच जीवनि कै आयु विषैं नव महीने बाकी रहै तब त्रिभाग करै है। और कर्मभूमि के जीव एकेंद्री आदि पंचेंद्री पर्यंत सारी आयु का त्रिभाग करै।

त्रिभंगी क्या कहिए, आयु के तीन भाग करैं जब दोय भाग व्यतीत होय तीसरे भाग के आदि अंतर्मुहूर्त माहिं बंध पडै, अरु नहीं परै तौ फेरि परै इस भांति नौ बार त्रिभंगी आयु बांधै सो त्रिभंगी कहिए ताका वर्णन करिए है—

जैसें प्रथम आयु के पैंसठि सै इकसठि भाग करै। तिसके तिहाई इकईस सै सित्यासी रहै, बंध का अवसर होय तहाँ नांही बंधै तोतिनकै त्रिभाग करैं। तिनके तिहाई सातसै उनतीस रहे। फेरि तीन भाग करै। तिनके तिहाई दोयसै तेतालीस रहे। तिनके तिहाई इक्यासी रहे। फे.र तिनके तिहाई सत्ताइस रहे। फेरि तिनके तिहाई नव रहै। फेरि तिनके तिहाई तीन रहे। फेरि आठमी बेर तीन का तिहाई एक रह्या। इस भांति आठ वार त्रिभाग करै। नवमी बार अंत समैं अवश्य निकांचित अगलो गति की आयुष्य बांधै। त्रिभाग करिकैं बांधै यह नियम है। और इस कर्म का त्रिभाग बिनां बंध नाहीं।

पर भव का आयु बंध अवसर त्रिभाग ८ अंतका १

आ०	बाकी	व्यतीत
प्र०	२१८७	४३७४
द्वि०	७२९	१४५८
तृ०	२४३	४८६
च०	८१	१६२
पां०	२७	५४
ष०	९	१८
स०	३	६
अ०	१	२
न०	अंतर्मुहूर्त्त	अवश्य बंधै
जोड		सर्व ६५६१

सत्तावन जीव समासः-

छप्पय

भू जल पावक वायु,
नित्य इतर साधारन ।
सूक्षम बादर करत,
होत द्वादश उच्चारन ॥
सप्रतिष्ठ अप्रतिष्ठ,
मिलित चौदह परवानौं ।
परज अपर्ज अलब्ध,
गुनत ब्यालीस बखानौं ॥
गुनि वे ते चौइंद्री त्रिविध,
सर्व एक पंचास भन ।
मनरहित सहित तिहुँ भेदसूं,
सत्तावन धरि दया मन ॥ ४१ ॥

जहां जीव पाईए सो जीव समास कहिए । सो प्रथम सत्तावन जीव समास समुच्चय कथन करिए है—पृथिविकाय, जलकाय, अगनिकाय, पवनकाय । नित्यनिगोद, इतरनिगोद ए दोय साधारन वनस्पति हैं । इन छह के सूक्ष्म लीए

और इनहीं छहौं के वादर लीजे, ए सब मिलिकें बारह भए। सो छह सूक्ष्म छह बादर लीजे इस भांति बारहों का उच्चार करिए, गिनती करिए। जो जीव त्रस पर्याय पाय बहुरि निगोद विषैं जाइ सो इतरनिगोद कहिए। जो जीव त्रसपनां कदे धरचा नांही सो नित्य निगोदिया कहिए।

जिस जीवनैं आपकै जोग्य पर्याप्ती पूरी कीनी सो पर्याप्तो कहिए। और जिस जीवनैं स्व-योग्य पर्याप्त करनी मांडी, जब तांई पूरी न होइ तब तांइ अपर्याप्तो कहिए। इसही का नाम निर्वृत्यपर्याप्ता भी कहिए है। और जिस जीवनैं पर्याप्ता का प्रारंभ तौ कीया परन्तु पूरा एक भी न करै सौ अलब्ध पर्याप्ता कहिए। इन पर्याप्ता, अपर्याप्ता, अलब्ध पर्याप्ता, तीनों का अर्थ विशेष करिकैं गोम्मटसारजी तैं देखि लेना।

जिस जीव कै आश्रय बहुत जीव होय सो सप्रतिष्ठ। जिस जीव के आश्रय और जीव न होय आप अकेला ही होय सो अप्रतिष्ठ। सो सप्रतिष्ठ अर अप्रतिष्ठ ए दोऊ मिलि करिकैं चौदह भेद एकेंद्री के जीव समास भए। ए चौदह पर्याप्ता, ए चौदह अपर्याप्ता, अर एही चौदह अलब्ध पर्याप्ता। इन तीनौंनै मिलाइ कै बीयालीस भेद भए। ए सब बीयालीस जीव समास एकेंद्री

सत्तावन जीवसमासनि का यंत्र

भेद सं०	स्थावर															त्रस							
	पृथ्वी काय		जल काय		पवन का		अग्निका		नित्यनिगो		चतु० नि		सप्रतिष्ठ	अप्रतिष्ठ	जोड़	बेइंद्रिय	तेइंद्रिय	चौइंद्रिय	जोड़	असंज्ञी	संज्ञी	जोड़	जोड़
	सूक्ष्म	बादर	सू०	बा	सू०	बा	सू०	बा	सू०	बा	सू०	बा											
पर्याप्त	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	[illegible]	१	१४	१	१	१	३	१	१	२	१९
निर्वृत्यप०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१४	१	१	१	३	१	१	२	१९
अलब्धप०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१४	१	१	१	३	१	१	२	१९
समस्त	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	१४	३	३	३	६	३	३	६	५७

के भए। इनहीं तैं गुनैं वेंइद्री तीन प्रकार, तेइंद्री तीन प्रकार चौइंद्री तीन प्रकार, पर्याप्त, अपर्याप्त, अलब्ध पर्याप्त ए तीन प्रकार जानने। सर्व बीयालीस एकेंद्री के भेद और विकलत्रय के नव भेद सब मिलिकै इक्यावन जीव समास भए। अरु पंचेंद्री के दोय भेद—एक संज्ञी दूसरा असंज्ञी, सो संज्ञी पर्याप्तो, अपर्याप्तो, अलब्ध पर्याप्तो और असंज्ञी भी पर्याप्तो, अपर्याप्तो, अलब्धपर्याप्तो ए छह भेद पंचेंद्री के भए।

ए सब मिलि करिकै सत्तावन जीव समास भए। इन परि दया भाव करनां।

—ःअट्ठानवैं जीव समासः—

सवैया इकतीसा

इक्यावन थान जान थावर विकलत्रय के,
गर्भज दोय तीन सन्मूर्छन गाए हैं।
पांच सैनी ओ असैनी जल थल नभचारी,
भोगभूमि भूचर खेचर दो दो पाए हैं॥
दो दो नारकी सुदेव नौ विध मनुष्य वेत्र
भोगभू कुभोगभू मलेच्छभू बताए हैं॥
दोय दोय दोय तीनि आरजमें राजत हैं।
अठानवे दया करैं साधु ते कहाए हैं॥४२॥

अब इसतैं आगैं अट्याणवैं जीव समास का कथन है। बीयालीस पांचौं थावर के और नौ विकलत्रय के इक्यावन जीव समास थावर विकलत्रय के जानने। ऊपरले कवित्त विषैं कहे हैं सो देखि लेना और इक्यावन विषैं बाकी और मिलाइ अट्याणवैं जीव समास कहै हैं।

दोय भेद एक पर्याप्ता दूसरा अपर्याप्ता। गर्भज विषैं अलब्ध पर्याप्ता होता नांही तातैं दोय भेद रहे।

और सम्मूर्छननि विषै तीनौं भेद हैं पर्याप्त, अपर्याप्त अलब्धपर्याप्त ए तीनौं भेद हैं। दोय गर्भज, तीन सन्मूर्छन ए पांचौं सैनी भी होय हैं। और ए ही पांचौं असैनी भी होय हैं। ए दौन्यौं ठौर के दश भेद भए। मच्छ आदि जलचारी दश, गो आदि थलचारी दश भेद. आकाशविषै गमन करै, उडै सो नभचर तिनके भी भेद दश। अर भोगभूमिविषै जलचारी जीव नाहीं होइ और जीव होइ सो भी गर्भज होइ तातैं दोय भेद। भूचर पर्याप्ता अपर्याप्ता ए दोय भेद। आकाशगामी पर्याप्ता अपर्याप्ता ए दोय भेद। ए सब चौतीस जीवसमास पंचेंद्री तिर्यंचके भए। कर्मभूमिके तीस, भोगभूमिके च्यारि, दोय भेद नारकीनिके, एक अपर्याप्त, एक पर्याप्त, और दोय भैद देवके एक पर्याप्त अपर्याप्त। देव नारकीनिभोगभूमियांनि विषैं अलब्ध पर्याप्ता होता नांही। और मनुष्य नव प्रकार है। तिसका विशेष आगैं

कहिए हैं। भोगभूमि का मनुष्य पर्याप्त अपर्याप्त, कुभोगभूमिया मनुष्य पर्याप्त अपर्याप्त, म्लेच्छखंडनि के मनुष्य पर्याप्त अपर्याप्त इस भांति छह भेद कहे। अर्थात् भोगभूमि के भेद दोय, कुभोगभूमि के भेद दोय, म्लेच्छभूमि के भेद दोय। और आर्यखंड विषैं मनुष्यनि के तीन भेद हैं पर्याप्त, अपर्याप्त, अलब्ध पर्याप्त ए मनुष्यनि के नौ भेद जानने। बीयालीस भेद थावर के, नौ विकलत्रय के, चौंतीस पंचेंद्री तिर्यंच के, दोय भेद नारकीनि के, दोय भेद देवनिके, नौभेद मनुष्यनिके। ए सब अठ्याणवैं जीव समास भए। इन परि दयाभाव करै सो ही साधक कहिए दयावान कहावै है।

— साढे सैंतीस हजार प्रमादों के भेद —

छप्पय

विकथारूप पचीस और पनवीस कषायनि।
गुनतैं छस्सै सवा, पांच इंद्री मनसौं गुनि॥
पौनैं च्यारि हजार, पांच निद्रा सौं गुनिए।
सहस पौन उनईस, नेह अरु मोह सूं सुनिए॥
साढे सैंतीस हजार सब, भेद प्रमाद प्रमानिए।
छट्ठे गुनथानक लौं कहे, त्याग आप थिर ठांनिए।४३

पहले गुणस्थान तैं लेकै छठे प्रमत्त गुणस्थान ताई प्रमाद के साढे सैंतीस हजार भेद हैं। सो तिन प्रमादौंका कथन विशेषरूप नष्टोदिष्ट करि जंत्र बांधि गोम्मटसारजी आदि विषैं जहां छठा गुणस्थान का कथन कीया है तहा प्रमादौं का कथन कहा है सो देखि लेना। इहाँ तौ तिनका नाममात्र कथन गिनती करै है। ते प्रमाद के भेद सारे साढा सैंतीस हजार हैं। विकथा पचीस हैं सो इन पचीस विकथानिकूं पचीस कषायनितैं गुणें सवा छस्सै भेद भए। ए सवा छहसै पाचौं इंद्री अर छठे मनसौं गुनिये तब पौणा च्यारि हजार भेद भए। ए पौंना च्यारि हजार पाँच निद्रानि सौं गुनिए तब पौणा उगणीस हजार भेद भए। ते पौणा उगणीस हजार भेद स्नेह मोह इन दोऊनि सौं गुणिए, तब साढा सैंतीस हजार प्रमाद के भेद भए। साढै सैंतीस हजार है सो इस भांति इनका विशेष देखि लेना। सो ए प्रमाद छठे गुणस्थान ताई पाईए हैं। सो छठा गुणस्थानका नाम प्रमत्त है। तातैं तहाँ ताई प्रमाद पाईए है, आगै अंशमात्र भी प्रमाद न पाईए है। असे प्रमादनिनैं त्यागि कैं अपनी आत्मा विषैं स्थिरीभूत होय तातैं संसार का भ्रमण मिटै, अरु मोक्ष का सुख पाईए।

महामेरुगिरि कूं ग्यारासै इकईस जोजन छोडिकै

अढाईद्वीप मध्य जितना ज्योतिष मंडल है सो धूके तारौं विना अनादि कालते मेरूके चौगिरद भ्रमे हैं। तिनकै उदय भूपरि तलै ते व्यौरा कथन। अंतर सबका ज्योतिष मंडल एक सौ दश योजन की मोटाई मांहि है ताका व्योरा ॥

— ज्योतिष मंडल की ऊँचाई —

छप्पय

सात सतक अरु नवै,
तासुपर तारे राजैं।
ता ऊपर दस भान,
असी पर चन्द्र विराजैं॥
च्यारि नखत बुध च्यारि,
तीनि पर सुक्र बनायौ।
तीनि गुरू कुज तीनि,
तीनि पर सनि ठहरायौ॥
इमि नवसै जोजन भूमि तैं,
जोतिष चक्र बखानिए।
इकसौ दस जोजन गगन मैं,
फैलि रह्यौ परमानिए ॥४४॥

साढा सैंतीस हजार प्रमाद के भेदनि का

१	स्त्री कथा	०	कौ क्रोध	०	स्पर्शन	०	निद्रा	०	स्नेह
२	भोजन ,,	२५	अ० मान	६२५	रसन	३७५०	निद्रानि	१८७५०	मोह
३	राज ,,	५०	अ० माया	१२५०	घ्राण	७५००	प्रचला		
४	देश ,,	७५	अ० लोभ	१८७५	चक्षु	११२५०	प्रचलाप्र		
५	चोर ,,	१००	अप्र० माया	२५००	श्रोत्र	१५०००	स्त्यानगृद्धि		
६	वरकथा	१२५	अप्र० मान	३१२५	मन				
७	परपाखंड	१५०	अप्र० माया						
८	देश	१७५	अप्र० लोभ						
६	भाषा	२००	प्र० क्रोध						
१०	गुणबंध	२२५	प्र० मान						
११	देवी	२५०	प्र० माया						
१२	निष्ठुर	२७५	प्र० लोभ						
१३	परपैशून्य	३००	सं० क्रोध						
१४	कन्दर्प	३२५	सं० मान						

जुदा जुदा ध्यावने का विधान का यंत्र गूढ

१५ देशकालानु०	३५० सं० माया
१६ भंड	३७५ लोभ
१७ मूर्ख	४०० हास्य
१८ आत्म प्रशंसा	४२५ रति
१९ परपरिवाद	४५० अरति
२० परजुगुप्सा	४७५ शोक
२१ परपीडा	५०० भय
२२ कलह	५२५ जुगुप्सा
२३ परिग्रह	५५० नपुंसक
२४ कृष्याद्यारंभ	५७५ स्त्री वेद
२५ संगीत वंध	६०० पु० वेद

द्वितीय अपेक्षा प्रमाद के भेद साढ़ा सैंतीस

०	स्त्री	०	अ क्रोध	०	स्पर्शन	०	निद्रा	१	स्नेह
१५००	अर्थ	६०	अ मान	१०	रसन	२	निद्रानिद्रा	२	मोह
३०००	भोजन	१२०	अ माया	२०	घ्राण	४	प्रचला		
४५००	राज	१८०	अ लोभ	३०	चक्षु	६	प्र० प्र०		
६०००	चोर	२४०	अप्र.क्रोध	४०	श्रोत्र	८	स्त्यानु०		
७५००	वैर	३००	अप्र मान	५०	मन				
९०००	परपाखंड	३६०	अप्र.माया						
१०५००	देश	४२०	अप्र.लोभ						
१२०००	भाषा	४८०	प्र क्रोध						
१३५००	गुण बंध	५४०	प्र मान						
१५०००	देवी	६००	प्र माया						
१६५००	निष्ठुर	६६०	प्र लोभ						
१८०००	परपैशून्य	७२०	सं क्रोध						
१९५००	कंदर्प	७८०	सं मान						

हजार तिंनके न्यावने का गूढ यंत्र

२१०००	देशकालानुचित	८४०	सं मायः
२२५००	भंड	९००	संलोभ
२४०००	मूर्ख	९६०	हास्य
२५५००	आत्मप्रशंसा	१०२०	रति
२७०००	परपरिवाद	१०८०	अरति
२८५००	परजुगुप्सा	११४०	शोक
३००००	परपीडा	१२००	भय
३१५००	कलह	१२६०	जुगुप्सा
३३०००	परिग्रह	१३२०	न. वेद
३४५००	कृष्यारंभ	१३८०	स्त्री वेद
३६०००	संगीतवंध	१४४०	पुरुष वेद

भद्रसाल वनतैं सात सै निवै योजन ऊपरि जाइ कैं तारैनि का पटल है। ते तारैं मेरू तैं ग्यारासै इकईस योजन छोडिकैं धौरै धौरै फिरै हैं, भ्रमै हैं। तिन तारानि तैं दश योजन ऊपरि सूर्य हैं। तिस सूर्य तैं अस्सी योजन ऊपरि चंद्रमानि का पटल है। तिस चंद्रमा तैं च्यारि योजन ऊपरि नक्षत्रों के विमान विराजै हैं। नक्षत्रनितैं च्यारि योजन ऊपरि बुद्ध का विमान है। तिस बुद्ध के विमाननि तैं तीन योजन ऊपरि शुक्र का विमान विराजै है। तिस शुक्र के विमान तैं तीन योजन ऊपरि गुरू कहिए बृहस्पति का विमान विराजै है।

तिस बृहस्पति का विमान तैं तीन योजन ऊपरि कुज कहिएमांगल का विमान विराजै है। तिस मंगल के विमान तैं ऊपरि तीन योजन जाइ शनैश्चर के विमान विराजै हैं। या भांति जोड़ी हुई सब नौसे योजन की ऊँचाई मांहि भया। यह कथन त्रिलोकसार वा लोक प्रज्ञप्ति विषैं देखि लेनां, उहाँ विशेष कहा है। सो जमीं तैं सात सै निवै योजन तांई एक शून्य आकास ही है। ता ऊपरि एक सौ दश योजन की मोटाई विषैं ज्योतिष मंडल फैलि रह्या है। सो अनादि का सास्वता है, अपने ही आधार है, यह जानना।

ज्योतिष चक्र ऊँचाई

योजन प्रमाण ११०

१	तारा	७९०
२	सूर्य	८००
३	चन्द्रमा	८८०
४	नक्षत्र	८८४
५	बुद्ध	८८८
६	शुक्र	८९१
७	बृहस्पति	८९४
८	मंगल	८९७
९	शनिश्चर	९००

—— गुणस्थानों का गमनागमन ——

छप्पय

मिथ्या मारग च्यारि, तीनि चउ पांच सात भनि।
दुतिय एक मिथ्यात, तृतिय चौथा पहला गनि॥
अव्रतमारग पांच, तीनि दो एक सात पन।
पंचम पंच सुसात, चार तिय दोय एक भन॥
छट्ठे षट इक पंचम अधिक,
सात आठ नव दस सुनौ।
तिय अध ऊरध चौथे मरन,
ग्यार बार बिन दो मुनौ॥ ५५॥

अब मिथ्यात्वगुण स्थान तैं लेइ उपशम मोह ग्यारमां गुणस्थान तांई ग्यारै गुणस्थान उपशमी के हैं सो किहि मारग आवै जावै तिसका समुच्चय कथन है। मिथ्यात्व गुण-स्थान के मार्ग च्यारि हैं ते कौन कौन ? कोई जीव मिथ्यात्व तैं निकसि तीसरे मिश्र गुणस्थान जाइ। कोई जीव मिथ्या-त्व तैं निकसि चौथे अव्रत गुणस्थान जाइ। कोई जीव मिथ्यात्व तैं निकसि पांचवें देशव्रत गुणस्थान जाइ। कई जीव मिथ्यात्व तैं निकसि सातवें अप्रमत्त गुणस्थान जाइ। ए मिथ्यात्व मार्ग जानिये।

दूसरा सासादन गुणस्थान का एक मार्ग है। सासादन तैं पडे तब एक मिथ्यात्व गुणस्थान विषैं जाइ, और ठौर नांही जाय, यह नियम है। तीसरा मिश्र गुणस्थान का दोय मार्ग है। मिश्र तैं ऊपरि चढै तो चौथे गुणस्थान जाइ, और मिश्र तैं तलै पडे तौ मिथ्यात्व गुणस्थान विषै आवै, ए दोय मार्ग मिश्र गुणस्थान के हैं। चौथा अव्रत गुणस्थान का पांच मार्ग हैं। चौथे गुणस्थान तैं तलै पडै तौ तीसरे गुणस्थान आवै अथवा दूसरे गुणस्थान आवै वा पहले मिथ्यात्व गुणस्थान विषै आवै, ए तीन तौ पडिवे के हैं, अर चौथे तैं ऊपरि चढैं तो सातमैं गुणस्थान जाइ, वा पांचमें देशव्रत गुणस्थान जाइ, ए दोय चढिवे के हैं। ऐसे अव्रत के ५ मार्ग जानने।

पांचमा देशव्रत गुणस्थान के पांच मार्ग हैं। पांचमें गुणस्थान तै ऊपरि चढै तौ सातमें गुणस्थान अप्रमत्तविषैं जाइ। और पांचमें तैं तलै पडै तो चौथे गुणस्थान आवै वा तीसरे गुणस्थान आवै वा दूसरे गुणस्थान आवै वा पहिले गुणस्थान आवै। ए च्यारि पडिवे के हैं। ऐसे पांचमां देशव्रत गुणस्थान के पांच मार्ग जानने। छठा प्रमत्त गुणस्थान का छह मार्ग हैं। छठे तै ऊपरि चढै तो सातमें गुणस्थान जाइ और पडै तौ छठे तैं पांचमें गुणस्थान जाइ, वा चौथे गुणस्थान जाइ वा तीसरैं गुणस्थान जाइ वा दूसरैं गुणस्थान जाइ वा मिथ्यात्व पहले गुणस्थान विषैं जाइ, ए पडिवे के पांच। ऐसे छठे के छह मार्ग जानने। सातमां अप्रमत्त गुणस्थान, आठमा अपूर्वकरणगुणस्थान, नवमां अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, दशमां सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान ए च्यारि गुणस्थान उपशम श्रेणी के हैं। तिनका विशेष कथन है सो अब सुनौं। सांतमां आठमा नवमां दशमां इन च्यारौं गुणस्थान की तीन तीन चाल है। तलैं पडै तो एक एक गुणस्थान अनुक्रम तैं उतरै, और ऊपरि चढै तो एक एक गुणस्थान अनुक्रम तैं चढै और जो मरण करै तो चौथे गुणस्थान के परिणाम हो जाइ, तब अव्रत रूप कार्माण निकसि देवगति विषैं ले जाइ यह नियम है। ए तीन

उपशम सम्यक्त्वी गुणस्थाननि विषैं पडबो, चढबो वा मरण में पतन का यंत्र

गुण	मि	सा	मिश्र		अव्रत		देश		प्रमत्त		अप्रम		अपूर्वक			अनिवृत्ति			सूक्ष्म			उपशांत		
स्थान	चढवो	पडवा	च	प	च	प	च	प	च	प	च	प	च	प	मरण	च	प	मरण	च	प	मरण	च	प	मरण
मि	०	.१	०	१	०	१	०	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
सा	०	०	०	०	०	१	०	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मि	१	०	०	०	०	१	०	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अ	१	०	१	०	०	०	०	१	०	१	०	म१	०	०	१	०	०	१	०	०	१	०	०	१
दे	१	०	०	०	१	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प्र	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अ	१	०	०	०	१	०	१	०	१	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अ	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०
अ	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०
सू	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	१	१	०
उ	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०
जो	४	१	१	१	२	३	१	४	१	५	१	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	१

तीन मार्ग जानने । और ग्यारमां उपशांत कषाय गुणस्थान तिसके मार्ग दोय, पडै तौ दशमें सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान विषैं आवै और मरै तौ चौथे गुणस्थान दे व अव्रती होइ । यह उपशम की दोय चाल कही, इहाँ बाहिर नहीं जाय । यह नियम है ।

चौबीस तीर्थंकरों के शरीर का वर्ण

छप्पय

पहुपदंत प्रभुचंद, चंद सम सेत विराजै ।
पारसनाथ सुपास, हरित पन्नामय छाजै ॥
वासुपूज्य अरु पदम, रकत माणिक दुति सोहै ।
मुनिसुव्रत अरु नेमि, स्याम सुन्दर मन मोहै ॥
बाकी सोलै कंचन वरन, यह विवहार शरीर थुत ।
निहचै अरूप चेतन विमल, दरस ज्ञान चरित्त जुत ४६

अब चौबीस तीर्थंकरों के व्यवहार के शरीरों का वर्ण विशेष कहिए है । पुष्पदंत तीर्थंकर नवमां, चंद्रप्रभु तीर्थंकर आठमां, इन दोनों के शरीर का वर्ण चंद्रमा समान श्वेत उज्ज्वल वर्ण है । पारसनाथ तेवीसमां तीर्थंकर, सुपारसनाथ सातमां तीर्थंकर इन दोन्यां के शरीर का वर्ण हरित पन्ना के रंग समान सोहे है । वासुपूज्य बारमां तीर्थंकर अरु पद्मप्रभु छठा तीर्थंकर इन दोन्यों के

शरीर का वर्ण पद्मरागमणि समान लाल वर्ण सोहै है। मुनिसुव्रतनाथ बीसमां तीर्थंकर अरु नेमिनाथ बाईसमां तीर्थंकर इन दोन्यों के शरीर का इन्द्रनीलमणि समान स्याम वर्ण है। अतिशोभायमान है।

बाकी सोलह तीर्थंकर वृषभदेव, अजितनाथ, संभवनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ, शीतलनाथ, श्रेयांसनाथ, विमलनाथ, अनंतनाथ, धर्मनाथ, शान्तिनाथ, कुंथनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ, नमिनाथ, वीरनाथ इन सोलहों के शरीर का वर्ण सोला वानी के सुवर्ण समान है। यह व्यवहारिक शरीर का वर्णन कीया स्तुति करी। निश्चय नयकरिके आत्म स्वरूपी है, चैतन्यमयी है, पंच वर्णनितें रहित अरूपी अतिनिर्मल है। कर्ममल ते रहित सुद्ध है। बहुरि कैसा है आत्मा, क्षायिकदर्शन, क्षायिकज्ञान, स्वरूपाचरण, क्षायिकचारित्र इन करि संजुक्त है, निश्चय रत्नत्रय करि विराजमान है।

—ःगोम्मटसार का आदि नमस्कार अष्टक सूचकः—

छप्पय

वंदों नेमिजिनंद, नमों चौवीस जिनेसुर।
महावीर वंदामि, वंदि सब सिद्ध महेसुर॥
सुद्ध जीव प्रणमामि, पंचपद प्रणमों सुख अति।
गोमटसार नमामि, नेमिचंद आचारज निति॥

जिन सिद्ध सुद्ध अकलंक वर,
गुण मणिभूषण उदयधर।
कहूँ बीस परूपन भावसौं,
यह मंगल सब विघनहर ॥ ४७ ॥

अर्थ—आगैं गोम्मटसारजी की आदि विषैं नमस्कार कीया है, सो आठ वार कीया है। तिन आठौं का नाम कथन है। नेमिनाथ वाईसमां तीर्थंकर नैं नमस्कार मेरा होऊ। चौबीस तीर्थंकर नैं मेरा नमस्कार होऊ। महावीर स्वामी नैं मेरा नमस्कार है। सब अनंते सिद्धौं ने मेरा नमस्कार है। ज्ञानमयी शुद्ध जीवनैं मेरा नमस्कार है। पंचपरमेष्ठीनिनैं मेरा नमस्कार है। ए महासुख दाई है। गोमटसार ग्रंथ नैं मेरा नमस्कार हैं। नेमिचंद आचार्य नै मेरा नमस्कार है। अह आठ ठौर नमस्कार है।

जिन है, सुद्ध है, सिद्ध है, अकलंक है, वर विशिष्ट है। ए सब विशेषण आठौं ठौर मिलाय लेनें और गुन, जे गुन तेही भए रतनमयी आभूषण, तिनकरि कै देदीप्यमान हैं। इन आठौं ने नमस्कार करिकै बीस प्ररूपणा नै नेमिचन्द्र आचार्य सिद्धांत चक्रवर्ति नै भावनि सौं कही है। इन आठौं ठौर नमस्कार महामंगलकारी है, विघनों का हरने वाला है।

—ःषट्विधि मंगलः—

नमहुँ नाम अरिहंत, थुनहु जिनबिंब कलिजहर।
परमौदारिक दिव्य बिंब, निर्वाण अवनिपर॥
कहौं कल्यानककाल, भजहु केवल गुणज्ञायक।
यह षटविधि निच्छेप, महामंगल वरदायक॥
मंगल दुभेद मल जाय गल,
मंगल सुख लहै जीयरा।
यह आदि मध्य परजंतलौं,
मंगल राखौ हीयरा॥ ४८॥

मं कहिए पाप ताहि गालै नाश करै सो मंगल कहिए। वा मंग कहिए सुख ताहि देवै सो मंगल कहिए—कल्यान। सो छह प्रकार है। तिन मंगलनि का अर्थ विशेष रूप त्रिलोक प्रज्ञप्ति के आदि विषैं कहा है सो तहां देखि लेना, इहाँ नाममात्र कहा है।

प्रथम अर्हंत देव का नाम लेना सो यह महामंगल है, ऐसे अर्हंतदेवकूं मेरा नमस्कार। मैं नमस्कार करूं हूँ, पूजौं हौं, ध्याऊं हौं, बंदौं हौं। बहुरि जिनेश्वर देव की प्रतिमांनि की भक्ति करौंहौं। कैसी है प्रतिमा, कलिल जो पाप ताकी हरनहारी है, नाश करनहारी है, महामंगल

कारी है। बहुरि अर्हंतदेव का परमौदारिक शरीर उज्ज्वल महानिर्मल समवशरन वा गंधकुटी विषैं विराजमान सो महामंगलकारी है।

जहां तैं केवली भगवान निर्वाण गए सो पृथ्वी निर्वाण भूमि कैलाश, सम्मेदाचल, चंपापुर, पावापुर, गिरनार गिरि इत्यादि महामंगलकारी हैं। जिनेन्द्र भगवान के पाचौं गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, ए कल्याणकाल महामंगल कारी हैं। केवलज्ञाननैं स्मरण करौं। सो केवल ज्ञान सब लोक अलोक षटद्रव्यनिके समस्त गुण पर्यायनि का जानन हारा है, सो महामंगलकारी है। यह छह प्रकार मंगल है, तिसकी स्थापनां प्रथम कीजे। यह महामंगल की करनहारी है, महावरदाई है, महाविघन को हरनहारी है।

मं कहिए मैल सो दोय प्रकार है, एक अंतरका एक बाहरि का। असे दोय प्रकार मैल सब गलि जाय। बहुरि मंगल कहिए कल्याण-सुख, सो जीव पावै महासुखी होइ। यह छह प्रकार मंगल ग्रन्थ की आदि, मध्य अर अंत विषैं राखों, छह प्रकारका मंगल हिरदाविषै राखौ जातै निर्विघ्न कारिज होई, विघन कोई पडे नांहीं, ग्रंथ की समाप्ति सुख सो होइ। सो मंगल धारना जानना।

—पांच प्ररूपणा चौदह मार्गणामें गर्भित हैं तिनका कथन—

सवैया इकतीसा

जीव समास परजापत मन वच स्वास,
इंद्रीकायमाहिं आव गतिमैं बखानिए।
कायबल जोगमाहिं इंद्री पांच ग्यानमांहि,
आहार परिग्रह ए लोभमैं प्रवानिए॥
क्रोध मांहि भय अरु वेदमांहि मैथुन है,
ग्यान ग्यानमांहि दर्शदर्शमांहि जानिए।
पांचों परूपना ए चौदह में गर्भित हैं,
गुनथान मारगना दोय भेद मानिए॥ ४६॥

अर्थ—जीव समास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, उपयोग ए पाँच प्ररूपणा चौदह मार्गणानि के मध्य गर्भित भई हैं। ते किस भांति गर्भित भई हैं तिनका नाम मात्र कथन है। और इनका विशेप कथन गोमटसार तैं जानना। जीवसमास सर्व १४, पर्यापत ६, मनप्रान, वचन प्रान, सासोस्वास, इंद्रिय मार्गणा विषै या सर्वकायमार्गणा विषै गर्भित हैं। आयु गति विषै गर्भित है, गतिमार्गणा विषै आयु आ गई और काय प्राण जोग मार्गणा विषै गर्भित भई और पाचों इंद्री प्राण गर्भित हैं। आहारक संज्ञा और परिग्रह संज्ञा ए

दोन्यूं संज्ञा लोभ कषाय विषै गर्भित भई है सो जानना। भय संज्ञा क्रोध विषै गर्भित भई है। और मैथुनसंज्ञा वेद मार्गणा विषै गर्भित भई है। ज्ञानोपयोग ज्ञानमार्गणा विषैं गर्भित भया है। दर्शनोपयोग दर्शनमार्गणा विषैं गर्भित भया है। ए पांचों प्ररूपणा चौदह मार्गणानि विषैं गर्भित देखि लेनां। इनका विशेष गोमटसारजी विषैं बहुत कहा है सो वहां तैं जांनि लेना और सामान्य पणै ए भेद दोय हैं एक गुणस्थान, दूजा मार्गणास्थान। ए दोय भेद जानने।

— बारह प्रसिद्ध पुरुषों के नाम —

छप्पय

बन्दौं पारसनाथ, नमौं बल रामचन्द वर।
कामदेव हनुमन्त, प्रकट रावन मानी नर।
दानेस्वर श्रेयांस, शीलमैं सीता नामी।
तप बाहूबलि नाम, भाव भरतेस्वर स्वामी॥
जगमहादेवहै रुद्रपद, कृष्णनाम हरि जांनिए।
'द्यानत' कुलकरमैंनाभिनृप, भीमबलीभुजमांनिए ५०

अब बारह पुरुष जगतविषैं नामी भए प्रसिद्ध भए तिनके नाम—चौबीस तीर्थङ्करनि विषैं पार्श्वनाथ स्वामी प्रसिद्ध भए। नौ बलभद्रनिविषैं आठमां रामचन्द्र नामी

भये विख्यात भये और चौबीस कामदेवनि विषैं हनुमान नामी भए विख्यात भए। मानी पुरुषनि विषैं आठवां प्रतिनारायण रावण विख्यात भया, प्रसिद्ध भया। दातारनिविषैं हस्तिनागपुर का राजा श्रेयांस विख्यात भया प्रसिद्ध भया। शीलव्रत के पालिवे विषैं पतिव्रतानि विषैं मुख्य सीता सती नामी भई, प्रसिद्ध भई। तप विषैं बाहुवलि नामी भए, प्रसिद्ध भए, वर्ष पर्यन्त कायोत्सर्ग एकासन खरें रहे। भावनि की निर्मलता विषैं आदीश्वर के पुत्र भरत-चक्रवर्ति विख्यात भए, जिननें अन्तमुहूर्त कालविषैं केवल-ज्ञान उपजाया। ग्यारहवां महादेव नामां रुद्र जगत विषैं विख्यात भया, पार्वती कंथ प्रसिद्ध भया। नौ नारायण विषैं कृष्णनामां नवमां नारायण विख्यात भया प्रसिद्ध भया। द्यानतराय कहै हैं अब चौदह कुलकरनि विषैं नाभिराज विख्यात भया, यह चौदहवां कुलकर है। जलके फौरनें विषैं भीमवली भुजबल का धारी विख्यात भया।

— सम्पूर्ण द्वीप समुद्रों के चन्द्रमाओं की गिनती —

॥ सवैया इकतीसा ॥

जंबूद्वीप दोय लवणांबुधि मैं च्यारि चंद,
धातखंड वारै कालोदधि वियालीस हैं।

पुष्कर के भाग दोय ईधर बहत्तरि हैं,
ऊधै बारै सै चौसठि भाखे जगदीस हैं।
पुष्कर जलधिसार दो सत ग्यारै हजार,
आगें आगें चौगुने बखाने जगदीस हैं।
जेते लाख तेते बले दूने दूने अधिके हैं,
सबमें असंख चैत्याले वंदित मुनीश हैं॥५१॥

अब सर्व द्वीप समुद्रानि गिनतीनि विषैं चन्द्रमां की गिनती नाममात्र इहां है। इनका विशेष त्रिलोकसारजी विषैं कहा है। जम्बूद्वीप विषैं दोय चन्द्रमा हैं। लवणांबुधि विषैं च्यारि चन्द्रमा हैं, लवणोदधि के बीचि है। धातकी खण्ड विषैं बारह चन्द्रमां हैं। कालोदधि विषैं बीयालीस चन्द्रमा है। पुष्कर द्वीप के बीचि मानुषोत्तर पर्वत पड्या है तातैं पुष्कर द्वीप के दोय भाग भये। तहाँ उरले भाग विषैं बहत्तरि चन्द्रमा हैं। परले भाग विषैं बारा सै चौसठि चन्द्रमा हैं। इस भांति जगदीश्वर भगवान चौबीस तीर्थङ्करों ने कह्या है। पुष्कर समुद्रका मान वलयाकार, तहां ग्यारह हजार दो सौ चन्द्रमा हैं। तिसतैं आगै आगै द्वीप समुद्रनि विषैं चौगुने चौगुने चन्द्रमा जानने। सो इस भांति जगदीश भगवान नैं कहा है। सो श्रद्धान करना। सब असंख्यात द्वीप समुद्रनि के

सर्व द्वीप समुद्रनि के चन्द्रमा आदि ज्योतिषीनि के संख्या जानिवे का यंत्र

नाम		चंद्र	गु	सूर्य	गु	ग्रह	गु	नक्षत्र	गु	तारा प्रकीर्णक
जंबू द्वीप		२	१	२	१	१७६	१	५६	१	१३३९५० कोडा कोडी
लवण समुद्र		२	[illegible]	२	२	१७६	६२	५६	२	१३३९५० ,,
धातुकी खंड		२	६	२	६	१७६	६	५६	६	१३३९५० ,,
कालोदधि		२	२१	२	२१	१७६	२१	५६	२१	१३३९५० ,,
पुष्कर द्वीप	इधर	२	३६	२	३६	१७६	३६	५६	३६	१३३९५० ,,
	उधर	२	६३२	२	६३२	१७६	६३२	५६	६३२	१३३९५० ,,
पुष्कर समुद्र		२	५६००	२	५६००	१७६	५६००	५६	५६००	१३३९५० ,,
समस्त जोड		२	६२९८	२	६२९८	१७६	६२९८	५६	६२९८	१३३९५० ,,
गुणाकर जोड़										

बीचि चूडी के आकार असंख्यात चन्द्रमानिका पटल विराजै है ते दूने दूने अधिके हैं। तिन सब असंख्यात चन्द्रमानि के विमाननि विर्षे असंख्यात अकृत्रिम चैत्यालय हैं तिनकौं मुनिजन त्रिकाल बंदै हैं, पूजै हैं ध्यावै हैं,स्तवै हैं।

— अधोलोक के चैत्यालयों की संख्या —

(कवित्त ३१ मात्रा)

चौसठि लाख असुर जिन मन्दिर,
लाख चौरासी नाग कुमार ।
हेम कुमार सुलाख बहत्तरि,
छह विध लाख छिहन्तर धार ॥
लाख छानवै वातकुमार,
पताललोक भावन दस सार ।
सात कोरि सब लाख बहत्तरि,
चैत्याले बन्दों सुखकार ॥५२॥

अर्थ—अब दश प्रकार भवनवासी देव अधोलोक विर्षे तिनके भवनानि विर्षे चैत्यालयानि की संख्या मात्र कथन ७७२००००० करिये है । असुरकुमार देवनि के भवननि विर्षे चौसठि लाख जिनमन्दिर हैं । नागकुमार देवतानि के चौरासी लाख जिनमन्दिर हैं । हेमकुमार

देवतानि के बहत्तरि लाख जिनमंदिर हैं। और इनके आगै छह प्रकार देव विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, मेघकुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार, दिक्कुमार इन विषैं प्रत्येक छिहंतरिलाख२ चैत्यालय हैं। और पवनकुमार देवतानि के भवननि विषैं छिनवैं लाख जिनमन्दिर हैं। या प्रकार पाताललोक विषैं दश प्रकार भवनवासी देवता के चैत्यालय हैं। ते सब चैत्यालय सात कोडि अर बहत्तरिलाख भए। ते अकृत्रिम एक सौ आठ जिन प्रतिमानि करि महा रमणीक परम पूज्य हैं। तिनकूं मैं त्रिकाल वन्दौं हौं, पूजौं हौं, सुमरौं हौं, ते महासुखकारी हैं।

आगैं मध्यलोक के चैत्यालयनि का कथन। ते च्यारि सै अठावन अकृत्रिल चैत्यालय हैं।

— मध्यलोक के चैत्यालय —

छप्पय

पंचमेरुके असी असी वक्षार विराजैं।
गजदंतनपै बीस, तीस कुलपर्वत छाजैं॥
सौ सत्तर वैतार धार, कुरुभूमि दसोत्तर,
इष्वाकार पहार, चार चव मानुषोत्र पर॥
नंदीसुर बावनि रुचिकमैं, चारचार कुंडलसिखर।
इम मध्यलोकमैं चारिसै,ठावन बन्दौं विघनहर।५३

अढाई द्वीप विषैं पांच मेरू संबंधी असी जिन मन्दिर हैं। और वक्षार पर्वतोपरि अस्सी चैत्यालय विराजमान हैं। पांचों मेरू के बीस गजदन्त पर्वत तिन पैं बीस चैत्यालय विराजमान हैं। एक मेरू संबन्धी छह कुलाचल, सो पांच मेरु सम्बन्धी तीस कुलाचलनिपै तीस जिनालय विराजमान हैं। एकसौ सत्तरि विजयार्द्ध पर्वतनि परि एक सौ सत्तरि जिन मंदिर हैं।

अढाई द्वीप के मध्य दश उत्कृष्ट भोगभूमि हैं, तिन विषैं दस वृक्ष हैं, तिन परि सास्वते एक एक जिनमंदिर है। इष्वाकार पर्वत पैं च्यारि जिन मंदिर हैं। मानुषोत्तर पर्वत परि च्यारि चैत्यालय हैं। नन्दीश्वर द्वीपविषैं बावन चैत्यालय हैं। ते बावन पर्वतनि परि एक दिशाविषै तेरा हैं। चारौं दिशानि के बावन चैत्यालय हैं। रुचक द्वीप विषैं चारि चैत्यालय हैं ते चैत्यालय रुचकगिरि के शिखरपरि हैं। कुण्डलद्वीपविषैं कुण्डलगिरि नामा पर्वत है, ताके शिखरनि परि च्यारि जिन मन्दिर हैं। या प्रकार मध्यलोक विषैं च्यारिसै अठावन जिनमंदिर विराजमान हैं। एक एक चैत्यालय विषैं एक सौ आठ जिन प्रतिमा हैं।

तिनकूं मैं बंदौहौं, कैसी है प्रतिमा वा चैत्यालय विघननि के नाशकरन हारे हैं।

-:उर्ध्वलोक के अकृत्रिम चैत्यालयः-

सवैया इकतीसा

प्रथम बतीस दूजें अट्ठाईस तीजें बारै,
चौथें आठ पांचैं छठैं चार लाख ख्यात हैं।
सातें आठमें पचास नौमें दसमें चालीस,
ग्यारें बारें छै हजार चारौं सत सात हैं।
अधो एक सत ग्यारै मध्य एक सत सात,
ऊरध इक्यानू नव नवोत्तरैं जात हैं।
पंचोत्तर चवरासी लाख सत्तानू हजार,
तेईस चेत्यालै सब बन्दौं अघघात हैं ॥५४॥

अब सौधर्म स्वर्गतैं लेकरि सर्वार्थसिद्धि पर्यंत उर्द्ध लोक विषैं जिनमंदिर कथनः—प्रथम सौधर्म स्वर्ग विषैं बतीस लाख चैत्यालय हैं। दूजा ईशान कुमार स्वर्ग विषैं अठाईस लाख चैत्यालय हैं। तीजे सनत्कुमार विषैं बारा लाख चैत्यालय हैं। चौथा माहेन्द्र स्वर्ग विषै आठ लाख चैत्यालय हैं। पांचमा, छठा, ब्रह्म ब्रह्मोत्तर स्वर्ग विषै च्यारि लाख चैत्यालय विख्यात हैं। सातमाँ आठमाँ लांतवकापिष्ट स्वर्ग विषैं पचास हजार चैत्यालय विराजमान हैं। नवमौ दशमौ शुक्र महाशुक्र स्वर्ग विषैं चालीस हजार चैत्यालय विराजमान हैं। ग्यारमों बारमों

शतारसहस्रार स्वर्ग विषैं छह हजार चैत्यालय विराजमान हैं।

तीन लोक के अकृत्रिम जिन मंदिरनि की संख्या

उर्ध्व लोक		मध्यलोक		अधोलोक	
		संख्या	नाम	संख्या	नाम
३२००००००	सौधर्म	८०	मेरु	६४००००००	असुर कु
२८००००००	ईशान	८०	वक्षार	८४००००००	नाग कु
१२००००००	सनत्कु	२०	गजदंत	७२००००००	हेम कु
८००००००	माहेन्द्र	३०	कुला	७६००००००	विद्युत
४००००००	ब्रह्म ब्रह्मोत्तर	१७०	विजया	७६००००००	अग्नि
५००००	लांतव कापिष्ट	१०	भोगभूमि	९६००००००	पवन कु
४००००	शुक्र महाशुक्र	४	इष्वाकार	७६००००००	मेघ कु
६०००	सतारसहस्रार	४	मानुषो	७६००००००	उदधि
७००	आनत प्रा आ अ	५२	नंदीश्वर	७६००००००	द्वीप कु
१११	अधोग्रै	४	कुडंल	७६००००००	दिक्कु
१०७	मध्यग्रै	४	रुचक	०	०
९१	उर्द्धग्रै	०	०	०	०
९	नव अनुदिश	०	०	०	०
५	पंचानुत्तर	०	०	०	०
८४९७०२३	उर्द्ध	४५८	मध्य	७७२००००००	अधो

तीनों लोक के कुल ८५६९७४८१

तेरमा चौदहमां पंद्रमॉ सोलमां ईन च्यारि स्वर्ग आनत, प्राणत, आरण, अच्युत, इन विषैं सात सै चैत्यालय है। अधोग्रैवेयक विषैं एक सौ ग्यारा चैत्यालय विराजमान मध्यम ग्रैवेयक विषैं एक सौ सात चैत्यालय विराजमान हैं। उद्ध ग्रैवेयक विषैं इक्यानवै चैत्यालय विराजमान हैं। तिनके ऊपरि नव अनुदिश विमान तिन विषैं नव चैत्यालय विराजमान हैं। तिन ऊपरि पांच पंचोत्तरनि विषैं पांचचैत्यालय विराजमान हैं। ए सोला स्वर्गनि के चौरासी लाख छिनवैं हजार सातसै, नवाग्रैयेवेयकनि के ३०९, नव अनुदिश के ९, पंच अनुत्तर के ५, ए सब चोरासी लाख, सित्याणवैं हजार तेईस चैत्यालय भए। ते कैसे हैं चैत्यालय, सास्वते हैं उत्कृष्ट, हैं एक एक चैत्यालय विषै एक सौ आठ एक सौ आठ रतनमई जिन प्रतिमा विराजमान हैं। तिन सबनि कौं मैं बंदौं हौं, पूजौं हौं, ध्यावौं हौं, तातै सब पाप का नाश होइ।

— सौधर्म इन्द्र की सेना की गणना —

इन्द्रसेन सात हाथी घोरे रथ प्यादे बैल,
गंधरव नृत्य सात सात परकार हैं।
आदि चौरासीहजार आगै षट दूने दूने,
एक कोरि छै लाख अडसठ हजार हैं।

एते गज तेते तेते छह भेद सबके ते,
सात कोरि छियालीस लाख निरधार हैं।
सहस छिहत्तर हैं औ एक अवतार न्योग,
पुन्य कर्म भोग भोगि मोक्ष कौं सिधार हैं।५५

अब सौधर्म इन्द्र की सेना सात प्रकार है तिनकी गिणती:—एक एक सेना विषैं सात सात कक्ष हैं सब सेना ७४६७६००० हैं। इंद्रनिकै सेनासात प्रकार ही हैं ते कौन २ प्रकार है। गान विद्या विषै प्रवीण देवनि के समूह, नृत्यकारिणी देवीनि का समूह, सो सात प्रकार सेना है सो एक एक सेना विषैं सात सात कक्ष हैं। तहाँ पहली सेना हाथिन की है। सो पहली सेना विषैं हाथी चौराशी हजार हैं आगैं छह ठिकानेनि विषैं हाथी दुगणे २ जानने। सातौं कक्षनि के सर्व हाथी एक कोडि छह लाख अड़सठि हजार भये। जितने पहली सेना के हाथी भए तितनी संख्या बाकी छहों सेना की जाननी। सात २ कक्ष सहित सब सातौं सेना के कितने भए:—सब सातौं सेना के जोड़ दीए सात कोडि छियालीस लाख छिहंतरि हजार भए। सौधर्म इन्द्र का मात्र एक अवतार धारण करिबाको नियोग है। अर्थात् पुण्योदयसे प्राप्त महान वैभव को भोगकरि तहां तै च्युत होय मनुष जन्म पाय मोक्ष सिधारे है।

एकेन्द्री तैं सैनी पर्यंत जीवनि के इन्द्रियों के विषय की सीमा

छप्पय

फरस चारिसै धनुष, असैनीलौं दुगुना गनि।
रसना चौसठि धनुष, घ्रान सौ तेइन्द्री भनि॥
चख जोजन उनतीस, सतक चौवन परवानो।
कान आठसै धनुष, सुनै सेनी सो जानो॥
नव जोजन घ्रान रसना फरस,
कान दुवादस जोजना।
चख सैंतालीस सहस दुसै,
तेसठि देखै जिन भना ॥५६॥

अब एकेन्द्री आदि संज्ञी पंचेन्द्री पर्यन्त जीवनि कै स्पर्शनादि कर्ण पर्यन्त पांच इन्द्रियनि के उत्कृष्ट विषयनि का जुदा जुदा व्यौरा का नाम मात्र कथन—

एकेन्द्री जीव कै एक स्पर्शन इन्द्रिय है ताका उत्कृष्ट विषय एकेन्द्री कै स्पर्श का विषय च्यारि सै धनुष का है। अपने शरीर तैं च्यारिसै धनुष ताईं पृथ्वी के विषैं विषयकूं स्पर्शे है। अर स्पर्शन इन्द्रिय का विषयादि और इन्द्रियनि का विषय असैनी पंचेन्द्री तक

दुगुणां २ जानना। बे इन्द्री जीविन के स्पर्शन इन्द्रिय का आठसै धनुष का है, अर रसना इन्द्रिय का विषय उत्कृष्ट चौंसठि धनुष को है। स्पर्शन विषय धनुष ८००, रसना विषय धनुष ६४।

अर तेइन्द्री जीवनि कै नाशिका का उत्कृष्ट विषय सौव धनुष का है। तिनही तेइन्द्री जीवनि के स्पर्श का विषय सोलासै धनुष का है। रसना का विषय एकसौ अठाइस धनुष का है। स्पर्श, १६००, रसना १२८, घ्राण १००। चौइन्द्री जीवनि कै नेत्र इन्द्रिय का विषय उत्कृष्ट गुणतीस सै चौवन योजन का है। तिनही चौइन्द्री जीवनि कै स्पर्श का विषय धनुष ३२००, रसना का विषय दोयसै छप्पन धनुष, अर नाशिका इंद्रिय का विषय दोयसै धनुष का है। स्पर्श, ३२००, रसना २५६, घ्राण २००, चक्षु योजन २६५४। असैनी पंचेंद्री काननितैं उत्कृष्ट आठसै धनुष ताई की सुणै हैं। या असैनी के स्पर्श, धनुष ६४००, रसना धनुष ५१२, घ्रान विषय धनुष ४००, चक्षु विषय योजन गुणसठि सै आठ, कर्ण इंद्रिय विषय धनुष आठसै। सैनी पंचेंद्री जीव कै उत्कृष्ट नाशिका का विषय नौ योजन का है, नौ योजन ताईं की सुगंध की नाशिका तैं जाणैं। अर जिह्वा इंद्री स्पर्शन इन्द्री कर्णइन्द्री का उत्कृष्ट विषयनि का जानपणां बारा बारा योजन का है।

अर सैनी जीव नेत्र इंद्री तैं उत्कृष्ट देखै तौ सैंतालीस हजार दोय से तरेसठि जोजन ताई देखैं, सैनी जीवनि विषैं उत्कृष्ट इंद्रियनि का विषय चक्रवर्ती कै, और सामान्य जीवनि कै नांही हो है। स्पर्श योजन १२, रसना १२, घ्रान योजन ६, चक्षु योजन ४७२६३, कर्ण योजन १२ यह विषयनि का निरूपण जिनेंद्र भगवान नैं जिनागम विषै कहा है सो श्रद्धान करना।

पांचौं इन्द्रीयनी के उत्कृष्ट विषयनि का यंत्र

नाम	स्पर्श	रसना	घ्रणा	चक्षु	श्रोत्र
एकेंद्री	ध. ०४००	०	०	०	०
वेइन्द्री	ध. ०८०००	ध. ६४	०	०	०
तेइन्द्री	ध. १६००	ध. १२८	ध. १००	०	०
चौइन्द्री	ध. ३२००	ध. २५६	ध. २००	यो २९५४	०
असैनी	ध. ६४००	ध. ५१२	ध. ४००	यो. ५९०८	ध. ८००
सैनी पं०	योजन १२	यो ६	यो ६	यो ४७२६३	यो १२

केवली समुद्धात करते हैं तब उनके कौन २ योग होते हैं ?

सवैया इकतीसा

पहलैं समैमै करैं दड आठ मैं संवरै,
परदेस आतम औदारिक प्रमानिए।
दूसरैं कपाट होय सातमैं संवरै सोय,

संवरै प्रतर छठे मिश्र जोग जानिए।
तीसरैं प्रतर, चौथें पूरत सरव लोक,
पूरन संवरैं पांचैं कारमान मानिए।
आठ समै मांहि जात केवल समुद्घात।
निर्जरा असंख्य गुनी देव सो बखानिए ॥५७॥

अब जे केवली भगवान चौदमां गुणस्थान विषैं केवल समुद्घात करै ते विषैं क्रिया होय कौंन कौंन से जोग पाईए तिनका नाम मात्र कथन।

जिन मुनीश्वरों के आयु के छह महीनां बाकी रहे पीछैं केवलज्ञान उपज्या ते ते नियम थकी समुद्घात करे ही। अर जिन के छह महीना की आयु पहली केवलज्ञान उपज्या ते समुद्घात करै भी अर नांही भी करै, करणे का सर्वथा नियम नांही।

चौदमां गुणस्थान कै अंत आठ समय बाकी रहि जाय तब आयु कर्म की स्थिति समान और तीन कर्मनि की स्थिति होने कै लिए आत्मा का प्रदेश शरीर कै बाहरि निकसैं, तहां पहले समय दंडवत् होय। याका नाम दंड कहिए। सो ए दंडरूप हुए प्रदेश आठमें समय विषैं संवरै हैं, सिमटैं है। तहां पहले समय दंड, आठवैं समय

दंड संवरण, तहां औदारिक कायथोग जानना। और दूसरे समय विषें कपाट कहिए किवाड रूप प्रदेश फैले, विस्तरै, सो कपाट रूप प्रदेश सातमें समय विषै संवरै, संकोचरूप होइ। और प्रतररूप जे तीसरे समय के प्रदेश, ते छठें समय विषैं संवरै, संकोचरूप होइ। दूसरा, सातमां, छठा इन तीनों समयनि विषैं औदारिक मिश्रयोग पाईए तीसरे समय विषैं प्रतररूप प्रदेश फैले। जैसे दूध की बिलोवनी रई का फूल चौरस है तिस रूप प्रदेश फैले और चौथे समय विषें प्रतररूप आत्म प्रदेश तीन लोक विषें सर्वत्र विस्तरे, सर्व जायगां फैले। सो पांचवे समय विषें लोकपूरन रूप प्रदेश संवरे, संकोचरूप होइ। तीसरे, चौथे पांचमें इन तीनों समयनि विषैं कार्माण योग पाईए। या प्रकार आठ समयनि विषें केवलज्ञानी केवलसमुद्घात करे तब तीनों कर्मनि की थिति आयु समान होइ। जो समय

केवली समुद्घात विषैं आठ समयमें दंडादि यंत्र

करण				संवरण			
दंड	कपाट	प्रतर	लोकपूर्ण	लोकपूर्ण	प्रतर	कपाट	दंड
स १	स २	स ३	स ४	स ५	स ६	स ७	स ८
औदा० काय	औदा० मिश्र	कार्माण योग	कार्माण योग	कार्माण योग	मिश्र योग	औदा० मिश्र	औदा० काय

समय निर्जरा होय थी तातैं तिससमय असंख्यात गुणी निर्जरा भई, असंख्यात गुनी निजरा होइ। ऐसे केवलज्ञानी देवाधिदेव कहिए सब देवनि के शिरोमणि देव हैं।

—: मिथ्याती की मुक्ति न हो सम्यक्त्वी की हो :—

एक समैमाहिं एकसमैपरबद्ध बंधै,
एक समै एकसमैपरबद्ध झरै है।
वर्गना जघन्यमैं अभव्य सौं अनंतगुनी,
उतकिष्ट सिद्ध कौ अनंतभाग धरै है॥
जैसें एक गास खाय सात धात होय जाय,
तैसें एक सातकर्मरूप अनुसरै है।
यों न लहै मोख कोइ जाके उर ग्यान होइ,
एकसमै बहु खोइ सोइ सिव वरै है॥ ५८॥

अब जब ताइं मिथ्यात परिणाम वर्तैं तब ताइं कर्मनि तैं न छूटै। और जब सम्यक् परिणाम वर्तैं तब कर्मनि तैं छूटै, मुक्त होइ—ऐसा समयप्रवद्ध का कथन।

समय समय बंधे सो समय प्रबद्ध है। किसी एक मिथ्यादृष्टिनैं एक समय विषैं अनंती वर्गणा ग्रही, बांधी। मिथ्यात्व परिणामनि के बल करिकैं जितनी एक पहले

समय विषैं वर्गना बांधी थी सो वै वर्गना दूसरै समय विषैं आधी खिरी। इस भांति द्वयद्ध गुणहांनि करि समैं मांहि आधी आधी खिरै और मिथ्यात के बल करि समय समय विषैं अनंती बांधै इस भांति जानना। सर्व समय प्रबद्ध की वर्गना एक समय विषैं बांधी सो गिनती की नांही बांधी। सो गिनती मांहि कितनी है? जघन्यता करिकैं तो वर्गनां अभव्य राशि तैं अनन्तगुनी है। अभव्य जीव जघन्य युक्तानन्त प्रमाण है। तिनतैं भी अनंतगुनी है। अनंत के अनंत भेद हैं। और वर्गना उत्कृष्टता करि सिद्धनि कै अनंतवैं भाग हैं। इस भांति गोमट्टसारजी विषैं गिनती कही है और भाषा कर्मकांड विषैं हेमराजजी कहै है। दृष्टांत आदि:—

जैसे कोई एक निरोगी पुरुष सचिक्क अन्न का एक गास खाय जब पचै सो ही गास हाड, चाम, मांस, नाड़ी, मज्जा, शुक्र, सोणित, ए सात धात रूप होय। यह दृष्टांत चौबीस ठाणा की टीका विषैं कहा है। तैसें पुद्गल वर्गनां जीवनैं ग्रही तब आयु कर्म विनां सात कर्मरूप समांन अंश परनई। यह समय प्रबद्ध का कथन गोमट्टसारजी के अंत विषैं विशेषरूप कहा है सो देखि लेना। समय समय बंधै घनी और झरै थोड़ी। याही तैं जीव मोक्षनैं पावता नांही। टोटा बहुत नफा थोड़ा। और जा जीव के हृदय विषैं भेद

विज्ञान होय सो जीव भेद विज्ञान के बल करिकै समय समय कर्म थोड़ा बांधै तिसतैं समय समय अनंतगुणां खपावै, अथवा सो भेद विज्ञानी सम्यग्दृष्टि आत्मा भेद-विज्ञान करिकैं अनंते भवनि विषैं बांधै कर्म एक समय विषैं खपावै है। सो ही सम्यग्दृष्टि जीव मोक्षकूं वरै है पावै है।

— आठ कर्मों के आठ दृष्टान्त —

देवपै परयो है पट रूपकौ न ज्ञान होय,
जैसे दरवान भूप-देखनौ निवारै है।
सहत लपेटी असिधारा सुखदुखकारा,
मदिरा ज्यौं जीवनिकौं मोहनी विथारै है।
काठमें दिया है पांव करै थितिको सुभाव,
चित्रकार नाना नाम चित्रकौं समारै है।
चक्री ऊँच नीच घरै भूप दीयौ मनै करै,
एई आठ कर्म हरै सोई हमैं तारै है ॥५६॥

अब आठौं कर्मनि के कारिज विषैं व्यवहार करि आठ दृष्टान्त कथन।

आठौं कर्मनि परि जुदा जुदा दृष्टान्त जुदे २ कारिज कहै हैं। जैसे देव कहिए प्रतिमा तापरि वस्त्र डारिये तब दिखलाई न दे, तैसें ज्ञानावरणी कर्म नैं आत्मा का ज्ञान

गुण आच्छादित करि राख्या है। सो ज्ञानगुण के खुले बिना जानने का अभाव है। ज्ञानगुण का आवरण मिटै तब ही पदार्थनि का यथावत् जानना होई। जैसे दरवाजे का दरवान वा चौपदार राजा पास जाने न देए, राजा का दर्शन न होने दे, तैसै दर्शनावरणी कर्म दर्शन गुण को प्रकट न होने दे। दर्शन बिना पदार्थनि का यथावत् देखने का अभाव है। जैसे सहद खांडे की धारा कै लपेटिए, सो सहद के आस्वाद मात्र लोभतै खांडा जीभ परि धरै तो मीठा लागै, सुख लगै, फेरि जीभनैं काटि दोय टूक करै, तब महादुख होय। तैसे वेदनीय कर्म जो उदै आवै तब सुख दुख रूप होइ जाय, सुखमांहि आपनैं सुखी मानैं दुख माहि आपनैं दुखी मानै। सुख थोरा, दुख बहुत, यह वेदनी है। जैसे मदिरा पिए तैं बावला होइ जाय, गहिला होइ जाय, सुग्त कछु रहै नांही, तैसे मोहनी कर्म के उदय जीव मोह विषैं मतवाले समान बहकै है, कछू समझै नांही। जैसे चोर का काठ विषं पांव दीजै और गाढी बेडी सांकल पडै तौ कहीं जाय सकै नांही, तैसें आयु कर्म जब आगली आयु बांध ले तब जीवनैं इहां तैं निकलने दे, विना बांधै निकलने दे नाहीं। पहलै पांव काठ विषैं ठोक दे तब निकलने देय, यह नियम है। जैसे चित्रकार जो चतेरो सो नाना भांति का चित्राम करै

तैसें नाम कर्म के उदय जीव एकेन्द्री आदि नाना प्रकार की गतिनि विषैं भ्रमण करै है, चौरासी लाख जीवा की जोनि विषैं नाना प्रकार के नाम धरावै है। जैसे कुम्भकार नाना प्रकार के छोटे बडे बासन बनावै है, तैसे गोत्रकर्म। ऊंच नीच कुलविषैं जीव का उपजना करै है। जैसे राजा तो देय, अर भंडारी आदि कोई मनैं करै तैसे आठमां अन्तराय कर्म के उदै जीवनैं कारिज विषैं अन्तराय पडि जाय, कारिज न होय, मतलब न होय। तैसें आठौं कर्मनि नैं मारै घात करै। सो हमारे ताईं संसार समुद्रके पार उतारि कैं मोक्ष के सुख देवै तातैं हमारा नमस्कार है। ऐसे आठ कर्म के जीतने हारे सिद्ध अनन्ते हैं।

-- चौदह गुणस्थानों में सत्तावन आस्रव --

पचपन अरु पचास तेतालिस,
छयालिस सैंतिस चौविस जान।
बाइस बाइस सोलह दस अरु
नव नव सात अंत न बखान।
चौदै गुणथानकमें इह विध,
आस्रवद्वार कहे भगवान।
मूल चार उत्तर सत्तावन,
नाम करौ धरि संवरज्ञान ॥६०॥

पांच मिथ्यात, बारह अव्रत, पचीस कषाय, पन्द्रा जोग ए सत्तावन कर्म के आवने की मोरी है, परनाली है । इन सत्तावनों का चौदह गुणस्थाननि परि जुदा जुदा ब्यौरा का कथन । इनका नाम आश्रव त्रिभंगी है तिनका नाम मात्र कथन करिये है ।

पहला गुणस्थान विषैं पचपन का आश्रव है, अहारक द्विक बिना । सासादन विषैं पचास का आश्रव है, पाँच मिथ्यात आहारक द्विक बिना ।

मिश्र विषैं तीयालीस का आश्रव है, चार अनन्तानुबन्धी, तीन मिश्र, पांच मिथ्यात, दो आहारक बिना ।

अव्रत विषैं छीयालीस का आश्रव है, ऊपरके ४३ विषैं तीन मिश्र मिले ४६ भये ।

देशविरत विषै सैंतीस का आश्रव है—ऊपरके ४६ में से कषाय ४, जोग ४, त्रसवध १ ए नव घटे ३७ भये । प्रमत्त विषैं चौबीस का आश्रव है—कषाय तेरह, जोग नौ आहारक दो । सातमें विषं २२ का आश्रव है—कषाय १३ जोग नव । आठमें विषैं ए ही सातमें के कहे बाईस जानने । नवमें विषं १६ आश्रव है । नव जोग, चार संज्वलन तथा तीन वेद । दसमें विषैं १० आश्रव, नव, जोग, एक सूक्ष्मलोभकषाय । ग्यारमैं विषैं केवल नवयोग का आश्रव । बारमें विषैं भी नव जोग । तेरमें विषै जोग ७

चौदह गुणस्थाननि विषैं आश्रव सत्तावन का यंत्र																				मूल आश्रव ४			
गुणस्थ	मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ१	२	३	४	५	६	सू	उ	क्षी	स	अ	मि	अ	क	जो
आश्रव	५५	५०	४३	४६	३७	२४	२२	२२	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	९	७	०	५	१२	२५	१५
अनाश्रव	२	७	१४	११	२०	३३	३५	३५	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४८	५०	५७	१	५	१०	१३
व्युच्छित्ति	५	४	०	७	१५	२	०	६	१	१	१	१	१	१	१	०	४	७	०	१	१	१	१

का आश्रव है काय ३ वचन २ मन २ ए सात। चौदहमें गुणस्थान विषैं कोई भी आश्रव नाहीं। चौदहमां धाम अजोगी कहिए। अबंध जानना। चौदह गुणस्थान विषैं यौं प्रकार इस भांति ५५। ५०। ४३। ४६। ३७ २४। २२। २२। १६। १०। ६। ६।७।० कर्मनि के आवने का द्वार दरवाजे मोरी भगवान अर्हंतदेव नैं कहै हैं। इनका विशेष त्रिभंगीसार तैं देखि लेना, सरधान करना। तहाँ मूल आश्रव के भेद च्यारिः—मिथ्यात्व १, अव्रत १, कषाय १, जोग १, ए च्यारि मूल भेद हैं। तिनके उत्तर भेद सत्तावन हैं—मिथ्यात्व ५, अव्रत १२, कषाय २५, जोग १५, ए सत्तावन। सो इन सत्तावन आश्रवनि का सम्यग्ज्ञान केवल करि नाश करौ। ए ही संसार भ्रमण के कारण हैं।

–: चौदह गुणस्थानों में १२० प्रकृतियों का बन्ध :–

इकसौ सतरै एक एकसौ,
चौहत्तर सतहत्तर मान।
सतसठ तेसठ उनसठ ठावन,
बाईस सतरै दसमैं थान॥
ग्यारम बारम तेरम साता,
एक बंध नहिं अंत निदान।

सब गुणथानक बंधैं प्रकृति इम,
निहचैं आप अबंध पिछानि ॥६१॥

अब बंधप्रकृति एक सौ बीस तिनका चौदह गुण-स्थाननि विषैं कथन। बाईस एक सौ बीसनि विषैं गर्भित हैं।

पहला मिथ्यात्व गुणस्थान विषैं एक सौ सतरा का बन्ध है। आहारक द्विक, और तीर्थङ्कर इन तीन विना। सासादन दूजा गुणस्थान विषैं एक सौ एक प्रकृति का बन्धहै। तीसरा गुणस्थान मिश्र विषैं चौहत्तरि प्रकृतिनि का बन्ध है। चौथा अव्रत गुणस्थान विषैं सतहत्तरि प्रकृतिनि का बन्ध है। पाँचमां देशव्रत गुणस्थान विषैं सडसठि प्रकृतिनि का बन्ध है। छटा प्रमत्त गुणस्थान विषैं त्रेसठि प्रकृतिनि का बन्ध है। अप्रमत्त सातमां गुणस्थान विषैं गुणसठि प्रकृतिनि का बन्ध है। आठमां अपूर्वकरण गुण-स्थानविषैं अठावन प्रकृति का बन्ध है। नवमा अनिवृत्ति करण विषैं बाईस का बन्ध है। दशमा सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान विषैं सतरा प्रकृतिनि का बन्ध है। ग्यारमां उपशांत कषाय गुणस्थान, बारहमां क्षीणमोह गुणस्थान, तेरहवां सयोग केवली गुणस्थान इन तीनौं गुणस्थाननि विषैं एक साता प्रकृति जो साता वेदनी ताका बन्ध है। चौदहवां अजोग केवली गुणस्थान विषैं बन्ध ही नाहीं।

बंध प्रकृति १२० की गुणस्थान चौदह विषैं रचना यंत्र

गुणस्थान	मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ	सू	उ	क्षी	स	अ
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बंध	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१	१	०
अबंध	३	१९	४६	४३	५३	५७	६१	६२	९८	१०३	११९	११९	११९	१२०
व्युच्छित्ति	१६	२५	०	१०	४	६	१	३६	५	१६	०	०	१	०

यह जानना। या भाँति सर्वगुणस्थाननि विषैं एक सौ बीस प्रकृति बन्ध की, तिनका यथा संभव व्याख्यान किया, जहां जहां जेती जेती प्रकृतिनि का बन्ध पाइए सो कथन कीया। अर ज्ञानदृष्टि जो निश्चय नय ताकरि देखिए तब अपनी आत्मा बन्ध रहित अबन्ध पिछानना जानना। बन्ध अबन्ध, व्युछित्ति इन तीनौं का समुदाय कथन तिसका नाम त्रिभंगी कहिए। या भांति विशेष त्रिभंगी सार तैं जानना।

— चौदह गुणस्थानों में १२२ प्रकृतियों का उदय —

इक सौ सतरै इक सौ ग्यारै,
सौ अरु सौ, चौ सत्तासीय।
इक्यासी छैहत्तरि बेहत्तरि,
छ्यासठ अरु साठ उदीय॥
उनसठ सत्तावन व्यालिस अरु,
बारै प्रकृति उदै है जीव।
चौदे गुणथानक की रचना,
उदयभिन्न तुव सिद्ध सुकीय॥६२॥

अब उदयप्रकृति एकसौ बाईस तिनका चौदह गुणस्थान विषैं त्रिभंगी कथन।

पहला मिथ्यात्व गुणस्थान विषैं एकसौ सतरा प्रकृ-

तिनि का उदय है। दूजा सासादन गुणस्थान विषैं एक सौ ग्यारा प्रकृतिनि का उदय है। तीसरै गुणस्थान मिश्र विषैं एक सौ प्रकृतिनि का उदय है। चौथा अव्रत गुण-स्थान विषैं एक सौ च्यारि प्रकृतिनि का उदय है। पांचमां देशव्रत गुणस्थान विषैं सित्यासी प्रकृतिनि का उदय है। छठा प्रमत्तगुणस्थान विषैं इक्यासी प्रकृतिनि का उदय है। सातमां अप्रत्त गुणस्थान विषैं छिहन्तर प्रकृतिनिका उदय है। आठमां अपूर्वकरण गुणस्थान विषैं बहत्तरि प्रकृतिनि का उदय है। नवमां अनिवृत्तिकरण गुणस्थान विषैं छ्यासठि प्रकृतिनि का उदय है। दसमां सूक्ष्मसांपराय गुणस्थानविषैं साठि प्रकृतिनि का उदय है। ग्यारमां उपशांतमोह गुणस्थान विषैं गुणसठि प्रकृतिनि का उदय है। बारमां क्षीणमोह गुणस्थानविषैं सत्तावन प्रकृतिनि का उदय है। तेरमां सयोगकेवली गुणस्थान विषैं बियालीस प्रकृतिनि का उदय है। चौदहमा अयोग केवली गुणस्थान विषैं बारा प्रकृतिनि का उदय है। या भांति चौदह गुणस्थाननि की रचना एक सौ बाईस प्रकृतिनि परि उदयरूप जानना। ऐसे उदयरूप कर्मनि तैं निश्चयनय करि तू भिन्न है, सिद्ध समान है। तेरा ज्ञान स्वभाव है कर्मनि का जड स्वभाव है। तातैं तू कर्मनि तैं भिन्न है जुदा है।

चौदह गुणस्थाननि विषै १२२ उदय प्रकृति का यंत्र

गुणस्थान	मि १	सा २	मि ३	अ ४	दे ५	प्र ६	अ ७	अ ८	अ ९	सू १०	उ ११	क्षी १२	स १३	अ जो १४
उदय	११७	१११	१००	१०४	८७	८१	७६	७२	६६	६०	५९	५७	४२	१२
अनुदय	५	११	२२	१८	३५	४१	४६	५०	५६	६२	६३	६५	८०	११०
व्युच्छित्ति	५	९	१	१७	८	५	४	६	६	१	२	१६	३०	१२

चौदह गुणस्थाननि विषै उदीरणा प्रकृतिनि का यंत्र

(देखो आगे का छन्द ६३ वाँ)

गुणस्थान	मि १	सा २	मि ३	अ ४	दे ५	प्र ६	अ ७	अ ८	अ ९	सू १०	उ ११	क्षी १२	स १३	अ १४
उदीरणा	११७	१११	१००	१०४	८७	८१	७३	६९	६३	५७	५६	५४	३९	०
अनुदीरणा	५	११	२२	१८	३५	४१	४९	५३	५९	६५	६६	६८	८३	१२२
व्युच्छित्ति	१	९	१	१७	८	४	४	६	६	१	२	१६	३९	०

—चौदह गुणस्थानों में १२२ प्रकृतियों की उदीरणा—

इक सौ सतरै इक सौ ग्यारै,
सौ सौ चौ सत्तासी जान।
इक्यासी तेहत्तरि उनहत्तरि,
तेसठि सत्तावन मान ।
छप्पन चौवन उनतालिस,
तेरमें अन्त नांही परवान ।
यह उदीरणा चौदै थानक,
करै ज्ञानबल सो तू जान ॥६३॥

अब उदीरणा त्रिभंगी का एक सौ बाईस प्रकृतिनि परि कथन। जैसें आम का फलनैं तोडि पाल विषैं पकावै तैसें सत्तारूप कर्मनैं जोरावरी तपतें खिपावै सो उदीरणा कहिए हैं।

पहला मिथ्यात्व गुणस्थान विषैं एक सौ सतरा प्रकृतिनि की उदयरूप उदीरणा है, सविपाक निर्जरा है । दूसरा सासादन गुणस्थान विषैं एक सौ ग्यारा प्रकृतिनि की उदीरणा है। तीसरा मिश्रगुणस्थानविषैं सौ प्रकृति की उदीरणा है। चौथा अविरत गुणस्थान विषैं एक सौ च्यारि प्रकृतिनि की उदीरणा है। पांचवां देशव्रत गुण-

स्थान विषैं सित्यासी प्रकृतिनि की उदीरणा है । छठा प्रमत्त गुणस्थान विषैं इक्यासी प्रकृतिनि की उदीरणा है । सातमां अप्रमत्त गुणस्थानविषैं तेहत्तरि प्रकृतिनि की उदीरणा है । आठमां अपूर्वकरण विषैं गुणहत्तरि की उदीरणा है । नवमां अनिवृत्तिकरण गुणस्थान विषैं त्रेसठि की उदीरणा है । दशमां सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान विषैं सत्तावन प्रकृतिनि की उदीरणा है । ग्यारमां उपशान्त मोहविषैं छप्पन की उदीरणा है । बारमां क्षीणमोह विषैं चौवन की उदीरणा है । तेरमां सजोग केवली गुणस्थान विषैं गुणतालीस प्रकृतिनि की उदीरणा है । अन्त का चौदमा अजोग केवली गुणस्थान विषैं उदीरणा नाहीं है, यह नियम है । या भांति एक सौ बाईस प्रकृतिनि की उदीरणा चौदह गुणस्थाननि विषैं करै, परन्तु सो उदीरणा सम्यग्ज्ञान के बल करिकै करै हैं । सो ज्ञानरूप सुज्ञानी सम्यग्ज्ञानी है । विशेष उदीरणा का कथन गोमट्टसारजी के कर्मकाण्ड विषैं देखि लेना ।

चौदह गुणस्थानों में नाना जीवों की अपेक्षा १४८ प्रकृतियों की सत्ता ।

सवैया इकतीसा

पहलैं सौ अड़ताल दूजे मैं सौ पैंताल,
तीजे मांहि सौ सैंताल चौथे में अठतालसौ ।

पांचों गुनसौ सैंताल छट्ठे सातें आठें नौमें,
दशमें ग्यारमें उपसमी है छयालसौ ।
आठें नौमें सौ अडतीस दशमें इकसौ दोय,
बारमें इकसौ एक आगें पंद्रै टाल सौ ।
तेरें चौदमें पिचासी सत्ता नास अविनासी,
नमों लोक घन ऊरध राजू है सैंतालसौ ।६४।

अब सत्ता त्रिभंगी का कथन। कर्म बंध तैं जब ताईं उदय न आवै तब ताईं सत्तारूप कहिए, सो प्रकृति एक सौ अडतालीस हैं।

प्रथम मिथ्यात्व गुणस्थान विषैं नाना जीवनि की अपेक्षा एक सौ अड़तालीस प्रकृतिनि की सत्ता पाइए है। दूजा सासादन गुणस्थानविषै एक सौ पैंतालीस की सत्ता नाना जीव अपेक्षा पाइए है। तीजा मिश्र गुणस्थान विषैं नाना जीवनि की अपेक्षा एकसौ सैंतालीस प्रकृतिनि की सत्ता पाइए है। चौथा अव्रत गुणस्थान विषैं नाना जीवनि की अपेक्षा एक सौ अठतालीस प्रकृतिनि की सता पाईए है। पांचमा देशव्रत गुणस्थान विषैं नाना जीवनि की अपेक्षा एक सौ सैंतालीस कर्म प्रकृतिनि की सत्ता पाइए है। छठो प्रमत्त गुणस्थान ता विषैं, सातमो अप्रमत्तगुण-स्थान ता विषैं, आठमों अपूर्वकरण गुणस्थान ता विषैं,

नवमों अनिवृत्तिकरन गुणस्थान ता विषें, दशमो सूक्ष्म-सांपराय गुणस्थान ता विषैं, ग्यारमों उपशांत मोह गुणस्थान ता विषैं, छठा प्रमत्त गुणस्थान से लेकरि ग्यारमां उपशांत मोह तक छह गुणस्थान उपशमी के हैं। तिन विषैं नाना जीव अपेक्षा एक सौ छीयालीस कर्मनि की प्रकृतिनि की सत्ता पाइए है। आठमा अपूर्वकरण गुण स्थान, नवमा अनिवृत्ति करण गुणस्थान इन विषैं क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवनि कै नाना जीवनि की अपेक्षा करिकैं एक सौ अठतीस प्रकृतिनि की सत्ता पाइए है।

दशमा सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान विषैं नाना जीव अपेक्षा क्षपक श्रेणी वाले मुनिराजनि कै एक सौ दोय कर्म प्रकृति सत्ता विषैं पाईए। बारमा क्षीणमोह गुणस्थान विषैं नाना जीवनि की अपेक्षा एक सौ एक प्रकृति सत्ता विषैं पाईए हैं। आगैं तेरमा सयोगकेवलीगुणस्थान विषैं पिच्यासी कर्म प्रकृतिनि की सत्ता नाना जीव अपेक्षा पाइए है। अरु चौदहमा अयोगकेवली गुणस्थान विषैं नाना जीव अपेक्षा उपांत समय तक पिच्यासी की सत्ता है, अंत का समय विषैं तेरा प्रकृतिनि की सत्ता पाइए है। इस भांति पिच्चासी प्रकृतिनि की सत्ता का नाश करिकैं अविनाशी मोक्ष का सुख अनंत अविनासी पाइए है।

मध्य लोक तैं घनाकार ऊंचाई रूप एक सौ सैंतालीस

चौदह गुणस्थान विषैं सत्ता का यंत्र

गुणस्थान	मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अउ.	अक्ष.	अउ.	अक्ष.	२	३	४	५	६	७	८	९	सूउ,	सू.क्ष,	उ.उ,	उ क्ष,	क्षी	स	अ	अंत
सत्ता	१४८	१४५	१४७	१४८	१४७	१४६	१४६	१४६	१३८	१४६	१३८	१२२	११४	११३	११२	१०६	१०५	१०४	१०३	१४६	१०२	१४६	१०१	१०१	८५	८५	१३
असत्ता	०	३	१	०	१	२	२	२	१०	२	१०	२६	३४	३५	३६	४२	४३	४४	४५	२	४६	२	४७	४७	६३	६३	१३५
व्युच्छित्ति	०	०	०	१	१	०	८	०	०	०	१६	८	१	१	६	१	१	१	१	०	१	०	०	१६	०	७२	१३

राजू का घनाकार लोक है, तिस लोक के अंत तनुवात वलय विषैं अनंते सिद्ध तिष्ठै हैं, विराजै हैं। तिननैं मेरा नमस्कार है। इस भांति सत्ता त्रिभंगी का कथन है, सो जानना। विशेष सत्ता का स्वरूप त्रिभंगीसार में वा गोमट्टसारजी तैं जानना।

—अन्तमुर्हूर्त के जन्म मरणों की संख्या—

भू जल पावक पौन साधारण पंच भेद,
सूच्छम वादर दस परतेक ग्यारै हैं।
छै हजार बारै बारै जामन मरन धारै,
बे ते चौ इंद्री असी साठ चालिस धार हैं।
चौइस पंचेंद्री सब छासठ सहस तीन,
सै छत्तीस, सो सैंतीस तेहत्तर सार हैं।
छत्तीस सै पचासी स्वास अधिक तांजा अंस,
नमौं नाथ मोहि सब दुख सौं उधार हैं।६६॥

अब अलब्ध पर्याप्ता का कथन। जो लब्धि नाहीं सो अलब्धि। जो जीव एक आहार पर्याप्ता भी पूरो न करै सो अलब्ध पर्याप्तक। तिस अलब्ध पर्याप्ता का जुदा जुदा व्यौरा कथन।

भू कहिए पृथ्वीकाय जीव, जलकायिक जीव, पावक

कहिए अग्निकायक जीव, पवनकायिक जीव, साधारण वनस्पति कायिक जीव, ए सब पंच भेद। इनके भेद दश, ए ही पांच सूक्ष्म अर ए ही पांचौं बादर, ऐसे दश भेद भए। सो दश भेद तौ ए पाईए और ग्यारमा भेद प्रत्येक वनस्पति का जानना। ए ग्यारह भेद एकेंद्री के जानने। सो ए ग्यारह स्थानक एकेन्द्री जीवनि के। तिनके जुदे जुदे छह हजार बारा छह हजार बारा जामन मरण कषायनि की प्रचुरता ते धारन करैं। सो निगोदिया अलब्ध पर्याप्ता अन्तमुहूर्त कालविषैं ग्यारा और ठौर जाय कषायनि की प्रचुरता ते बे इंद्री, ते इंद्री, चौ इंद्री, इन विकलत्रय जीवनि के क्षुद्रभव, अनुक्रम ते बेइंद्री के अस्सी, ते इंद्री के साठि, चौइंद्री के चालीस जामण मरण धारण करैं। सो ए विकलयत्रय के एक सो अस्सी जामण मरण भए। पंचेंद्री जीव के जनम मरण चौबीस। अब इन समस्तनि कूं इकठे करिये तब एकेंद्री से लेय पंचेंद्री तक छयाछठि हजार तीनसैं छतीस भए। एकेंद्री के छयाछठि हजार एक सौ बत्तीस, विकलत्रय के एक सौ अस्सी, पंचेंद्री के चौबीस, बालक न होय, वृद्ध न होय, खामी न होय, अन्तरसास न होय, धनवान होय, आलस्य रहित होय, नीरोगी होय, स्थिरता मैं सुख सूं बैठा होय ताके सैंतोस से तेहत्तरि सासोसासनि का काल एक मुहूर्त प्रमाण है।

अंतमुर्हूर्त्त काल विषैं छ्यासठि हजार तीनसैं छत्तीस क्षुद्रभव होइ, ताका यंत्र

नाम	एकेंद्री																	विकलत्रय				पंचेंद्री				
	पृथ्वीकाय			जलकाय			तेजकाय			पवनकाय			साधारण			प्रत्येक	योग	वेइंद्री	तेइंद्री	चौइंद्री	योग	सै	अ	म	ति	जोड
भेद	वा	सू	यो	सू	वा	यो	सू	वा	यो	सू	वा	यो	सू	वा	यो											
क्षुद्र भव	६०१२	६०१२	१२०२४	६०१२	६०१२	१२०२४	६०१२	६०१२	१२०२४	६०१२	६०१२	१२०२४	६०१२	६०१२	१२०२४	६०१२	६६१३२	८०	६०	४०	१८०	८	८	८	२४	६६३३६
उस्वास	३३४	३३४	६६८	३३४	३३४	६६८	३३४	३३४	६६८	३३४	३३४	६६८	३३४	३३४	६६८	३३४	३६७४	४ ८/१९८	३ ६/१९८	२ ४/१९८	१०	८/११८	८/११८	८/११८	१ ३/२४	३७७३

और छतीस से पिच्यासी सासोस्वास अर एक सास का तीसरा भाग इतना काल लगते क्षुद्रभवनि का भया। भावार्थ—यारा जामण मरण विषैं एक सास काल लागै है। सो छयाछठि हजार तीनसै छतीस जन्म मरण विषै पूर्वोक्त छतीस सै पिच्यासी सास अर सास का तीसरा भाग अधिक, एता काल अन्तमुहूर्त प्रमाण भया। जो एक सास मैं बारह बार मरै जन्मै, एक भी पर्याप्ति पूरी न करे सो अलब्ध पर्याप्तक जीव कहिए। भो वीतराग देव त्रिलोकनाथ आपको मैं नमस्कार करू हूँ। जैसे जन्म मरण रहित अविनाशी अवस्था कूं आप प्राप्त भए सो मोहि भी इन जन्म मरण के दु:खनिते उद्धारो, निजात्मा का अविनाशी पद की प्राप्ति करों।

— घातिया कर्मों की ४७ प्रकृतियां —

सवैया

मति श्रुत औधि मनपरजै केवलग्यान,
पंच आवरन ग्यानावरनी पंचभेद हैं ।
चक्खु औ अचक्खु औधि केवल दरस चारि,
आवरन चारि निद्रा निद्रानिद्रा खेद है ॥
प्रचला प्रचलाप्रचला थानगृद्धि नौ भेद,
दर्शनावरनी, मोह अठाईस भेद हैं।

दान लाभ भोग उपभोग बल अन्तराय,
पांच सब सैंतालीस घातिया निषेद हैं ॥६६॥

जे सर्वथा आत्मा के गुणनि कूं घातै ते घातिया कहिए। तिन घातिया कर्मनि की प्रकृति सैंतालीस हैं। तिनका व्यौरा। मूल प्रकृति च्यारि, तहां ज्ञानावरण की पांच, दर्शनावरण की नव, मोहनीय की अठाईस, अन्तराय की ५, ए च्यारि घातियानि की सैंतालीस प्रकृति तिनके भेदनि का व्यौरा।

मतिज्ञान नैं आवरै सो मतिज्ञानावरणीय। श्रुत ज्ञाननैं आच्छादन करै सो श्रुतज्ञानावरणीय। अवधि ज्ञान नैं आवरै सो अवधिज्ञानावरणीय। मनपर्यय ज्ञाननैं आच्छादन करै सो मनपर्ययज्ञानावरणीय। केवलज्ञान जो आत्मा का निजगुण ताहि आच्छादन करै सो केवल-ज्ञानावरणीय। ए पंच प्रकार आतमगुण घाती पांच आवरणनितैं ज्ञानावरणीय कर्म पांच भेद है। ज्ञानावरण कर्म की पांच प्रकृति हैं। प्रकृति नाम स्वभाव का है। नेत्रनितैं पदार्थनि की देखने की शक्ति ताहिं आवरै सो चक्षुदर्शनावरण। नेत्र इन्द्री विना और च्यार इन्द्रियनि तैं पदार्थनि का दर्शन पूर्वक जानने की शक्ति ताहि आवरै सो अचक्षु दर्शनावरणीय। अवधि करि देखने कूं आवरै सो अवधि

दर्शनावरणीय। केवल दर्शन कूं आवरै सो केवल दर्शनावरणीय। ए च्यारि दर्शन हैं तिनकूं आच्छादित करै सो च्यारि भेद तौ ए है। आलस्य, खेद का दूरि करणें का अर्थि सोवो सो निद्रा। निद्रा परि जागि जागि फिरि फिरि निद्रा को आवो सो निद्रानिद्रा। ए तौ खेद है खेद मेटने के अर्थि हैं। अर जो मुख तैं लार पडै, निद्रा आवै सो प्रचला। जो चालता निद्रा आवै आँखि खुलै नहीं, लार पडै सो प्रचलाप्रचला कहिए। जो निद्रा विषैं अशक्य कार्य करि लेवै, निद्रा दूरि भये यादि न रहे सो स्त्यानगृद्धि निद्रा। ए दर्शनावरणीय कर्म की प्रकृतिनि के नव भेद हैं। मोहनीय कर्म के भेद अठाईस हैं। सो जुदे २ अगिला कवित्त में हैं। तहाँ भेद दोय दर्शन चारित्र। तहाँ चारित्र मोह का भेद दोय कषाय, नो कषाय। तहाँ कषाय के भेद च्यारि। फिरि एकैक के च्यारि, नो कषाय के हास्यादिक ६, वेद ३, दर्शनमोह ३। देने की इच्छा दिया जाता नहीं सो दानांतराय। उद्यम करतैं भी लाभ नांही होय सो लाभांतराय। षट्रस व्यंजनादि होते भी भोग्या न जाय सो भोगांतराय। शय्या, आसन, यान, वसन इत्यादि होतैं भी भोगी न जाय सो उपभोगांतराय। बलकारी के खाते तैं शक्ति न बढै, शरीर क्षीण रोगी रहिवो करै सो वीर्यांतराय। ऐसे

अंतराय कर्म के पाँच भेद हैं। ए सब सैंतालीस प्रकृति घातियांनि की, सो इनके घाततैं अनंत चतुष्टय जा देव अर्हंत भगवान कै प्रगट भया ताकूं मेरा बारंबार नमस्कार है।

—: मोहनीय कर्म की २८ प्रकृतियाँ :—

अनंतानुबंधी औ अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी,
संज्वलन चारौं क्रोध मान माया लोभ हैं।
हास्य रति अरति सोक भय जुगुप्सा,
नारी नर षंढ पचीस चारित को छोभ है॥
मिथ्यात समै मिथ्यात समै प्रकृति मिथ्यात,
तीनौं दर्सनमोह दर्शन को चोभ है।
अठाईस मोहनीय जीवनिकौं मोहत हैं,
नासै जथाख्यात सम्यक् छायक सोभ है॥६७॥

अब मोहनीय कर्म की अठाईस प्रकृति तिनका मात्र नाम कथन।

अनन्त ससार कौं अनुबंधनैं कारण अनंतानुबंधी कषाय, संसार को नाशक जो सम्यग्दर्शन ताहि न होने दे, नरक निगोद को कारण है। और अप्रत्याख्यानी कषाय देश संयम न होने दे, सो तिर्यंच गति में ले जाय

इसका यह कारिज है। प्रत्याख्यानावरण कषाय महाव्रत न होने दे, अप्रमत्त गुणस्थान का परिणाम न होने दे। संज्वलन कषाय यथाख्यात चारित्र न होने दे सो देवगति मैं ले जाय। ए च्यारि कषाय के जुदे जुदै च्यारि भेद हैं। क्रोध स्वपर हिंसक परिणाम, विनय को घातक मान परिणाम, दगाबाज कपटाई लीया माया परिणाम, परिग्रह मैं आसक्त रूप लोभपरिणाम। असे कषायनि के च्यारि च्यारि मिलि सोला भेद भए। जाके उदै लोक हास्य करे सो हास्य प्रकृति है। परकौ देखि राग करै सो रति प्रकृति कहिए। जाके उदै परतैं द्वेष परिणाम होय सो अरति प्रकृति कहिए। जाके उदै सोक करे सो शोक प्रकृति कहिए। जाके उदै भय आवै सो भय प्रकृति कहिए। जाके उदै ग्लानि करे सो जुगुप्सा प्रकृति कहिए। पुरुष की अभिलाषा तैं स्त्री कहिए। स्त्री की अभिलाषा तैं पुरुष कहिए। दोन्यों की अभिलाषा तैं नपुंसक कहिए। ए पचीस कषाय चारित्र मोह की है। जातैं आत्मा को स्वरूपाचरण जो चरित्र गुण दोय प्रकार सम्यक्त्वाचरण, चारित्राचरण इन गुणनि कूं घातै है, आछादै है, ढांकै है। झूठ विषै साच माननां, औरनि कूं झूठा उपदेश देय बहकाना सो मिथ्यात्व। झूठ वा सांच एक एक रूप वा दोन्या रूप परिणाम होय सो सम्यमिथात्व कहिए। यह पोथी मेरी

है, यह मंदिर मेरा है, यह प्रतिमा मेरी है, तेरी यहाँ पूजा करो, उहां न करो, शान्तिनाथ सहाय करेंगे ऐसे परिणाम वरतै सो सम्यक्त्व प्रकृति कहिए। ए तीनौं प्रकृति दर्शन मोह की है सो जानना। सो ए तीनौं प्रकृति का उदय आत्मा को जो सम्यग्दर्शन गुण ताकूं घातै है, आछादे है, ढांकै है। सोलह कषाय और नव नोकषाय और तीन मिथ्यात्व सब अठाईस प्रकृति मोह की जाननी। सो मोह कर्म के उदय करि सब संसारी जीव मोहित होय रहे हैं। मतवाले की नाई सुरति बिसरि जाय है। अर जो तिस मोह कर्म का नाश करै तो यथाख्यात चारित्र और क्षायिक सम्यक्त्व साक्षात् प्रकट होय है। ऐसे गुणैं करिकैं सोभाग्यमान होय हैं। मोह कर्म का या भांति कथन जानना।

अघाती कर्मों की १०१ प्रकृतियां और आठ
कर्मों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति कथन।

साता औ असाता दोय वेदनी नरक पशु,
नर सुर आव च्यारि ऊँच नीच गोत है।
नाम की तिरानू एक सत एक अघातिया,
आदि तीन अंतराय थिति तीस होत है।
नाम गोत बीस मोहनी सत्तरि कोराकोरी,

दधि आउकी सागर तेतीस उदोत है।
वेदनी चौबीस घरी सोलै नाम गोत पांचौं,
अंतर मुहूरत, विनासैं ग्यान जोत है ॥६८॥

अब अघातिया कर्म च्यारि तिनके नाम—वेदनी की २ आयु की ४, नामकी ९३, गोत्र की २ ए च्यारि कर्म की एक सौ एक प्रकृति अघातिया हैं। तिन प्रकृति के नाम संक्षेप मात्र १०१ तथा आठौं कर्मनि की उत्कृष्ट जघन्य स्थिति का काल समुच्चय रूप व्याख्यान कथन कहिए है।

सुख कौं वेदै सो साता कहिए। अर दुख कौं वेदै सो असाता कहिए। यह वेदनीय कर्म की दोय प्रकृति जाननी। नरक आयु, तिर्यञ्च आयु, मनुष्य आयु, देव आयु, यह आयु कर्म च्यारि प्रकार जानना। ऊँच कुल विषैं उपजै सो ऊँच गोत्र, नीच कुल विषै उपजैं सो नीच गोत्र ऐसे गोत्र कर्म की दोय प्रकृति हैं। और नाम कर्म की तिराणवै प्रकृति हैं। ए च्यारौं अघातिया कर्मनि की जोडी हुई प्रकृति एक सौ एक है। वेदनी २ आयु की ४ गोत्र २ नाम की ९३। ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, ए तीन कर्म अरु अन्तराय कर्म इन च्यारौं कर्मनिका उत्कृष्ट स्थिति बन्ध तीस कोडाकोडी सागर प्रमाण हो है।

नाम कर्म गोत्र कर्म इनका उत्कृष्ट स्थिति बन्ध बीस कोडा कोडी सागर का हो है। मोहनीय कर्म का उत्कृष्ट स्थिति बन्ध सत्तरि कोडाकोडी सागर का हो है। आयु कर्म की उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागर का स्थिति बन्ध होता है। वेदनीय कर्म का जघन्य स्थितिबन्ध चौबीस घरी का कहिए। बारह मुहूर्त्त का है। एक मुहूर्त्त की दोय घरी, तातैं चौबीस घरी कही है। नाम गोत्र कर्मका जघन्य स्थितिबन्ध सोलह घरी का जो आठ मुहूर्त्त ताका है।

बाकी ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय, अन्तराय, आयु इन पांचौं कर्मनि का जघन्य स्थितिबन्ध अन्तमुहूर्त्त प्रमाण हो है। सो इन आठौं कर्मनि को च्यारि प्रकार बन्ध का सम्यग्ज्ञान जो केवल ज्ञान ज्योति ताके प्रभाव करि नाश होहै।

— नामकर्म की ६३ प्रकृतियां —

तन बन्धन संघात वर्ण रस जात पंच,
संस्थान संहनन षट आठ फास हैं।
गति आनुपूरवी है चारि दो विहाय गंध,
अंग तीनि पैंसठि ये त्रस थूल भास हैं।
पर्यापति थिर सुभ सुभग प्रतेक जस,
सुसुर आदेय दो दो निरमान स्वास हैं।

अपघात परघात अगुरु लघु आतप,
उदोत तीर्थंकर कौं बन्दौं अघनास है ॥६६॥

अब नाम कर्म की तिराणवै प्रकृति पहला कवित्त विषैं कही थी तिनका जुदा जुदा इस कवित्त विषैं ब्यौरा कहिए है।

औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्माण, ए पांच शरीर। औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्माण ए पांच बन्धन। औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्माण, ए पांच संघात। कालो, पीलो, हरचो, लाल, सुफेद, ए पांच वर्ण। खाटो, मीठो, कडो, कसायलो, तीखो, ए पाँच रस। एकेंद्री, वेइन्द्री, तेइन्द्री, चौइन्द्री, पंचेन्द्री ए पांच जाति हैं। ऐसे छह के तौ पांच पांच भेद हैं ते सब मिलि तीस भए। समचतुरस्र, न्यग्रोध-परिमंडल, वामन, कुब्जक, स्वातिक, हुण्डक, ए छह। बज्रवृषभ नाराच, वज्रनाराच, नाराच, अर्द्ध नाराच, कीलक, स्फाटिक ए ६। दोन्यौं के इकट्ठे किए हुए भेद बारह भए। तातो, सीलो, हलको, भारी, नरम, कठोर, लूखो, चीकणो ए आठ स्पर्श हैं। नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति ए च्यारि भेद गति के हैं। नरकगत्यानुपूर्वी तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी।

देवगत्यानुपूर्वी, ए च्यारि आनुपूर्वी हैं। ए दोन्यौं के जोडै आठ भेद भए। प्रशस्तविहायोगति, अप्रशस्त-विहायोगति ए चाल के भेद दोय। सुगन्ध, दुर्गंध, ए दोय गंध, ऐसे चारि भेद हैं। औदारिक अंगोपांग, वैक्रि-यिक अंगोपांग, आहारक अंगोपांग, ए तीन। ए पैंसठि पिंडप्रकृति है। अरु अठाईस अपिंड प्रकृति, ते कौनसी— त्रस स्थावर ए दोइ, बादर सूक्ष्म। अब ऐसैं ही आठ के दोय दोय भेद हैं। पर्यापत-अपर्याप्त, स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, सौभाग्य-दुर्भाग्य, प्रत्येक-साधारण जस-अपजस, सुस्वर-दुस्वर, आदेय-अनादेय, ए दोइ दोइ की बीस प्रकृति हैं। स्थाननिर्माण, प्रमाणनिर्माण, पवन का बाहरि निकलनां, आपतैं घात सो अपघात, परतैं घात सो परघात, न हलको न भारयो, सूर्यादिक विमाननि का आतप, चंद्रमादिक का विमान का उदोत, दर्शनविशुद्धि आदि षोडशकारण भावना तै तीर्थंकर प्रकृतिका बंध हो है। सो तीर्थंकर देव भगवान चौबीस जिन पाप के नाश करन हारै तिनकूं मैं नमस्कार करूं हूँ बंदै हौं।

—भाव त्रिभंगी कथन चौदह गुण स्थानों में ५३ भाव—

चौतिस बत्तिस तेतिस छत्तिस,
इकतिस इकतिस इकतिस मान।

अट्ठाइस अट्ठाइस बाइस,
बाइस वीस बार मैं थान ।
चौदैं तेरैं अंतिम थानक,
पंचभाव सिद्धालै जान ।
सम्यक्ज्ञान दरस बल जीवित,
निहचै सो तू आप पिछान ॥ ७० ॥

उपशम भाव भेद २, क्षायिकभाव भेद ६, मिश्रभाव भेद १८, औदयिक भाव भेद २१, पारिणामिक भाव, भेद तीन, ए मूलभाव ५ उत्तर भेद ५३ तिनका चौदह गुणस्थाननि विषैं जुदा जुदा ब्यौरा का कथन ।

पहला मिथ्यात गुणस्थान विषैं चौतीस भाव हैं। दूसरा सासादन गुणस्थान विषैं बत्तीस भाव हैं। तीसरा मिश्रगुणस्थान विषैं तेतीस भाव हैं। चौथा अव्रतगुणस्थान विषैं छत्तीस भाव हैं। पांचमा देशव्रत गुणस्थान विषैं इकतीस भाव हैं। छठा प्रमत्त गुणस्थान विषैं इकतीस भाव हैं। सातमां अप्रमत्त गुणस्थान विषैं इकतीस भाव हैं। आठमां अपूर्वकरण गुणस्थान विषैं अठाईस भाव हैं। नवमां अनिवृत्तिकरण गुणस्थान विषैं अठाईस भाव हैं। दशमां सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान विषैं बाईस भाव हैं।

ग्यारमां उपशांत मोह गुणस्थान विषैं इकवीस भाव हैं। बारमां क्षीणमोह गुणस्थान विषैं बीस भाव हैं। सयोग-केवली तेरमां गुणस्थान विषैं चौदह भाव हैं।

चौदह गुणस्थान विषैं त्रेपन भाव त्रिभंगी यंत्र

गुणस्थान	मि १	सा २	मि ३	अ ४	दे ५	प्र ६	अ ७	अ ८	अ ९	सू १०	उ ११	क्षी १२	स १३	अयोगी १४
भाव	३४	३२	३३	३६	३१	३१	३१	२८	२८	२२	२१	२०	१४	१३
अभाव	१९	२१	२०	१७	२२	२२	२२	२५	२५	३१	३२	३३	३९	४०
व्युच्छित्ति	२	३	०	६	२	०	३	०	३	२	२	१३	१	८

पांचों त्रिभगी का सामान्य यंत्र

गुणस्थान	मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ	सू	उ	क्षा	स	अयोगी
आश्रव	५५	५०	४३	४६	३७	२४	२२	२२	१६	१०	९	९	७	०
बंध	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१	१	०
उदय	११७	१११	१००	१०४	८७	८१	७६	७२	६६	६०	५९	५७	४२	१२
उदीरणा	११७	१११	१००	१०४	८७	८१	७३	६९	६३	५७	५६	५४	३९	०
सत्ता	१४८	१४५	१४७	१४८	१४६	१४६	१४६	१३८	१३८	१०२	१०१	१०१	८५	१३
भाव	३४	३२	३३	३६	३१	३१	३१	२८	२८	२२	२१	२०	१४	१

अंतका अजोग केवली गुणस्थान विषैं तेरह भाव हैं। और सिद्धालय विषैं सिद्ध परमेष्ठीनि कै पांच भाव जानने। ते पांचौं भाव कौन ? तिनकेनाम—क्षायिक सम्यक्त्व, केवलज्ञान, केवलदर्शन, अनन्तवीर्य, जीवित पारिणामिक का। निश्चयकरि सिद्धालय विषैं सिद्धनि के पांच भाव हैं। जैसे सिद्ध विराजै है तैसें तू निश्चयनय करि आपकौ जानि पिछानि। आत्मा ज्ञानमयी है।

—: जम्बूद्वीप के पूर्व पश्चिम का वर्णन :—

जम्बूद्वीप एक लाख मेरु दस ही हजार,
भद्रसाल वन दो सहस चवालीस के।
बाकी छयालीस आधौं आध दोन्यौं ही विदेह,
देवारण्य वन उनतीस सै बाईस के।
तीनौं नदी पौनैं चारि सत चारौं ही वखार,
दो हजार आठौं ही विदेह वच ईस के।
सत्तरै सहस सात सत तीनि जोजनके,
नमौं चारि तीर्थंकर स्वामी जगदीस के॥७१॥

जंबूद्वीप पूर्व पश्चिम दिशा तक एक लाख प्रमाण योजन लम्बा है, ताका जुदा जुदा ब्यौरा कहिए है।

जंबूद्वीप एक लाख योजन प्रमाण लंबा है। ताके विभाग बटवारा इस भांति हैं। जमीन पैं सुमेरुगिरि पर्वत दश हजार योजन का मोटा चौड़ा है, दीर्घ है। अर पूर्व पश्चिम के दोन्यौं भद्रशालवन प्रत्येक बाईस२हजार योजन के लम्बे हैं। तिन दोऊ भद्रशालनि की लम्बाई मिली हुई चवालीस हजार योजन की भई। अर मेरु की लंबाई दशहजार योजन की मिलें मेरु भद्रशालनि विषैं मेरुसहित चौवन हजार योजन की लंबाई भई। बाकी लाख योजन विषैं चौवन हजार मेरु भद्रशालनिमें रुके पीछें छीयालीस हजार योजन रहे। ते आधे तेईस हजार तौ पूर्वदिशा विषैं अर आधा तेईस हजार ही योजन पश्चिम दिशा विषैं रहे। तहां आठ विदेह दक्षिण की अरु आठ विदेह उत्तर की। ए पूर्वदिशा की आठ विदेह तिनकी पूर्व पश्चिम लंबाई जुड़ी हुई। अर देवारण्य वन तौ पूर्व दिशा विषैं लंबो अर भूतारण्य वन पश्चिमदिशा विषैं लम्बो सो दोऊ वननि की लम्बाई समान है।

ते प्रत्येक जुदे जुदे दोन्यौं वन गुणतीस सै बाईस योजन के लंबे हैं। तिनकी जुड़ी हुई लंबाई पांच हजार आठसै चवालीस योजन की लंबाई भई। पूर्वदिशा देवारण्य २९२२, पश्चिम दिशा भूतारण्य २९२२ जोड़ ५८४४ योजन। और तीनौं विभंगा नदी पूर्वदिशा संबंधी

पौंणा च्यारि सै योजन लंबी, पश्चिमदिशा की तीनौं विभंगा नदी ३७५ योजन, जोड साडा सातसै। अर पूर्व-दिशा के च्यारौं वक्षार गिरि पर्वतन की जुडी हुई लंबाई दोय हजार योजन की। पश्चिम का च्यारौं वक्षार भी लम्बा दोय हजार योजन और आठौं विदेह पूर्व दिशा के अर आठौं ही विदेह पश्चिम दिशा की इनकी लम्बाई जुदी २ जिनेन्द्र भगवानके वचनते (इतनीजाननी)। सतरा हजार सातसै तीन योजन के लम्बे पूर्व विदेह। अर इतने ही लम्बे पश्चिम के विदेह। जौड़ पैंतीस हजार च्यारि सै छह योजन। सर्व जोड मेरु १००००, भद्रशाल ४४०००, विदेह ३५४०६, वक्षार गिरि ४०००, विभंगा ७५०, देवारण्य भूतारण्य ५८४४ = जोड एक लाख योजन को भया।

सो जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र विषैं विद्यमान वर्त्तमान च्यारि तीर्थंकर देव श्रीमंधरजी, युग्मंधरजी, दोय तो पूर्वके बाहुजी सुबाहुजी ए दोय पश्चिम के तिनकूं मैं नमस्कार करूहूं। कैसे हैं तीर्थङ्करदेव, तीन जगत के ईश जे इन्द्र धरणेन्द्र चक्रवर्ती तिनके स्वामी हैं। तीन लोक के सब ही जीव जिन तीर्थङ्करनि के चरणारविन्दनिकूं सेवैं हैं।

— जम्बूद्वीप के दक्षिण उत्तर का वर्णन —

जंबूद्वीप दक्षिण उत्तर लाख जोजन को,
भाग एक सौ नब्बै एक भरत भाइए।
दोय हिमवान सोल च्यारि हेमवन्त खेत,
महा हिमवान आठ सोलै हरि गाइए।
बत्तीस निषध ए तिरेसठि उधै त्रेसठ,
बीचि मैं विदेह भाग चौसठि बताइए।
भाग पांच सै छब्बीस कला छह उन्नीस की,
अठत्तरि चैत्यालय सदा सीस नाइए ॥७२॥

जम्बूद्वीप दक्षिण उत्तर लाख योजन का है तिमका जुदा २ ब्यौरा का सामान्य कथन, विशेष सिद्धान्तसारतैं जानना।

जंबूद्वीप दक्षिण उत्तर लाख योजन का चौडा है तिसका ब्यौरा इस भांति है। तिस लाख योजन के एक सौ निवै भाग करिये वा टूक करिए वा खंड करिए। सो तिन विषैं एक खंड प्रमाण दक्षिण उत्तर चौडा भरत क्षेत्र, अर्थात् पांच सै छब्बीस योजन छह कला का जानना, ५२६ $\frac{६}{१९}$। इहां एक योजन के उगणीस वट मैं, एक वट की एक कला है। इहाँ एक योजन की उगणीस

कला है । हिमवान पर्वत दोय भाग का चौड़ा है । सो एक हजार बावन योजन बारा कला को चौडो जाननो । १०५२$\frac{१२}{१९}$ । और च्यारि भाग प्रमाण हैमवतक्षेत्र चौडा है तहां जघन्य भोगभूमि है । सो दोय हजार एक सौ पांच योजन पांच कलाका जानना २१०५$\frac{५}{१९}$ । महाहिमवानपर्वत ८ भाग का चौड़ा है । सो च्यारिहजारदोयसैदश योजन दश कला का जानना ४२१०$\frac{१०}{१९}$ । सोला भाग प्रमाण हरिक्षेत्र चौड़ा है । तहां मध्यम भोगभूमि है सो आठ हजार च्यारि सै इकवीस योजन एक कला का जानना ८४२१$\frac{१}{१९}$ । बत्तीसभाग प्रमाण निषिद्धाचल पर्वत चौड़ो है । सो सोला हजार आठसै बीयालीस योजन, दोय कला का जांनना १६८४२$\frac{२}{१९}$ । इस भांति त्रेसठि भाग विदेहतैं दक्षिण की ओरके जानने । सब इकट्ठे योजन ३३१५७$\frac{१७}{१९}$ । इस ही भांति त्रेसठि भाग उत्तर के जानने तिनके एकठे कीए योजन ३३१५७$\frac{१७}{१९}$ । निषिद्ध अर नीलगिरि के बीचि विदेहक्षेत्र है सो चौसठि भाग चौड़ा है । सो तेतीस हजार छसै चौरासी जोजन च्यारि कला का है । ३३६८४$\frac{४}{१९}$ ।

पांचसै छब्बीस योजन छह कला का भरतक्षेत्र सो तौ पहला एक भाग का । तहांतैं विदेह तक क्षेत्र तैं तौ क्षेत्र चौगुणा चौडा, पर्वततैं पर्वत चौगुणा चौड़ा है । अर एक एक योजन के उगणीस भाग कीजे तिनमैं एक भाग का

नाम एक कला । छह भाग की छह कला । ऐसे जंबूद्वीपकै बीचि वीतराग देव के अठहत्तरि चैताले सास्वते हैं । तहां मेरुके १६, गजदंत ४, कुलाचल ६, वक्षार १६, विजयार्द्ध ३४, जंबू साल्मली वृक्ष के २ ए ७८ तिननै मेरा नमस्कार होऊ तिन चैत्यालयानि कूं सदाकाल मस्तक नमाइए नमस्कार करिए ।

जंबू द्वीप दक्षिण उत्तर लाख जोजन चोडाई का व्योरा को जंत्र

भरत	हिमवान	हैमवत	महा हिमवान	हरि	निषिध	विदेह	नील	रम्यक	रुक्मी	हैरण्य	शिखरी	ऐरावत	जोड
१	२	४	८	१६	३२	६४	३२	१६	८	४	२	१	१९०
५२६ $\frac{६}{१९}$	१०५२ $\frac{१२}{१९}$	२१०५ $\frac{५}{१९}$	४२१० $\frac{१०}{१९}$	८४२१ $\frac{१}{१९}$	१६८४२ $\frac{२}{१९}$	३३६८४ $\frac{४}{१९}$	१६८४२ $\frac{२}{१९}$	८४२१ $\frac{१}{१९}$	४२१० $\frac{१०}{१९}$	२१०५ $\frac{५}{१९}$	१०५२ $\frac{१२}{१९}$	५२६ $\frac{६}{१९}$	१०००००

—: अधोलोक के श्रेणीबद्ध बिलों की संख्या :—

सात नर्क भूमि उनचास पाथडे निवास,
इन्द्रक भी उनचास बीच मांहि बिले हैं ।
पहिलो सीमंत चारि दिशा सेनी उनचास,
चारि विदिशा में अठताली भेद निले हैं ॥

आठ दिस सेनीवद्ध तीनसै अठासी भए,
आठ आठ आगै घटे अंत च्यारि मिले हैं।
सब छानवैं सै च्यारि जोजन असंख धारि,
दया धरैं धर्म करैं तिन्हैं दुख गिले हैं ॥७२॥

अधोलोग विषैं नारकीनि के विले श्रेणीवद्ध और इन्द्रक तिनकी गिनती की संख्या का कथन। सो वे विलें आंधे कूवे कै आकार हैं। और नरक का कथन विशेषरूप त्रिलोकसारजी तैं देखि लेना। इहां इसी गिनती माफिक कथन है।

नरक की भूमि सात है पहली रत्नप्रभा, दूजी शर्करा-प्रभा, तीजी वालुकाप्रभा, चौथी पंकप्रभा, पांचमी धूमप्रभा, छठी तमप्रभा, सातमी महातमप्रभा, ए सात हैं। इन सातौं नरकनि के गुणचास पटल हैं। पहलै १३, दूजै ११, तीजै ९, चौथे ७, पांचवै ५, छठै ३, सातवैं १, इस भांति गुणचास पटल हैं। तिन गुणचास पाथडेनि कै बीचि एक गोल विला है तिनका नाम इन्द्रक विला है। ते इन्द्रक विलाभी गुणचास ही जानने। तहां प्रथम नरक का तेरा पाथडानि विषैं पहले सीमंतक नामा इन्द्रक विलो है, सो पैंतालीस लाख योजन चौरो हैं। ता सीमन्तक इन्द्रक की च्यारौं दिशा विषैं श्रेणीबद्ध विमान प्रत्येक २

गुणचास २ हैं ते च्यारौं दिशानि के एक सौ छिनवे हैं। और ताही सीमन्तक बिला की च्यारौं विदिशानि विषैं श्रेणीबद्ध प्रत्येक २ गुणचास २ हैं। ते च्यारौं दिशानि के एक सौ छिनवै है। और ताही सीमन्तक बिला की च्यारौं विदिशानि विषै श्रेणीबद्ध प्रत्येक प्रत्येक गुणचास गुणचास हैं। ते एक २ घाटि अडतालीस २ हैं। ते सर्व एक सौ बाणवै हैं। सो च्यारि दिशा के १९६ अर च्यारो विदिशा के १९२ सब मिलि प्रथम सीमंतक पटल के श्रेणीबद्ध तीनसै अठ्यासी है। ते चौकोर हैं, असंख्यात असंख्यात जोजन के लंबे चौडे हैं अर इनके परस्पर असंख्यात जोजन का अन्तर है। पंक्तिरूप है। तातैं इनका नाम श्रेणीबद्ध है।

आगै एक एक पटल विषै आठ २ श्रेणीबद्ध बिले घटे ते अठतालीस ठौर घटि अन्त का सातवां नरक विषैं अंत को एक ही अवस्थान नामा पटल है। तामैं दिशा के च्यार श्रेणीबद्ध बिले रहे, विदिशा विषैं नाही। तहां इन्द्रक सहित केवल पांच ही बिले हैं। इन्द्रक बिलो लाख योजन को है। श्रेणीबद्ध ४ असंख्यात जोजन के हैं। ते गुणचासौं इन्द्रक के मिले हुए श्रेणीबद्ध छिनवै सै च्यारि, ते सब ही श्रेणीबद्ध बिले असंख्यात जोजन के लम्बे चोड़े हैं।

भावार्थ—इन्द्रक बिले तौ संख्यात जोजन के लम्बे हैं, गोल है। श्रेणीवद्ध असंख्यात जोजन के हैं चौकोर हैं। प्रकीर्ण संख्यात के भी असंख्यात के भी गोल चौकोर आदि अनेक सस्थान के हैं। यह सिद्धांत का वाक्य है।

जे जीव इन बिलानि कूं महादुःख के भरे जानि चित्त विषें दया भाव करै हैं अर जिनेंद्र भगवान को भाख्यो दया प्रधान धर्म ताको सेवन करै हैं, ते ही नरकनि के दुःखनि का नाश करैं हैं।

—: उर्ध्वलोक के श्रेणीवद्ध विमान :—

ऊरध तिरेसठि पटल कहे आगममैं,
त्रेसठ ही इंद्रक विमान वीचि जानिए।
पहिलौ जुगल ताके पहिले को रिजु नाम,
जाकी चारि दिशा सैणि बासठि प्रमानिए॥
चारों दोसै अडतालीस आगें घटे चारि चारि,
अंत रहे चारि ऊँचे चारि ठीक ठानिये।
सैनी बंध ठंतर सै सोलै जोजन असंख,
सिद्ध बारै जोजन पै ध्यान माहिं आनिये॥७४॥

अब उर्द्ध लोक के सौधर्म स्वर्ग आदिदे सर्वार्थसिद्धि पर्यंत त्रेसठि पटल, तिनके श्रेणीबद्ध विमाननि का जोड़

रूप विधान कहै है। सौधर्मद्विक ३१, सनतकुमारद्विक ७, ब्रह्मब्रह्मोत्तर ४, लांतव २ शुक्र १, सतार १, आनत ४, ग्रैवेयक ६, अनुदिश १ अनुत्तर १, ऐसे त्रेसठि पटल का कथन।

उद्ध्र्वलोक के त्रेसठि पटल जिनागम विषैं कहे हैं सो तिन त्रेसठि पटलनि कै बीचि त्रेसठि ही इन्द्रक विमान जानने। एक एक पटल कै बीचि एक एक इन्द्रक है। ऐसे त्रेसठि प्रथम जुगलविषैं इकतीस पटल। तहाँ पहला को नाम ऋजु विमान है, सो पैंतालीस लाख योजन को लंबो चौडो ढाई द्वीप समान है। सो मेरुगिरि का शिखर परि एक बालकै अंतर विराजै है। ता रिजु विमान की च्यारौं दिशा विषैं श्रेणी विमान प्रत्येक बासठि बासठि हैं। सो च्यारौं दिशा के जोड़ दिए दोय सै अड़तालीस श्रेणीबद्ध विमान भए। आगै ऊपरि ऊपरि एक एक पटल विषैं च्यारि च्यारि श्रेणीबद्ध विमान घटे हैं, एक एक दिशा विषैं एक एक विमान घट्यो, तब ४ दिशा का मिलि च्यारि घटे। अंत त्रेसठिवो सर्वार्थसिद्धिनामा पटल ता विषैं च्यारि श्रेणीबद्ध रहे। अर उपांत बासठिवो आदित्य नामा पटल ता विषैं भी च्यारि ही श्रेणीबद्ध विमान रहे। बासठवां पटलतैं अंत का त्रेसठिवां पटल मैं श्रेणीबद्ध

न घटे, ज्योंके त्यौं च्यारि ही रहे। बीचि मैं इन्द्रक सर्वार्थ-सिद्धि एक लाख योजन को लंबो जम्बूद्वीप समान है।

सब त्रेसठि पटलनि के श्रेणीवद्ध सात हजार आठसैं सोला जोड़ दीए भए। ते सब असंख्यात जोजन के लंबे चौड़े चौकोर हैं। जोड़ देने का विधान ऐसाः—जो आदि तौ २४८ अर अन्त बासठिवां पटल के ४, इन दोन्यौंकौ जोडे दोयसै बावन, आधा कीये १२६, ताकौ बासठि गुणां कीए ७८१२, त्रेसठिवां का च्यारि मिलाए, जोड़ ७८१६ श्रेणीवद्ध जानने। अरु अन्त का सर्वार्थसिद्धि पटलतैं ऊपरि बारह योजन गए सिद्धालय है। तहां अनंते सिद्ध परमेष्ठी विराजै हैं। तिनका ध्यान करिये, चित्त विषै स्मरण करिये।

—त्रेसठ इंद्रक विमान का वर्णन—

पैंतालीस लाख को है इंद्रक रिजू विमान,
सर्वारथसिद्धि अंत एक लाख का कहा।
चवालीस घटे हैं तेसठि मैं वासठि ठौर,
ऊंचे ऊंचे एक एक केता घटती लहा॥
सत्तर हजार नौसै सतसठि योजन है,
तेइस अधिक भाग इकतीस का गहा।

तेसठ इंद्रक नाम तेसठ ही जिनधाम,
वंदौं मन वच काय तिनकी सोभा महा ॥७५॥

अब त्रेसठि इन्द्रक विमाननि की चौडाई का नाम जुदा २ व्यौरा का कथन ऊपरि ऊपरि जानना।

मेरू की चूलिका तैं बाल कै आंतरै सौधर्म इन्द्र की पहली सभा ऋजु विमान है। सो ४५००००० योजन को है। अढाई द्वीप समान पैंतालीस लाख योजन को चौरो गोल ऋजु विमान है। अर अंतको त्रेसठिवों इंद्रक विमान सर्वार्थसिद्धि है सो जंबू द्वीप समान एक लाख योजन प्रमाण लंबो है। सो त्रेसठवां इन्द्रक विषैं चवालीस लाख घटे एक लाख योजन की चौडाई रही। तो बासठि ठोरा ऋजु विमान बिना कितना कितना घट्या, बासठि ठोर जिसका विधान ऐसा जो—अंत का १००००० आदि ४५००००० मैं घटाये ४४००००० भए। तिनकौं हाणि के ठिकाणे बासठि ताका भाग दिए जो प्रमाण आवै सो ही ऊपरि ऊपरि घटती घटती इंद्रकौं की चौडाई है। सो एक एक प्रति सत्तरि हजार नोसै सड़सठि योजन अर एक योजन के इकतीस वट कीजे तामैं तेईस वट लीजै इतना ७०९६७$\frac{23}{31}$ घटती का प्रमाण जानना।

इन त्रेसठि इंद्रक विमाननि कै बीचि सास्वते त्रेसठि

ही जिनमंदिर हैं। तिननैं मन वचन काय करि नमस्कार करौं हैं। तिनकी सोभा महा रमणीक है, मुख तैं कहीं न जाइ है।

—लवणोदधि के १००८ बडवानल का कथन—

सवया ३१

लवणोदधि बीच चारि दिसामांहि चारि कूप,
कहे हैं मृदंग जेम तिनिकौ प्रमान है।
पेट और ऊँचे एक एक लाख जोजन के,
नीचैं औ मुख ताकौ दस हजार मान है॥
चारि विदिसा मैं चारि पेट और ऊँचो दस,
हजार एक नीचो औ मुख कौ बखान है।
अन्तर दिसा हजार पेट ऊँचो हैं हजार,
नीचैं और मुख सौकै धन्य जैनग्यान है॥७६॥

लवणोदधि समुद्र दोय लाख योजन का चौडा है और हजार योजन का ऊंडा है। ता लवणोदधि के वीचि एक हजार और आठ बडवानल हैं, तिनका नाम मात्र कथन।

लवण समुद्र कै वीचि च्यारि दिशा विषैं च्यारि बडवानल है, सो उत्कृष्ट हैं। तिनका आकार मृदंग

लवण समुद्र विषै १००८ पाताल तिनकी ऊंचाई का जंत्र

नाम	पूर्वदिशा	अंतर दिशा	अग्नि विदि	अंतर दिशा	दक्षिण दिशा	अंतर दिशा	नैऋत्य	अंतर	पश्चिम दिशा	अंतर	मरुत	अंतर	उत्तर	अंतर	ईशान	अंतर
ऊंचाई	१	१२५	१	१२५	१	१२५	१	१२५	१	१२५	१	१२५	१	१२५	१	१२५
	यो. १०००००	१०००	१००००	१०००	१०००००	१०००	१००००	१०००	१०००००	१०००	१००००	१०००	१०००००	१०००	१००००	१०००
चौडाई मध्य	यो. १०००००	१०००	१००००	१०००	१०००००	१०००	१००००	१०००	१०००००	१०००	१००००	१०००	१०००००	१०००	१००००	१०००
तलै ऊपरि चौडा	यो. १००००	१००	१०००	१००	१००००	१००	१०००	१००	१००००	१००	१००००	१००	१०००	१००	१००००	१००
ऊर्ध्व भाग	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल
मध्य भाग	प. ज.	प. ज.	प. ज.	प. ज.	प. ज.	प. ज.	प. ज.	प. ज.	प. ज.	प. ज.	प. ज.	प. ज.	प. ज.	प. ज.	प. ज.	प. ज.
अधोभाग	पवन	पवन	पवन	पवन	पवन	पवन	पवन	पवन	पवन	पवन	पवन	पवन	पवन	पवन	पवन	पवन

समान है। बीचि मैं पेट की चौड़ाई रूप और तलैं तैं ऊपरि तक ऊँचाई रूप एक एक लाख योजन के हैं। मध्य चौड़ाई १००००० ऊँचाई १००००० । और तलैं नीचैं ऊपरि मुख मैं दस दस हजार योजन के चौड़े हैं, तलैं १०००० मुख १०००० । और लवणोदधि कै बीचि च्यारि विदिशानि विषैं च्यारि बड़वानल हैं। तिनका पेट और ऊँचाई तौ दश हजार योजन की है; पेट योजन १०००० ऊँचाई १०००० योजन। अर तलैं को मुख अर ऊपरि को मुख इनकी चौड़ाई एक एक हजार योजन की है, तलै मुख १००० ऊपरि मुख १०००। और आठौं दिशानि कै बीचि आठ अंतर दिशा, तिन विषैं एक हजार हैं। एक एक के एक सौ पचीस तब आठौं के सब १००० । तिनका पेट और ऊँचाई एक हजार योजन की है, पेट योजन १०००, ऊँचाई योजन १०००। अर तिनके नीचैं का और ऊपरि का मुख सौ सौ योजन का चौड़ा है, तलै १०० ऊपरि १०० । जिनेन्द्र भगवान का ज्ञान विषैं कही है सो ज्ञान धन्य है।

—: प्रकृतियों का बंध और उदय :—

देवगति आउ अनुपूरवी प्रकृति तीन,
वैक्रियक अंग आहारक अंग चारि हैं।

अजस ए आठौं ऊंचें बंधें नीचें उदै देहिं,
संजुलन लोभ विना पंद्रै निहार हैं ॥
हास रति भै गिलानि नर वेद नर आउ,
सूखम अपर्जापत साधारण धार हैं ।
आतप मिथ्यात ए छबीस बंध उदै साथ,
नीचें बंध ऊँचें उदै छीयासी विचार हैं ॥७७॥

आठ प्रकृति ऊपरि के गुणस्थाननि विषैं बंधै नीचैं उदय आवैं। और छबीस प्रकृति जिस गुणस्थान विषैं बंधै तहाँ ही उदय आवें। और बाकी की रही प्रकृति छियासी सो नीचें के गुणस्थान विषैं बंधै ऊपरि के गुणस्थान विषैं उदय आवै। तिनका सबनिका जुदा जुदा व्योरा इस कवित्त विषैं कहै हैं।

देवगति, देवायु, देवगत्यानुपूर्वी ए तीन प्रकृति जाननी। वैक्रियक शरीर १, वैक्रियिक अंगोपांग १ ए दोय; आहारक शरीर, आहारक अंगोपांग ए दोय, मिलि करि च्यारि भई। अजस प्रकृति। ए आठौं प्रकृति ऊपरि के गुणस्थाननि विषैं बंधैं हैं, नीचैं के गुणस्थाननि विषैं उदय आवैं हैं।

संज्वलन लोभ विनां पंद्रा तौ कषायः—अनंतानुबंधी

४, अप्रत्याख्यानी ४, प्रत्याख्यानी ४, संज्वलन ३, क्रोध १ मान १ माया १ ए तीन सब मिलि पंद्रा भई। हास्यादिक में चारः—हास्य, रतिनोकषाय. भयनोकषाय, जुगुप्सा। पुरुषवेद, मनुष्यआयु, सूक्ष्म, अपर्याप्त प्रकृति, साधारण प्रकृति, आताप प्रकृति, मिथ्यात्व प्रकृति, ए छब्बीस प्रकृति जिस जिस गुणस्थान विषैं बंधै तिस तिस गुणस्थान विषै ही उदय आवै।

बाकी रही छीयासी प्रकृति, तिनमें ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ६, वेदनीय २, गोत्र २, अंतराय ५, मोहनी चारित्र मोह की है ताकी ५, आयु २, नामकर्म की ५६, तिनका ब्यौरा-गति ३, आनुपूर्वी ३, जाति ५, शरीर ३ अंग १ उदारिक, वर्णादिक ४, संस्थान ६, संहनन ६, निर्माण १, अगुरुलघु १, अपघात १, परघात १, स्वास १, उद्योत १, चाल २, वादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १ जस १, स्थिर २, शुभ २, सौभाग्य २, त्रस २, तीर्थंकर १, आदर २, सुस्वर २। इन छीयासी प्रकृतिनिका बंध नीचैं के गुणस्थाननि में होय अरु उदय ऊँचे के गुणस्थाननि में होय।

ज्ञानावरण ५, अन्तराय ५, दर्शनावरण ४, इन चौदह प्रकृतियों का बंध दशमां गुणस्थान पर्यंत है उदय बारमां का अंत समय पर्यंत है।

यशकीर्ति और ऊँच गोत्र इनको बंध दशमां लौं (तक) है, उदय चौदमां का अंत पर्यंत है।

साता वेदनी को बंध तेरमां पर्यंत है, उदय चौदमां लौं है। असाता वेदनी को बंध छठा पर्यंत है, उदय चौदहमां पर्यंत है।

नीच गोत्र को बंध पहला में ही है उदय पांचमां लौं है।

नपुन्सकवेद को बंध पहले में ही है, उदय नवमां का वेद भाग (चौथा) लौं है।

स्त्री वेद का बंध दूजा लौं है उदय नवमां का वेद भाग लौं है।

संज्वलन लोभ को बंध नवमां पर्यंत है, उदय दशम पर्यंत है।

अरति, शोक, इनको बंध छठा पर्यंत है, उदय आठमां लौं है।

निद्रा, प्रचला, इनको बंध आठमां अपूर्वकरण का प्रथमभाग पर्यंत है, उदय क्षीणकषाय का उपांत समय पर्यंत है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि इनका बन्ध दूजा लौं है, उदय छठा पर्यंत है।

नारकायु को बन्ध पहलेमें ही है, उदय चौथा पर्यंत है। तिर्यग्गायु को बन्ध दूजा पर्यंत है, उदय पांचमां पर्यंत है। मनुष्यायु को बन्ध चौथा पर्यंत उदय चौदमां पर्यंत है।

नरकगति, तथा आनुपूर्वी, इनको बन्ध पहलै में ही है अर उदय चौथा लौं हैं। तिर्यग्गति, तथा आनुपूर्वी इनको बन्ध दूजा लौं, उदय आनुपूर्वी को चौथा लौं है, अर गति को उदय पंचम लौ है।

मनुष्यगति को बन्ध चौथा लौं है उदय चौदमां गुणस्थान पर्यंत है।

विकल चार (एकेन्द्रिय, दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौइन्द्रिय) को बन्ध पहलै में है, उदय दूजा लौं है।

औदारिक शरीर, औदारिक अंगोपांग, इनको बन्ध चौथा लौं, उदय चौदहमां का उपांत समय पर्यंत है।

पंचेंद्री को बन्ध अपूर्वकरण का छठा भाग पर्यंत है उदय चौदमां लौ है।

तैजस, कार्माण को बन्ध आठमां का छठा भाग लौ है, उदय चौदमां का उपांत समय पर्यंत है।

स्पर्श, रस, गंध, वर्ण इन चार को बंध आठमां का छठा भाग लौं है, उदय तेरमां का उपांत समय पर्यंत है।

हुण्डक को बंध पहलै में ही है। कुब्जक, वामन, स्वातिक, न्यग्रोध परिमंडल, इन चारका बंध दूजा लौं अर समचतुरस्र को आठमां का छठा भाग पर्यंत है। अर संस्थान (छहोंका) उदय तेरमां लौ है।

वज्रवृषभनाराच का बंध चौथा लौं, वज्रनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलित, इनका दूजा लौं, असंप्राप्त सृपाटिका को पहले ही में बंध है। अर अंत का तीन संहनन को उदय सातमां लौं है। नाराच अर वज्रनाराच को ग्यारमा लौं है। बज्रवृषभनाराच को तेरमां लौं है।

निर्माण को बन्ध आठमां का छठा भाग लौं है, उदय तेरमां लौं है।

अप्रशस्तगति को बन्ध दूजा लौं है। प्रशस्त को आठमां का छठा भाग लौं है। अर दोऊँ का उदय तेरहवें सयोग पर्यन्त है।

उद्योत को बंध दूजा लौ, उदय पंचम लौं है।

अगुरुलघु, उपघात, परघात, उछ्वास इन चार को बंध आठमां का छठा भाग लौं है, उदय तेरहमां लौं है।

थावर को बन्ध पहलैं ही में है, उदय दूजा लौं है।

त्रस, बादर, पर्याप्त इनको बन्ध अपूर्वकरण का छठा भाग लौं है, अर उदय चौदमां लौं है।

प्रत्येक शरीर को बंध आठमां का छठा भाग लौ है, उदय तेरमां लौं है।

अस्थिर, अशुभ, इन दो को बन्ध छठा गुणस्थान पर्यंत है, उदय तेरमां लौ है।

स्थिर, शुभ, इनको बंध आठमां का छठा भाग लौं, उदय तेरमां लौ है।

दुर्भग, दुस्वर, अनादर, इन ३ को बन्ध दूजा लौं, उदय तेरमां लौ है। सौभाग्य, आदर, इनका बन्ध आठमां का छठा भाग लौ, है, उदय चौदमां लौ है। सुस्वर को बन्ध, आठमां का छठा भाग लौं उदय तेरमां लौ है। तीर्थंकर प्रकृति को बंध चौथा तैं लेइ आठमां का छठा भाग पर्यंत है, उदय चौदमां पर्यंत है।

—: पंच परावर्तन का स्वरूप :—

भाव परावर्तन अनंत भाग भव काल,
भव परावर्तन अनंत भाग काल है।
काल परावर्तन अनंत भाग खेत कह्यो,
खेत को अनंत भाग पुग्गल विशाल है॥
ताको आधो नाम अर्द्ध पुग्गल परावर्तन,
फिरनौ रह्यो है योही ज्ञानी ज्ञान भाल है।
ताही समैं सम्यक् उपजवे को जोग भयो,
और कहा समकित लरकों का ख्याल है ॥७८॥

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव, भाव, ए पांच परावर्तन संसार विषैं मिथ्यादृष्टि जीव करै है। पांचौं परावर्तन अनंत कीये

परंतु तिनका अल्पबहुत्वपना का कथन, अनंत मांहि है जातैं अनंत के अनंत भेद हैं। कषायाध्यवसाय स्थान, अनुभागबन्धाध्यवसाय स्थान, जोग स्थान, स्थिति स्थान, ऐसें परिणामनि की प्रचुरता बहुलता ताका नाम भाव परावर्तन है। सो तिस भाव परावर्तन तैं अनंतवैं भाग भव परावर्तन और काल परावर्तन जानने।

च्यारौं गति का जामन-मरण, जघन्य तैं उत्कृष्ट तक करै। नरकगति जघन्य दस हजार वर्ष, उत्कृष्ट तेतीस सागर। तिर्यञ्च मनुष्य दोऊ गति का जघन्य अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट तीन पल्य। देवगति जघन्य दश हजार वर्ष, उत्कृष्ट नवम ग्रैवेयक मैं इकतीस सागर, सो भावकै अनंतवैं भाग याका काल है। एक भाव मैं अनंत भव परावर्तन होय जाय हैं। अर भव परावर्तन कै अनंतवैं भाग काल परावर्तन का काल है। सो वीस कोड़ा कोड़ी सागर का कल्पकाल, ताके उत्सर्पणी, अवसर्पणी दोय भेद। तहां उत्सर्पणी का प्रथम समय ते लेय अवसर्पणी का अंतका समय ताई वीस कोड़ा कोड़ी सागर के जितने समय तिनकूं अनुक्रमतैं जन्म-मरणतैं पूरण करै, ताका नाम काल परावर्तन है। ते कालपरावर्तन एक भवपरावर्तन मैं अनन्ते होय हैं। तातैं कालपरावर्तन को काल भवकै अनन्तवैं भाग। अर काल परावर्तनकै अनंतवै भाग क्षेत्र

परावर्तन है। सो दोय प्रकारः—स्वक्षेत्र परावर्तन, परक्षेत्र परावर्तन। तहां सूक्ष्म निगोदिये अलब्ध पर्याप्तो ताकी जघन्य अवगाहना घनांगुल कै असंख्यातवैं भाग तासूं लेय करि हजार जोजन लंबो, पांचसै चौड़ो अढाईसै ऊँचो, मच्छ ताकी अवगाहनां तक एक एक प्रदेश बधती अवगाहनां अनुक्रमतैं पूर्ण करै सो स्वक्षेत्र परावर्तन। दूजो परक्षेत्र परावर्तन, जो मेरू को जड़ तलैं मध्यमैं आठ प्रदेश है तिन आठ प्रदेशनिको अपने शरीर के आठ मध्य प्रदेश मानि जघन्य अवगाहना धारण करि, जितने आत्मप्रदेश हैं उतनी बार जन्म-मरण करे। पीछैं एक एक प्रदेश सरकि २ क्रमशः तीन लोक के असंख्यात प्रदेशनि मैं जामन-मरण कर पूर्ण करै सो परक्षेत्र परावर्तन। सो दोन्या को इकठो क्षेत्र परावर्तन एक है। सो एक काल परावर्तन मैं अनंत क्षेत्र परावर्तन हो है। तातैं काल कै अनंतवैं भाग क्षेत्र परावर्तन को काल है।

और क्षेत्र परावर्तन कै अनंतवैं भाग पुद्गल परावर्तन का काल है। ताके दोय भेद हैं नोकर्म पुद्गल परावर्तन, कर्मपुद्गल परावर्तन, ए दोय। तहाँ नो कर्म की पुद्गल परामाणु अग्रहीत अनन्त ग्रहण करै, तब एक बार मिश्र परामाणु ग्रहण करै, वहुरि अनन्त अग्रहीत ग्रहण भए दूजीबार मिश्र ग्रहण करै। ऐसें एक २ करतें मिश्र अनंता

होय जाय तब पलटि अनंत बार अग्रहीत ग्रहण करि पीछैं एक बार ग्रहीत ग्रहण करै। पूर्व रीति करि अनंत मिश्र भए, दूजा पलटि अनंत अग्रहीत ग्रहण करि दूजीबारग्रहीत ग्रहण करै। ऐसैं पूर्वोक्त विधि तैं एक २ ग्रहीत का ग्रहण करतें जब ग्रहीत परमाणु भी अनंता हो जाय तहाँ अग्रहीत मिश्र ग्रहीत इन तीनों के ग्रहण विषैं जेता काल व्यतीत होय सो पाव पुद्गल परावर्तन का काल है। दूजा मिश्र आदि विषैं अग्रहीत मध्य मैं, ग्रहीत अन्त मैं, तीजा मिश्र आदि में, ग्रहीत मध्य में, अग्रहीत अन्त में, चौथा ग्रहीत आदि विषैं, मिश्र मध्य में, अग्रहीत अन्त में, ऐसैं पाव पुद्गल की नाई और तीनांका काल पूर्वोक्त रीति तैं पूर्ण करै सो जब चौथा भी संपूर्ण हो जाय तब च्यारनि में जेता काल व्यतीत होय सो इकठा किया एक पुद्गल परावर्तन का काल जानना। ऐसैं ही कर्म पुद्गल परावर्तन का स्वरूप जानना। सो पुद्गल परावर्तन को काल क्षेत्र परावर्तन का काल कै अनंतवैं भाग है। एक क्षेत्रपरावर्त्तन मैं अनन्त पुद्गल परावर्त्तन हो है। तातैं पुद्गल परावर्त्तन का काल क्षेत्रपरावर्त्तनका कालकै अनन्तवैं भाग कह्या। सो तिस पुद्गल परावर्तन का आधा दोय भाग का नाम आध पुद्गल परावर्तन है। सो अर्द्ध पुद्गल परावर्तन काल नाम आगम विषैं काल लब्धि कहा है तिसका उदाहरण। जैसैं कोई

मिथ्यादृष्टी जीव संसार विषैं अनंत वार अनंत परावर्तन कीए। जब उसके अर्द्ध पुद्गल परावर्तन प्रमाण संसार का भ्रमण बाकी रह्या सो ज्ञानी जीवनिनैं ज्ञान विषैं इस भांति देख्या जान्यां जो याकै अब काल लब्धि है। जब सम्यक् उपजायवे को जोग होय और जो अर्द्ध पुद्गल परावर्तन तैं संसार एक समय भी अधिक रहा होय तौ भी सम्यक्त्व न उपजै, यह नियम है। तिस तैं अर्द्ध पुद्गल परावर्तन का नाम काल लब्धि कहा है। जो जीव सम्यक्त्व पाइकैं छोडि दे तौ भी संसार विषैं बहुत भ्रमैं तौ अर्द्ध पुद्गल परावर्तन ताई भ्रमण करै, अधिक भ्रमण न होय, यह नियम है जातैं दोय सम्यक्त्व, अर देश संयम, अनंतानुबंधी को विसंयोजन, असंख्यात बार करै है छोडै है बहुरि सम्यक्त्व पाय मोक्ष जाय।

इस भांति जीव सम्यक्त्व पावै है और कहा सम्यक्त्व लडकां का बालकां का ख्याल है। सम्यक्त्व का पावना महादुर्लभ है। जो जीव सम्यक्त्व पावै सो जीव अंतमुर्हूर्त्त तैं लेकरि अर्द्ध पुद्गल परावर्तन ताई भावैं (भले ही) कभी मोक्ष जाऊ, कोई बाधा नांही। इस भांति सम्यक्त्व का स्वरूप है। कोई लड़कौंका सा ख्याल सम्यक्त्व है नांही। इन पाचौं परावर्तननि का कथन बहुत विशेष गोमट्टसार ग्रन्थ का भव्य मार्गणा अधिकार विषैं देखि लेनां। उहाँ

बहुत विशेष स्वरूप कह्या है। इहाँ भी सामान्य कथन किया।

—: पुनः पंचपरावर्तन :—

भाव परावर्तन अनन्त जो करें है जीव,
एक भाव तैं अनंत भौके परावर्त हैं।
एक भौ सेती अनंत काल परावर्त करै,
काल तैं अनंत खेत परावर्त कर्त हैं।
एक खेत तैं अनंत पुद्गल परावर्तन,
पंच फेरी विषें आप मिथ्या वस पर्त हैं।
सातको विनाश जिन्है सम्यक् प्रकास तेई,
दर्व खेत कालभव भाव तैं निकर्त हैं॥७६॥

बहुरि दूजा परावर्तन का स्वरूप कहे है।

इस संसार विषें मिथ्यात्व के बसि होय करि मिथ्या दृष्टि संज्ञी जीवनैं अनंते भाव परावर्तन कीए, अनंत काल संसार विषै भ्रमण किया सो जिनेंद्र भगवान का ज्ञान कै गम्य है। जितने काल विषं एक भाव परावर्तन पूरो करै तितने काल विषै अनंते भव परावर्तन होय हैं, यह जानना। और जितनें काल विषैं एक भव परावर्तन पूरो करैं तितनें काल विषै अनंते काल परावर्तन करै, इस भांति

अनंतौं के अनंत भेद जानने। और जितने काल विषैं एक काल परावर्तन पूर्ण होय तितनें कालविषैं अनंते क्षेत्र परावर्तन होय जाय हैं। और जितने काल विषैं एक क्षेत्र परावर्तन पूरा करै तितनें काल विषैं अनंते पुद्गल परावर्तन हो है। इस भांति पंच परावर्तन विषैं मिथ्यात्व कै वसि हुआ जीव अनंतबार जनम्या अर अनंत बार मूवा, अनंत काल भ्रम्यो। च्यारि अनंतानुबंधो और तीन मिथ्यात्व इन सात प्रकृतिनि का नाश करै तिसतैं क्षायिक सम्यक्त्व होय, तब सो ही जीव इन पांचौं परावर्तननि तैं रहित होय संसार तैं छूटै। तब अविनाशी सुख को ठिकाणौं मोक्ष-स्थान पावैं। जहाँ तैं फिर संसार विषैं आवना नांही। उक्तं च गाथा।

अगहिदमिस्सं गहिदं मिस्समगहिदं तहेव गहिदं च।
मिस्सं गहिदमगहिदं गहिदं मिस्सं अगहिदं च॥
सर्व प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशबंधयोग्यानि।
स्थानान्यनुभूतानि भ्रमतो भुवि भाव संसारे॥

पुद्गल परावर्तन का यन्त्र

००+	००+	००१	००+	००+	००१
++०	++०	++१	++०	++०	++१
++१	++१	++०	++१	++१	++०
११+	११+	११०	११+	११+	११०

पुद्गल परावर्त्तन सामान्य

०	+	१	प्र०
+	०	१	द्वि०
+	१	०	तृ०
१	+	०	च०

पांचों परावर्त्तन काल

भाव	ख	ख	ख	ख	ख
भव	ख	ख	ख	ख	
काल	ख	ख	ख		
क्षेत्र	ख	ख			
पुद्गल	ख				

पांचों की संख्या

द्रव्य	ख	ख	ख	ख	ख
क्षेत्र	ख	ख	ख	ख	
काल	ख	ख	ख		
भव	ख	ख			
भाव	ख				

—: पांच लब्धि कथन :—

थावर तैं सैनी होय एही खय उपशम है,
दान पूजा उद्यत विसोही उपयोग है ।

गुरु उपदेश तत्त्व ज्ञान सो ही देसना है,
अंत कोड़ा कोड़ी कर्म की थिति प्रायोग है।
जग में अनंत बार चारि लब्धि पाई इनि,
करण लब्धि बिना समकित को न जोग है।
अधो अपूर्व अनिवृत्तिकरण तीन करें,
मिथ्या मांहि पीछैं चौथा सम्यक् नियोग है॥८०॥

अब क्षयोपशम, विशुद्धि, देशनां, प्रायोग्यता, करण, इन पांच लब्धिनि का नाम मात्र कथन करिए है।

अनादि मिथ्यादृष्टि वा सादि-मिथ्यादृष्टि जीव अनादि-कालका एकेंद्रीविषैं भ्रम्या सो काल पाय कर्मों का क्षयोपशम हुवा, कषायनि का रस मंद पड़े तब थावर तैं निकसि सैनी पंचेन्द्री जीव भया, तिसका नाम क्षयोपशम लब्धि कहिए। क्षय उपशम तैं निकल्या इस वास्तै इसका नाम क्षयोपशमलब्धि कह्या है।

बहुरि यही जीव काल पायकैं शुभ कर्म के उदयतैं दान, पूजा, संजम, जप, तप, व्रत, शील इन आदि शुभ परिणामनि रूप परिणमैं तिसका नाम विशुद्धि लब्धि कहिए।

बहुरि काल पाय पुण्य कर्म के उदयतैं सतगुरु का उपदेश भी पाया; छः द्रव्य, नवपदार्थ, पंचास्तिकाय, सात-

तत्त्व, तीनकाल इनका उपदेश पाय तत्त्वका जानपनां भया तिसका नाम देशनालब्धि कहिए।

बहुरि काल पाय महाव्रत भी धरै। सो महाव्रत धरिकैं मास मास के उपवास भी कीये, बहुत तपस्या करिकै शरीर विषैं क्षीण परया, तिसके बल करिकैं कर्मनि की थिति अंत कोड़ा कोड़ी सागर प्रमाण राखी। कोडि के ऊपरि अर कोड़ा कोड़ी के मांही ताका नाम अंतः कोडा कोड़ी है। इस लब्धि विषैं चौतीस बंधापसरण हो है। तिनका विशेष कथन लब्धिसार ग्रन्थ विषैं जानना। सो या लब्धि का नाम प्रायोग्य-लब्धि है।

क्षयोपशम, विशुद्धि, देशना, प्रायोग्यता, ए च्यारि लब्धि जीवनैं संसार विषैं अनंतीवार पाई परन्तु काज कछु सरा नांही। इस जीवनैं मिथ्यात परिणामनि करि च्यारों लब्धि पाई, तातैं जैसी पाई तैसी न पाई, यह जानना। बहुरि ए च्यारि लब्धि जीव अनंतीवार पावै परन्तु पांचमी करणलब्धि विना जीवकै सम्यक्त्व का लाभ न होय, यह नियम है। जब करणलब्धि आवै तब सम्यक्त्व पावै यह नियम जानना। करणलब्धि का अर्थ मिथ्यात के तीन भेद करै। सो पहला अधःकरण, दूजा अपूर्वकरण, तीजा अनिवृत्तिकरण। सो अनिवृत्तिकरण का अंत समय विषैं सम्यक्त्व होय तिसका नाम करण-

लब्धि कहिए। यह कथन गोम्मटसारजी, लब्धिसारजी आदि विषैं देखि लेना। जहां ऊपरले समयनि के परिणामनि सैं नीचले समयनि के परिणाम मिलैं, संख्यादि करि समान होय, तातैं अधःकरण यह सार्थक है। इस अधःकरण विषैं केवल परिणामनि की ही समय समय अनंतगुणी विशुद्धता हो है, और स्थिति कांड घातादि कार्य नांही हो है। अर दूसरी अपूर्वकरण ताविषैं अपूर्व अपूर्व परिणाम हो है। कोई ही समय का परिणामनि सू कोई ही समयनि का परिणाम न मिलै। तातैं याका नाम अपूर्वकरण साँचा है। या विषैं गुणश्रेणी, गुणसंक्रमण, स्थितिकांडघात, अनुभागकांडघात ए च्यारि कार्य हो है। और अनिवृत्तिकरण विषैं एक समय मैं तिष्ठते जीव तिनका परिणाम सबनि का समान हो है, घाटि वाधि पलटणि नांहीं। तातैं तीजा करण का नाम सांचा अनिवृत्तिकरण है। इहां करण नाम परिणामनि का है। पीछै अंत समय अनिवृत्तिकरण के अंत विषैं सम्यक्त्व होय यह नियम है।

—: आठवां नन्दीश्वर द्वीप का कथनः—

एक सौ तरेसठि किरोर चवरासी लाख,
जोजन का चौड़ा दीप बावन पहार हैं।

दिसा च्यारि अंजन जोजन चौरासी हजार,
सोलै दधिमुख जोजन दस हजार हैं ॥
रतिकर हैं बत्तीस जोजन हजार एक,
लंबे चौरे ऊँचे सब ढोल के अकार हैं।
सब परि जिनभौन बावन विराजत हैं,
वर्ष तीन बार देव करैं जै जैकार हैं ॥ ८१ ॥

आठमां नंदीश्वर द्वीप एक सौ त्रेसठि कोडि चौरासी लाख जोजन का चौड़ा है। सो प्रमाण जोजन करि है। सो नंदीश्वर द्वीप महा सोभायमान महारमणीक है, सासता है। ता नन्दीश्वर द्वीप विषैं बावन पर्वत हैं। तिन परि एक एक पर्वत परि एक एक जिनमंदिर हैं ते बावन हैं। तिस नंदीश्वर द्वीप की च्यारों दिशानि विषैं च्यारि अंजन गिरि पर्वत हैं। एक एक दिशा विषैं एक एक हैं। ते अंजनगिरि चौरासी हजार जोजन के भूमितैं ऊँचे हैं अर चौरासी हजार योजन के ही सर्वत्र आदि मध्य अंत विषैं चौड़े हैं। हजार योजन की भूमि विषैं जड़ है। गोल ढोल कै आकार हैं। अर सोला दधिमुख पर्वत हैं। एक दिशा विषैं च्यारि हैं। च्यारों के सोलह। ते दश हजार योजन के ऊँचे, इतने ही चौड़े, हजार योजन की जड़ है। बत्तीस रतिकर पर्वत हैं। भावार्थ—च्यारों दिशानि विषैं

आठमा नंदीश्वर द्वीप तक चौडाई का अर सूची का यंत्र

नाम द्वीप समुद्र		वलय व्यास वा सूची व्यास योजन
जंबू द्वीप *	व	१०००००
	सूची	१०००००
लवण समुद्र	व	२०००००
	सू	५०००००
धातकी खंड	व	४०००००
	सू	१३०००००
कालोदधि	व	८०००००
	सू	२९०००००
पुष्कर द्वीप	व	१६०००००
	सू	६१०००००
पुष्कर समुद्र	व	३२०००००
	सू	१२५०००००
वारुणी द्वीप	व	६४०००००
	सू	२५३०००००
वारुणी समुद्र	व	१२८०००००
	सू	५०९०००००
क्षीर वर द्वीप	व	२५६०००००
	सू	१०२१०००००
क्षीर समुद्र	व	५१२०००००
	सू	२०४५०००००
घृत वर द्वीप	व	१०२४०००००
	सू	४०९३०००००
घृत समुद्र	व	२०४८०००००
	सू	८१८९०००००
क्षौद्र वर द्वीप	व	४०९६०००००
	सू	१६३८१०००००
क्षौद्र समुद्र	व	८१९२०००००
	सू	३२७६५०००००
नंदीश्वर द्वीप	व	१६३८४०००००
	सू	६५५३३०००००

लाख लाख जोजन लंबी चौड़ी चौकोर, हजार जोजन ऊँडी सोला बावड़ी हैं। तिनके वारले दो दो कोण समीप एक एक पर्वत है। ते पर्वत बत्तीस हजार हजार योजन के लंबे चौड़े ऊँचे हैं। अढाई सै योजन की भूमि विषैं जड़ है। सब बावन पर्वत ढोलकै आकार हैं।

तिस सर्व बावन पर्वतनि परि सौ योजन लंबे, पचास योजन चौड़े, पिचहत्तरि योजन ऊँचे ऐसे उत्कृष्ट सास्वते बावन जिनमंदिर हैं। अरु एक एक चैत्यालय विषैं एक सौ आठ रतनमयी पांच सै धनुष की जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा विराजमान हैं। सब प्रतिमा पांच हजार छह सै सोला है। तहां एक एक वर्ष विषैं तीन तीन बार काती, फागुण, असाढ़ कै विषैं शुक्लपक्ष मैं आठै सौं लै पूर्णमासी पर्यंत आठ दिन तक राति दिन के चौसठि पहर निरंतर पूजा स्तुति जै जै कारादि महामहोच्छव करै है, नृत्य गान वादित्रादि अनेक उच्छव करै है।

—: मेरू पर्वत का वर्णन :—

मेरु लाख एक जड़ ऊँचा निन्यानौ हजार,
चूलिका चालीस बाल अंतर विमान है।
नीचैं भद्रशाल वन दिसा चारि जिन भौंन,
पांचसै पैं नंदन चैतालै च्यारि वान है।

साढ़े बासठि हजार सौमनस वन चारि,
चैताले ऊँचो सहस छत्तिस बखान है।
तहां वन पांडुक चैताले च्यारि सब सोलै,
मन वच काय सेती बंदौं पाप हानि है ॥८२॥

अब मेरू पर्वत का कथन करिए है—मेरू ऊँचा निन्याणवैं हजार योजन का है। जड़ हजार योजन की है। ऐसे मेरू लाख योजन का है। जड़ त लेइ अंत ताइं मेरू गिरि पर्वत लाख योजन का ऊँचा है। तिसका व्यौरा:—चित्रा भूमि विषैं मेरू की जड़ एक हजार योजन की है। और तिस जड़तैं ऊपर भद्रशाल वनतैं लेकै पांडुक वन ताइं निन्याणवैं हजार योजन ऊँचा जानना। और तिस पांडुक वनकै बीचि चालीस योजन ऊँची, बारह, आठ, च्यारि—आदि, मध्य, अंत विषैं चौड़ी चूड़ाकार इन्द्रनील मणिमई चूलिका जाननी। तिस चूलिका ऊपरि एक बाल कै आंतरै सौधर्म इन्द्र की पहली सभा का पैंतालीस लाख योजन का चौड़ा ऋजु विमान जानना। तिस मेरू की जड़ा नीचैं चित्रा पृथ्वी परि भद्रशाल वन विराजै है। ते अनादिकाल के सास्वते हैं। तिन च्यारौं भद्रशाल वननि विषैं सासते उत्कृष्ट रचना सहित अर्हंतदेव के च्यारि च्यारि चैत्यालय विराजमान हैं, अत्यंत सोभायमान है।

तिस भद्रशाल वनतैं पांचसै योजन ऊँचा जायकै दूजो नंदनवन है। तिस नंदनवन की च्यारौं दिशानि विषैं च्यारि चैत्यालय हैं। ते अति सोभायमान सास्वते हैं, उत्कृष्ट हैं। अरु नंदनवन की चौड़ाई पांचसै योजन की है। तिस नंदनवनतैं साढे बासठि हजार योजन जाइकै पांचसै योजन का चौडा सौमनस वन विराजै है। ता सौमनस वन विषैं च्यारि दिशा मांहि च्यारि चैत्यालय अत्यन्त सोभायमान हैं। ते मध्य चैत्यालय जानने। और तिस सौमनस वन तैं छत्तीस हजार योजन ऊंचा जाय करि पांडुक बन विराजै है, सो सास्वता है। तहां जिनेन्द्र भगवान का जन्माभिषेक हो है। तिस पाण्डुक वन की च्यारौं दिशानि विषैं च्यारि जघन्य जिन मंदिर हैं ते अत्यन्त सोभायमान हैं। ता पाण्डुकवन की चौडाई च्यारि सौ चौराणवै योजन की है। इस भांति सुदर्शन मेरू संबंधी सोला चैत्यालय हैं, सास्वते हैं। देव विद्याधरनि करि सदा काल पूजवे योग्य हैं। तिन चैत्यालयों कै ताईं मैं मन, वचन, काय करि भाव सहित उछाह सहित बन्दना करौं हौं, पूजौं हौं, ध्यावौं हौं, जातैं तिन चैत्यालयनि की बन्दना तैं पाप की हानि होय, सर्व विघन टलै। यह जानना।

—— मेरू पर्वत का पूर्व पश्चिम विस्तार ——

मेरू गोल जड तलैं दस हजार निव्वै को,

भूपैं हजार दस नन्दन पै लहा है।
नौ हजार नौसै चौवन भाग कहे नहीं, ❀
सौमनस वियालिस सै बहत्तरि रहा है ।
पांडुक हजार एक बीचि बारह चूलिका है,
चारि सै चौरानूं वन पांडुक सरदहा है।
सौमनस नन्दन है पाँचसै के भद्रसाल,
बाईस हजार पूर्व पच्छिम में कहा है ॥८३॥

बहुरि मेरू की चौडाई तथा वनानि की चौडाई का नाम मात्र कथन--

मेरू पर्वत गोल गिरदाकार, तहां जड तलै दशहजार निव्वै योजन का चोडा है। सो या चौडाई चित्रा पृथ्वी कै तलै जानना। तिस जड तलैंसैं हजार योजन ऊंचा आये भूमि पैं भद्रशाल की जडां दश हजार योजन को चौडो है। तिस तैं ऊपरि पांचसै योजन नन्दन वन है।

❀ 'नहीं' की जगह 'तहां' पाठ भेद है। जहां नहीं है वहां अर्थ होगा कि भाग नहीं कहे अर्थात् पूर्णाङ्क के पश्चात् कुछ भाग और हैं जो यहां नहीं बताये गये हैं—और जगहसे देख लेना। जहां पाठ 'तहां' है उसका अर्थ होगा पूर्णाङ्क के पश्चात् कुछ भाग वहां और हैं सो और जगह से देख लेना।

तहां चौडाई दोय प्रकार है—एक वन सहित, एक वन रहित। तहां वन सहित तो निन्याणवैं सैं चौवन योजन अर छह छह योजन को ग्यारवों भाग, इतनौं चौडो। अर वन बिना चौंडाई आठ हजार नौ सै चौवन योजन, छ को ग्यारवों भाग प्रमाण है। तहां तैं ए हजार का दश योजन तक इकसार चौडाई इकसार है। अर ऊपरि साढा इक्या-वन हजार योजन विषैं क्रम तैं हानि है।

बहुरि नन्दन वन सूं साढा बासठि हजार योजन ऊँचा गया सौमनस नामां तीसरो वन है तहां वन सहित पर्वत चौडो बीयालीस सै वहत्तरि योजन आठ योजन का ग्यारा भाग प्रमाण चौडो है। अर बन बिना पर्वत चौडो बत्तीस सै बहत्तर योजन, आठ को ग्यारवां भाग प्रमाण चौडो है। ता सौमनस वन तै छत्तीस हजार योजन की ऊंचाई विषैं ग्यारा हजार योजन तक तौ इक सार समान चोडो है अर पचीस हजार योजनविषैं क्रम तैं हाणि भई है। तहं पाण्डुक वन है सो वन सहित पर्वत हजार योजन को चोडो है। इस भांति मेरू की चौडाई जड तैं अन्त सिखर तक जाननी।

ता एक हजार योजन की. चौडाई कै बीचि बारह योजन आदि विषैं मोटी, आठ मध्य विषैं, च्यारि शिखर विषैं चोडी, चालीस योजन ऊंची चूलिका है। तब तहां

पांडुक वन च्यारि सै चौराणवै योजन को चौडो है । ता वन विषै च्यारि शिला हैं । पांडुक, पांडुकंवला, रक्का, रक्कंवला, आधा चन्द्रमा कै आकार, सौ सौ योजन लम्बी. पचास पचास योजन चौडी, आठ योजन मोटी । तिन परि भरत ऐरावत पूर्व पश्चिम विदेह के तीर्थङ्करनि का जन्माभिषेक हो है । मेरूका व्याख्यान बहुत है सो त्रिलोकसार सिद्धान्त विषैं विशेष करि कहा है, तहां देखि लेना। इहां तौ रचना मात्र कही है । बहुरि सौमनस वन अर नन्दन वन पांचसै पांचसै योजन के चौडे हैं । इक तरफ कटनी परैं है । अर भद्रसाल वन पूर्व पश्चिम दिशा विषैं बाईस हजार, बाईस हजार योजन का लम्बा है, दक्षिण उत्तर भद्रशाल वन पांचसै पांचसै योजन का लम्बा है इनकी विशेष रचना त्रिलोकसार विषैं कही है तहां देखि लेना ।

— चौदह गुणस्थानों में मरकर जीव कहां जाता है —

छप्पय

मिश्र खीन संजोग, तीन मैं मरन न पावै,
सात आठ नव दसम, ग्यार मरि चौथे आवै ।
प्रथम चहूँगति जाय दुतिय विन नरक तीनगति
चौथे पूरव आव बंधतैं चहुंगति प्रापति ॥

पंचम तैं ग्यारम सात गुन,
मरै सुरग मैं औतरै।
वन्दौं इक चौदस थान तजि,
अजर अमर सिव पद वरै ॥८४॥

अब चौदह गुणस्थाननि कूं तजि जीव कहां कहां जाइ यह कथन। और कहां कहां न जाय, अर चौदह गुणस्थाननि के परिणामनि सैं किस किस गति विषैं उपजै यह नाम मात्र कथन च्यारौं गतिनि का करिए है।

मिश्र तीसरो गुणस्थान, क्षीणकषाय बारमो गुणस्थान, सयोगकेवली तेरमो गुणस्थान, सो इन तीन गुणस्थाननि विषैं जीव मरण नांही पावै है। यह नियम है। सो श्रद्धान करि आगम विषैं कहा है। सातमां अप्रमत्त गुणस्थान तैं, आठमां अपूर्वकरण गुणस्थान तैं, नवमां अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतैं, दशमां सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान तैं, ग्यारमा उपशान्त मोह गुणस्थान तैं ए पांच गुणस्थान उपशम के, तहां तैं मरण करै तो चौथे गुणस्थान आवै, अन्त समय अव्रतरूप चौथा का कामोणनिकसैं। प्रथम मिथ्यात्व गुणस्थान का मूवा जीव च्यारौं ही गति विषैं जाइ, कोऊ भी बाधा नांही। परन्तु देवगति विषैं ग्रैवेयक ताईं जाय, आगै न जाय यह नियम है। दूसरा सासादन

गुणस्थान विषैं मरण करि जीव नरक गति विना बाकी तिर्यंच, मिनख, देव इन तीनौं गति विषैं जाइ। सासादन का मूवा जीव नरकगति विषैं न जाय यह नियम है। और जिस जीवनैं पहलैं मिथ्यात्व के परिणामनितैं नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देव आयु का बन्ध कीया होय अर पीछैं सम्यक्त्व परिणामनि तैं चौथा गुणस्थान होवै तो मरि च्यारौं ही गति विषैं जाइ। इतना विशेष नरक विषैं तीजा तक जाइ, अर क्षायिक हाला पहिलै ही जाइ। मिनख, तिरजंचा होय तो भोगभूमि विषैं जाइ। देव गति मैं स्वर्ग ही जाय। आयु बन्ध पहली नहीं बंध्या केवल चौथे ही आयु बांधि मरै तो देवगति मैं जाय। पांचमां देश-व्रत विषैं मरण करै वा पांचमां गुणस्थान तैं ग्यारमां गुणस्थान तांई पांचमां देशव्रत, छठो प्रमत्त, सातमों अप्रमत्त, आठमो अपूर्वकरण, नवमों अनिवृत्तिकरण, दशमो सूक्ष्म सांपराय, ग्यारमो उपशान्त मोह इन सातों गुणस्थाननि विषैं मरण करै सो जीव अवश्य एक देवगति विषैं जाइ और गति मैं न जाय, यह नियम है। अर देवगति विषैं भी कल्पवासी देव, भवनत्रिक नांही होय यह नियम है। और चौदमो अयोगकेवली गुणस्थान है तिसके अन्त समय विषैं सत्ता पिच्यासी प्रकृति का नाश करिकै पंडित २ मरण सुं देहका सम्बन्ध छूटै सो एक

समय विषैं सासतो पद जहां जरा नांही, बहुरि जहां मरण नांही ऐसा मोक्ष पद अनन्त सुख का निवास, तहां प्राप्त होय । तिन सिद्ध परमेष्ठीनि कूं मेरा बारम्बार नमस्कार है ।

— नवमें गुणस्थान में ३६ प्रकृतियों का क्षय —

सवैया इकतीसा

प्रत्याख्यानी च्यारि औ अप्रत्याख्यानी च्यारिभेद
संजुलन तीन नव नोकषाय जानिये ।
एकेन्द्री विकलत्रय थावर आतप उदोत,
सूक्षम और साधारन जीवनिकौं मानिये ।
निद्रानिद्रा प्रचलाप्रचला अरु स्त्यानगृद्धि,
नींद तीनौं महाखोटी कबहूँ न ठानिये ।
नर्क पशुगति आनुपूर्वी प्रकृति च्यारि,,
नवमें गुनथानक में ए छत्तीस भानिए ॥८५॥

नवमां अनिवृत्तिकरण गुणस्थान विषैं छत्तीस प्रकृतिनि का नाश करै है तिनके नाम ।

प्रत्याख्यानावरणी कषाय च्यारि, और अप्रत्याख्यानावरणी कषाय च्यारि, और संज्वलन कषाय, क्रोध, मान, माया ए लोभ विना तीन, हास्य, रति, शोक, भय,

जुगुप्सा, ए ६, स्त्री वेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, ए तीन वेद, जोडै नोकषाय नव, च्यारि जाति तिनके भेद ४ एकेन्द्री, वेइन्द्री-ते इन्द्री-चौइन्द्री ए विकलत्रय तीन, स्थावर, आतप, उद्योत, सूक्ष्म, साधारण, ए जीवविपाकी नौ इन विषैं जीवका नाम आया। बडी निद्रा तीन, बहुत घूमै सो निद्रा निद्रा, हाथ पांव चालै सो प्रचला प्रचला, अर जिसके उदय बहुत बल होय सो स्त्यानगृद्धिनिद्रा ए तीन निद्रा महाखोटी है, महादुखदायी हैं भो कबहूँ चित्त विषैं नाही आनिये। नरकगति, तिर्यंचगति, नरक-गत्यानुपूर्वी, तिरजंचगत्यानुपूर्वी, ए च्यारि प्रकृति। नवमां गुणस्थान विषैं क्षपक श्रेणी वाला जीव इन छत्तीस प्रकृतिनि का सत्ता तैं नाश करै सो सत्ता त्रिभंगी विषैं देखि लेना, विशेष गोमट्टसार जी तैं देखि लेना।

— जिनवाणी की संख्या —

सोलै सै चौतीस करोर लाख तिरासिय,
अठत्तरसै अठासी अच्छर ए लेखिए।
इक्यावन कोर आठ लाख सहस चौरासी,
छहसै साढै इकईस ए सिलोक पेखिए।
ताको पद एक जोरि एक सौ बारै किरोर,
तेरासी लाख सहस अट्ठावन देखिए।

पंच पद एते सब द्वादशांग जिनबानी,
बंदौं मन लाय भेद ज्ञान को विशेखिए ॥८६॥

सर्वज्ञ देव की दिव्यध्वनि सो जिनवाणी सो वाणी च्यारि ज्ञान के धारक गणधर देवनैं द्वादशाङ्गरूप रचना गूथी तिस द्वादशाङ्ग वानी के पदनि की संख्या ११२८३५८०५ तिनका नाम मात्र कथन करै है--

जिनबाणी के एक पद का अक्षर सोलासै चौतीस कोडि तियाती लाख सात हजार आठ सै अठ्यासी, एक पद के अक्षर जानने। तिन अक्षरानि के श्लोक करिए तौ बत्तीस अक्षर को एक श्लोक होय, तौ एक पद का कितना श्लोक भये। ते इक्यावन कोडि आठ लाख चौरासी हजार छह सौ साढे इकीस श्लोक भये। इतने श्लोक जानने। इतने श्लोकनि का एक पद भया तौ द्वादशांग वाणी का पद एक सौ बारा किरोर तीयासी लाख अठावन हजार पांच पद है। इस भांति सब जाननें। ऐसी भगवान देव की द्वादशाङ्ग वाणी ताहि मन, वचन, काय, करि भाव सहित मैं बन्दौं हौं, पूजौं हौं, ध्यावौं हौं, स्मरौं हौं। तिसतैं भेद विज्ञान होय है, ग्यानकी दृष्टिता होय है। यह कथन गोमट्टसारजी की ज्ञानमार्गणाविषैं देखि लेना।

— चौदह गुणस्थानों में कर्मों का आश्रव —

पहले पांचों मिथ्यात दूजे अनन्तानुबन्धी,
ग्यारह अविरत प्रत्याख्यानी पांचें गहे ।
वैक्रियक औ अप्रत्याख्यानी त्रसबध चौथे,
आहारक छट्ठें षट् हास्य आठ लों लहे ।
तीन वेद तीन संज्वलन नवें लोभ दसें,
असत उभै वचन मन बारहें कहें ।
सत अनुभय वच मन औदारिक तेरें,
मिश्र कार्मान च्यारि गुनथानें सरदहे ॥८७॥

पांच मिथ्यात्व, बारा अव्रत, पचीस कषाय, पंद्रा जोग ए सत्तावन आश्रवद्वार चौदा गुणस्थान विषें कहां२ घटा तिनका कथन—

पहला गुणस्थान विषैं पांच मिथ्यात्व—एकान्त, विपरीत, विनय, संशय, अज्ञान, ए अन्त विषैं घटै है। दूसरै सासादन गुणस्थान अनन्तानुबन्धी विषै च्यारि घटै क्रोध, मान, माया, लोभ । पांचमैं गुणस्थान ग्यारा प्रकृति घटै—अव्रत ११—पांच इन्द्री छठा मन इनकी स्वछंदता ए ६, पांच थावर की विराधना ए ५, ऐसे ११ (घटे), अर प्रत्याख्यान ४ क्रोध, मान, माया, लोभ,

ए ४ (भी घटे) सो मिलि १५ (घटे)। वैक्रियक, वैक्रियक मिश्र, अप्रत्याख्यान ४:—क्रोध, मान, माया, लोभ ए ४ त्रस को घात ए ७ इनकी व्युछित्ति चौथे गुणस्थान में हो है। छठा प्रमत्तगुणस्थान विषैं आहारक, आहारक मिश्र इन दोय की व्युछित्ति हो है। आठमें अपूर्वकरण गुणस्थान विषैं हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, इन छह नोकषायनि की व्युछित्तिहोहै। नवमें अनिवृत्ति करण गुणस्थान विषैं नपुंसक, स्त्री, पुरुष वेद ३, अर संजुलन ३ क्रोध, मान, माया, इन छह आश्रवनि की व्युछित्ति हो है। दशमां सूक्ष्मसांपराय गुणस्थानविषैं एक सूक्ष्म लोभ की व्युछित्ति होहै। बारमां क्षीण कषाय-गुणस्थान विषैं असत्य मन, उभय मन, असत्य वचन, उभय वचन, इन ४ आश्रव की व्युछित्तिहो है। तेरमां सयोग केवली गुणस्थान विषैं सात योग-सत्य मन,सत्य वचन अनुभय मन, अनुभय वचन, औदारिक, औदारिकमिश्र, कार्माण इन सात की व्युछित्ति हो है। अर मिश्र जोग और कार्माण जोग ए च्यारि गुणस्थान विषैं जानने—अर्थात् पहलैं, दूसरैं, चौथै, तेरमै गुणस्थान में, अहारक की अपेक्षा मिश्र विषैं छठा प्रमत्त भी श्रद्धान करणा। कार्माण अपेक्षा च्यारि गुणस्थान हैं।

– चोदह गुणस्थानों में चारों आयु का बन्ध और उदय –

नरक आउ पहलें बंधै उदय चौथे लों,
पसू आउ दूजे बन्ध उदै पांच में कही।
नर आउ चौथे लग बंध उदै चौदहलों,
सुर आउ सातै वंध उदै चार में लही।
नर पशु जीव नर्क पशु नर आउ बन्ध,
चौथे तें आगें चढिवेकौ न सकति गही।
चारों आउ तीजे गुनथानक में बंधै नांहि।
आउ नास भए सिद्ध तिनकौं वंदौं सही ॥८८

अब चौदह गुणस्थाननि विषैं च्यारि आयु कहां २ बंधै और कहां २ उदय आवै सो कथन--

नरक आयु को बन्ध तौ एक पहला मिथ्यात गुणस्थान विषैं ही होहै, और गुणस्थानन विषैं नाही, यह नियम है। और नरक आयु को उदय मिथ्यात १, सासादन २, मिश्र ३, अविरत ४ इन च्यारि गुणस्थान तक है, आगैं नाहीं। तिर्यंच आयुका बन्ध तौ मिथ्यात्व, सासादन, इन दोय गुणस्थाननिविषैं है, आगैं बन्ध नाहीं। और तिर्यंच आयु को उदय मिथ्यात, सासादन, मिश्र, असंजम, देश संयम, इन पांच गुणस्थाननि विषैं है, आगैं

नांही। मिनख आयुका बन्ध मिथ्यात्व तैं लेइ चौथा अविरत गुण स्थान तक बन्ध है। अर मिनखआयुको उदय मिथ्यात्व गुणस्थान तैं लेइ चौदमां अजोगी तक है। और देव आयु को बंध मिथ्यात्वतैं लेइ सातमां अप्रमत्त तक है। अर देव आयु को उदय मिथ्यात्वादि अविरत तक च्यारि गुणस्थाननि विषैं ही है, आगैं नांही। तिन मनुष्यनैं तथा तिर्यंचनिनैं सरल परिणामनि करि तथा वक्र परिणामनि करि नरक आयु बांधी तथा तिर्यंच आयु बांधी तथा मनुष्य आयु बांधी ऐसे आयु बंध कैसे गुणस्थान परिपाटी चढै तौ चौथे गुणस्थानतैं आगै न चढै, यह नियम है। और देव आयु बंध कैसे ? ग्यारमां गुणस्थान ताइं चढै, कोई बाधा नाहीं, यह नियम जानना। और तीसरा मिश्रगुणस्थान विषैं नरक आयु, तिर्यंच आयु, मनुष्य आयु, देव आयु इन च्यारौं आयु का बंध नांही, अर मरण भी नांहीं, यह नियम वाक्य सिद्धांत का जानना।

इन च्यारि आयु कर्म का नाश करि सिद्ध परमेष्ठी भए हैं तिन अनंते सिद्धनिनै मन, वचन, काय करि भाव सहित बंदौं हौं, पूजौं हौं, ध्यावौं हौं, स्मरण करौं हौं।

आठ थानक निगोद नांही, च्यारि थानक सासादन जीव न जाय, तीर्थंकर सत्ता जहां न पाइय, सूक्ष्म और

कार्माण शरीर रंग, मनःपर्यय विपुलमति परमावधि सर्वावधि मोक्ष जाय सो कथनः—

भूमि नीर आगि पौन केवल आहारक,
नरक स्वर्ग आठ में निगोद नांही गाईए।
सूक्षम नरक तेज वायमें न सासादन,
भौनत्रिक पशू में न तीर्थंकर पाइए॥
सब ही सूक्षम अंग कहे हैं कपोतरंग,
कारमान देह को सुपेद रंग भाइए।
विपुल मनपर्यय परमावधि सर्वावधि,
ठीक लहै मोक्ष तातैं इन्हैं सीस नाइए॥८६॥

पृथिवीकायिक जीवनि के शरीर विषैं, जलकायिक जीवनिके शरीर विषैं, अगनिकायिक जीवनि के शरीर विषैं, पवनकायक जीवनि के शरीर विषैं, केवली भगवान के शरीर विषैं, और प्रमत्तगुणस्थानवर्ति मुनिराज, आहारक ऋद्धि के धारक तिनके प्रगट भयो जो आहारक शरीर ता विषैं, नारकीनि के शरीर विषैं, देवनि के शरीर विषैं ए आठ स्थाननि विषैं निगोदिया जीव नांही पाइए। यह जिनेन्द्र भगवान का उपदेश है।

पृथ्वी, जल, नित्य इतर निगोद, सूक्ष्म जीवनि विषैं,

नारकी सातौं पृथिवी के तिन विषैं, अग्निकायिक सूक्ष्म बादरनि विषैं, पवनकायिक सूक्ष्म बादर जीवनि विषैं, सासादनगुणस्थान विषैं, मरण करि सासादन गुणस्थान लीया नांही जाय ।

भवनवासी, व्यन्तरदेव, ज्योतिषीदेव इन भवनत्रिक विषैं अर भोगभूमिया वा कर्मभूमिया तिर्यंचनि विषैं, तीर्थङ्कर की सत्ता सहित जीव नाहीं जाय । तातैं भवनत्रिक देव, तिर्यंचनि विषैं तीर्थङ्कर की सत्ता नाहीं पाईए ।

सब ही छह प्रकार के सूक्ष्म जीवनि का शरीर का वर्ण जिनेन्द्र देवनैं कापोत वर्ण कह्या है । कबूतर का शरीर को जैसो वर्ण तैसा रंग सूक्ष्म जीवनि का शरीर को है । विग्रहगति विषैं जो कार्माण शरीर ताका श्वेतवर्ण जिनेन्द्र भगवान नैं कह्या है ।

विपुलमति, मनः पर्ययज्ञान के धारक मुनिराज, अर परमावधि ज्ञान के धारक मुनिराज, सर्वावधि ज्ञानके धारी मुनिराज, निश्चय थकी मोक्षपद जो आत्मीक पद ताहि पावैं है । यह नियामक वचन है । ता कारण तैं ए तीनौं सर्वावधि, परमावधि, विपुलमति ज्ञान के धारक तद्भव मोक्षगामी मुनिराजनि कूं सीस नमाऊं हूँ । मस्तक नमाय मैं नमस्कार करूं हूँ ।

— सात नरकों और सोलह स्वर्गों का आवागमन —

सातें तैं निकसि पशु, छठे नर व्रत नांहिं,
पांचै महाव्रत चौथेसेती मोक्षसार है।
तीजे दूजे पहिले तैं आय जिनराय होय,
भौनत्रिक स्वर्ग दोय एकेन्द्री धार है।
द्वादश में स्वर्ग ताईं पंचेन्द्री पशु होय
ऊपर को आयो एक नरको औतार है।
दक्खेन्द्र सुधर्मराणी लोकपाल लौकान्तिक
सर्वार्थसिद्धि मोक्ष लहै, नमोकार है ॥६०॥

अब सातौं नरकनि का आया तथा सोलह स्वर्गनि का आया तथा अहमिन्द्रनि का आया जीव कहां २ उपजैं यह कथन—

सातवां नरक तैं निकसि कैं जीव महाक्रूर पंचेन्द्री तिरजंच होय, और नाहीं होय, यह नियम है। और छठा नरक तैं निकस्यो जीव मिनख तौ होय परन्तु महाव्रत नांही धारि सकै यह नियम है। पांचमां नरक का निकस्या महाव्रत तौ धारन करै परन्तु कर्मक्षय करि मोक्ष नांहीं जाय यह नियम है। चौथा नरककौं निकस्यौ जीव महाव्रत धारन करि कर्मनि का नाश करि मोक्ष

जाय, परन्तु त्रिलोक क्षोभकारी तीर्थङ्करदेव नांही होय, यह नियम है। और तीसरा नरक का आया, दूसरा नरक का आया, पहला नरक का आया इन तीन नरक का आया जीव तीर्थङ्कर देव होय, यामैं कोई बाधा नाहीं। इस भांति नरकनि का आया जीव का उपजने का व्याख्यान किया। भवनवासी व्यन्तर ज्योतिषी ए भवन-त्रिक अर सौधर्म ईशान स्वर्ग इन पांचों ठौर का आया जीव एकेन्द्री होय, परन्तु अग्निकायक, वायुकायिक न न होय और पृथ्वी कायक, जलकायक, वनस्पतिकायक, हो सो भी बादर होय सूक्ष्म न होय यह नियम है। सौधर्म ईशान को आयो एकेन्द्री होय तातैं ऊपरका आया एकेन्द्री नाहीं होय यह नियम है। और बारमां सहस्रार स्वर्ग ताईं का आया पंचेंद्री तिर्यंच होय अर बारमां तैं ऊपरि का आया जीव तिर्यंच न होय यह नियम है। और सहस्रार स्वर्ग कै ऊपरि च्यारि स्वर्ग, नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश, पांच अनुत्तर इनका आया जीव मनुष्य होय, मिनख गति बिना और गति विषै नाहीं उपजै, यह नियम है। स्वर्गनि के आठ युगल हैं। तिन विषैं बारा इन्द्र हैं। छह इन्द्र दक्षिण के छह इन्द्र उत्तर के। सो दक्षिण के तौ छहों इन्द्र ए. अर सौधर्म स्वर्ग का इन्द्र की राणी सची जो तीर्थङ्कर कौं गर्भगृह में सू ल्याइ इन्द्रकू

सौंपै, सौधर्म को च्यारो लोकपाल सोम यम वरुण कुबेर ए, पांचमां स्वर्ग के अन्त विषैं बसने वाले सारस्वतादि लौकान्तिक देव ए, अर सर्वार्थसिद्धि विमान के सब अहमिन्द्र देव ए, इन पांचौं ठिकाणौं के आये जीव ऊँ ही भव सैं मोक्ष जाय यह नियम है। ए सब एक भवतारी हैं, तातैं इन सबनि नैं मेरा नमस्कार है ।

— सोलह कषायों के दृष्टान्त और उनके फल —

पाहन की रेखा, थंभ पाथर कौ, बांसबिडा,
कृमिरंग सम, चारौं नरक मांहि ले धरैं ।
हललीक हाडथंभ मेषसींग गाडीमल,
क्रोध मान माया लोभ तिरजंच में परैं ।
रथलीक काठथंभ गोमूत देहमैल से,
कषाय भरे जीव मानुष में अवतरैं ।
जलरेख बेतदंड खुरपा हलदरंग,
'द्यानत' ए चारि भव सुर्ग रिद्धि कौं करै ॥६१॥

अब सोला कषायनि का दृष्टान्त तथा तिनका फल यह कथन नाम मात्र कहै है।

अनन्तानुबन्धी क्रोध पाषाण की लीक समान जानना। अनन्तानुबन्धी मान पाषाण का स्तम्भ समान जानना।

अनन्तानुबन्धी माया बांसका विडा समान है वा हिरण सींग समान जाननी और अनन्तानुबन्धी लोभ कृमि जीव के रंग समान जानना । ए च्यारौं अनन्तानुबन्धी क्रोध मान, माया, लोभ, नरक गति विषैं ले जाय हैं, यह नियम है । ए कषाय अनन्त संसार के बंधन नैं कारण है।

अप्रत्याख्यानी क्रोध हल की लीक समान जानना सो छह महीना रहै । अप्रत्याख्यानी मान हाड का थम्भ समान है । अप्रत्याख्यानी माया मींडा का सींग समान है । अप्रत्याख्यानी लोभ गाडी की धुरा का मैल समान है । ए च्यारौं अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ तिर्यंच गति विषैं ले जाय है ।

प्रत्याख्यानी क्रोध गाडी की लीक समान है । प्रत्याख्यानी मान काठ का थंभा समान है । प्रत्याख्यानी माया गाय का मूत्र समान है । प्रत्याख्यानी लोभ शरीर का मैल समान है । ए च्यारौं कषाय पन्द्रा दिन रहै । प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ जीव कौं मनुष्यगति विषैं ले जाय ।

संज्वलन क्रोध जल की लीक समान है । संज्वलन मान वेद की लकड़ी समान है । संज्वलन माया खुरपा समान है । संज्वलन लोभ हलद का रंग समान है ।

द्यानतराय कहै है ए च्यारि संज्वलन की क्रोध, मान, माया लोभ देवगति विषैं ले जाय।

– चौदह गुणस्थानों में चौतीस भावों की व्युच्छित्ति –

पहिलैं मिथ्यात अभव्व दूसरै विभंग तीन,
लेस्या तीन अव्रत नरक देव चारमैं।
पशु पांचैं लेस्या दोय सातैं लोभ दसैं लग,
क्रोध मान माया तीन वेद नौ विचार मैं।
मत तेरैं नर भव्व जीवत असिद्ध चौदैं,
पंचलब्धि अज्ञान चख अचख बारमैं।
चौतीसौं भाव कहे चौदह गुनथानक मैं,
वे उनीस बारहमैं मैं हौं अविकार मैं ॥६२॥

अब चौतीस भाव चौदह गुणस्थाननि विषैं कहां २ घटै तिनका जुदा २ कथन —

पहले गुणस्थान के अन्तविषैं मिथ्यात्व और अभव्य ए दोय भाव घटे। दूसरा सासादन गुणस्थान विषैं तीन विभंग ज्ञान घटे। कृष्ण, नील, कापोत, तीन लेस्या, अर अव्रत और नरक गति, देवगति, इन छह भावनि की अव्रत गुणस्थान कै अन्त व्युछित्ति हो है। पांचमैं गुणस्थान एक तिर्यंचगति की व्युछित्ति होहै। सातमैं गुणस्थान

के अन्त विषें पीत लेस्या, पद्मलेस्या, दोय लेस्या घटी। दशमां सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान विषें एक सूक्ष्म लोभ घट्या और नवमें अनिवृत्तिकरण गुणस्थान विषैं क्रोध, मान, माया, ए तीन कषाय और स्त्री, पुरुष, नपुंसक ए तीन वेद ए छह भाव नवमां का अन्त विषें घटे । तेरमां गुणस्थान के अन्त एक शुक्ल लेस्या घटी। और चौदमां गुणस्थान विषैं मनुष्यगति, भव्यत्व, जीवित्व, असिद्धत्व, ए च्यार भाव चौदमां गुणस्थान विषें घटे। क्षयोपशम की लब्धि पांच और अज्ञान और चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, ए आठ भाव बारमें गुणस्थान के अन्त घटे । ए चौतीस भावनि की इस भांति व्युछित्ति गुणस्थानक विषें कही। और बाकी उगणीस भाव बारह गुणस्थान विषैं जानने। और निश्चय नय करि मैं एक परिणाम भाव करि संयुक्त हों, इन सब विकारनि तैं रहित हैं।

— बारह गुणस्थानों में उन्नीस भाव —

उपसम चोथें ग्यारें वेदक है चौथें सातें,
च्चायक है चौथें चौदें, देशव्रत पांच मैं ।
ज्ञान तीन तीजें बारैं, मनपजें छट्ठे बारैं,
चारित सराग छट्ठे दसैं कह्यो सांच मैं ।
औधि तीजें बारैं, उपसम चारित ग्यारैं ही,

क्षायिक चारित बारैं चौदैं कर्म वाच मैं।
पंचलब्धि क्षायिक दरस ज्ञान तेरैं चौदैं,
नमौं भाव उनवीस छूटैं नर्क आंच मैं ॥६३॥

अब उगणीस भाव बारमां गुणस्थान कै विषैं किस किस भांति हैं तिनका नाम मात्र कथन——

उपशम सम्यक्त्व चौथा गुणस्थान तैं लेकैं ग्यारमां गुणस्थान ताईं पाईए। और वेदक सम्यक्त्व चौथा गुणस्थानतैं लेकैं सातमां गुणस्थान ताईं पाइए। अर क्षायिक सम्यक्त्व चौथा गुणस्थान सूं लेइ चौदमां गुणस्थान ताईं पाईए, तथा सिद्धनि विषैं भी पाईए। और देशव्रत भाव पाँचवां गुणस्थान विषैं ही होय और पांचवां ताईं पाईए, आगैं नाहीं पाइए। और तीन सुज्ञान चौथा गुणस्थान तैं बारवां गुणस्थान ताईं पाईए। और इननैं तीसरे तैं लेकैं कहा सो हमारी समझि में न आया, किस भांति कहा। मिश्रज्ञान की अपेक्षा कहा होयगा। और मनः पर्ययज्ञान छठा गुणस्थान तैं लेकै वारमां गुणस्थान ताईं पाइए सो महाव्रती मुनीश्वरनि कै पाईए यह जानना। और सरागचारित्र छठा गुणस्थान तैं लेकै दशमां गुणस्थान ताईं पाइए। दशमां आगै वीतराग भाव है, सराग भाव नाहीं। अवधि दर्शन चौथा तैं लेइ वारवां तक पाईए।

मिश्र ज्ञान की अपेक्षा तीजा तैं कह्या है। उपशम चारित्र ग्यारमां गुणस्थान विषैं होहै, सो उपशम चारित्र ग्यारमो गुणस्थान विषैं ही पाईए। क्षायिक चारित्र बारमां गुणस्थान तैं लेकैं चोदमां गुणस्थान विषैं कर्म का अन्त ताईं जानना। क्षायिक की पांचलब्धि और केवल दर्शन, केवल ज्ञान ए सात भाव तेरवां गुणस्थान विषैं चौदमां गुणस्थान विषैं जानने। इस भांति उगणीस भाव जानने। सो तिनके वंदिवे तैं स्मरण तैं नरकनि की आयु तैं रहित होय मोक्ष कूं प्राप्त होय।

चौदह गुणस्थान विषैं आश्रव भाव आयु उगणीसभाव यंत्र

गुणस्थान	मि	सा	मि	अ	दे०	प्र	अ	अ	अ	सू	उ	क्षी	स	अ	
आश्रव	५	४	०	७	१५	२	०	६	६	१	०	४	७	०	व्युच्छित्ति
भाव	२	३	०	६	१	०	२	०	६	०	०	८	१	४	व्यु०
आयु बंध	४	३	०	४	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	व्यु०
आयु उदय	४	४	४	४	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	व्यु०
उगणीस भाव	०	०	५	७	८	६	६	८	८	८	८	८	६	६	पाइए
	०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
	०	०	०	०	१	०	१	०	०	१	२	५	०	५	

— चारों गतियों में आश्रव द्वार —

सवैया इकतीसा

वैक्रियक दोय बिना नर पचपन द्वार,
आहारक दोय बिना त्रेपन तिर्यंच हैं।

औदारिक दोय दोय आहारक षंढवेद,
पांच विना देवनि के बावन कौ संच है ।
आहारक दोय दोय औदारिक नरनारी,
छहौं विना इक्यावन नर्क में प्रपंच है ।
चारौं गति मांहि ऐसे आस्रव सरूप जानि,
नमौं सिद्ध भगवान जहां नाहिं रंच है ॥६४॥

अब च्यार गति विषैं सत्तावन आश्रवद्वार केते २ यह कथन---

वैक्रियक, वैक्रियकमिश्र इन दोय योग बिना मनुष्य गति विषैं सामान्य आश्रव द्वार पचावन है, यह जानना । और तिर्यंच गति विषै वैक्रियक, वैक्रियक मिश्र तौ दोय तौ मनुष्य में नांही थे अर आहारक, आहारक मिश्र इन दोय विना त्रेपन आश्रव द्वार हैं । और सत्तावन आश्रवनि विषै औदारिक, औदारिक मिश्र, आहारक, आहारक मिश्र, नपुंसक वेद इन पांच विना देवनि कै बावन आश्रव द्वार जानना ।

आहारक, आहारकमिश्र, औदारिक, औदारिक मिश्र स्त्री वेद, पुरुष वेद इन छहौं विना नारकी जीवनि के सामान्य इक्यावन आश्रवद्वार जानने । इस भांति च्यारौं गति विषैं आश्रवद्वार जानने । मैं सिद्ध भगवान अनन्ता है तिननै

नमस्कार करौहौं जहाँ सिद्धनि विषैं रंचमात्र भी आश्रव नाहीं।

चारों गति विषैं सामान्य आश्रव यन्त्र

गुणस्थान	मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ	सू	उ	क्षी	स	अ
मनुष्य	५३	४८	४२	४४	३७	२४	२२	२२	१६	१०	९	९	७	०
तिर्यंच	५३	४८	४२	४४	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०
देव	५२	४७	४१	४३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
नारकी	५१	४६	४०	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

— चारों गतियों में त्रेपन भाव ब्यौरा —

सासतौ स्वभाव पंचभाव सिद्ध वंदत हौं,
तीनौं गति विना नरकै पचास दीस हैं।
क्षायक के आठ समकित विना पनपजैं,
चारित दोय ग्यारै बिन पशु उन्तालीस है।
सुभ लेस्या तीन नरनारिवेद देशव्रत,
एते छहौं भाव बिना नारक तेतीस हैं।
हीन तीन लेस्या षंढवेद चारि भाव नाहिं,
सुभ लेस्या नरनारि सुरकै चौंतीस हैं ॥६५॥

अब च्यारौं गति विषैं त्रेपनि भावनि का ब्यौरा—

केवलदर्शन, केवलज्ञान, क्षायिक सम्यक्त्व, अनन्त

वीर्य, जीवत्व ए पांच भाव सिद्धनि विषैं अविनाशी हैं। तिनकौं मैं बन्दौ हौं, नमस्कार करौहौं, पूजौं हौं। नरकगति, तिर्यंचगति, देवगति, इन गति विना मनुष्यनि कै पचास भाव सामान्यपणैं जानने। क्षायिक के आठ—केवलज्ञान, केवलदर्शन, यथाख्यात क्षायिक चारित्र, क्षायिकलब्धि पांचः–दान, लाभ, भोग उपभोग, वीर्य ए पांच, ए क्षायिक के आठ। मनःपर्यय ज्ञान, उपशम चारित्र, क्षयोपशम चारित्र, ए दोय, इन ग्यारा भाव विनां तिर्यंचनि कै गुणतालीस भाव हैं। पीत पद्म शुक्ल ए तीन लेस्या, पुरुष वेद, नपुंसकवेद, ए दोय वेद, देशव्रत इन छहौं भाव विना नारकी जीवनि कै सामान्य तेतीस भाव हैं। इन तेतीस भावनि विषैं खोटी तीन लेस्या घटाईए अर नपुंसक वेद इन च्यारि भावनि कूं घटाइए, तब गुणतीस रहे। तिन विषैं तीन शुभ लेस्या पीत पद्म, शुक्ल, अर स्त्री वेद, पुरुषवेद, ए पांच मिलाइए तब चौतीस भए। सो ए चौतीस भाव सामान्यपणैं देवनि के जानने।

चारो गति विषैं सामान्य भाव

गुणस्थान	मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ	सू	उ	क्षी	स	अ	सि
मनुष्य	३१	२९	३०	३३	३०	३१	३१	२८	२८	२२	२१	२०	१५	१३	५
तिर्यंच	३१	२९	३०	३२	२९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
देव	२६	२४	२५	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
नारकी	२६	२४	२५	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

—— छहों लेश्या वालोंके मिथ्यात्व गुणस्थान में कौन२ कर्मों का बन्ध होता है ——

विकलत्रै सूच्छम साधारन अपर्जापत,
नरकगति आनुपूर्वी नरक आव हैं।
मिथ्यामांहि लेस्या तीन बांधै इकसो सतरै,
नव बिना पीत कै अटोतरसौ भाव हैं।
एकेंद्री थावर औ आतप इन तीन बिना,
पद्म एकसौ पांच बन्ध को उपाव हैं।
पशुगति आउ आनुपूरवी उदोत बिना,
सुकल एकसौ एक बंधै पुन चाव हैं ॥६६॥

छह लेस्या वाले जीव मिथ्या गुणस्थान विषैं कर्म बांधै तिनका ब्यौरा ——

वे इन्द्री, ते इन्द्री, चौ इन्द्री, ए विकलत्रय तीन, काहू तैं रुकै नाहीं सो सूक्ष्म, अनंतानि का समुदाय सो साधारन, अन्तरालवर्ती सो अपर्यापत, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, नरक आयु, (इन ११७ का) मिथ्यात्व गुणस्थान विषैं कृष्ण, नील, कापोत लेस्या वाला जीव एक सौ सत्तरा प्रकृति का बन्ध करै। उपरि कहै नौ, विकलत्रय ३ नारक के ३ सूक्ष्म १ साधारन १ अपर्याप्त इन नौ भाव प्रकृति

बिना एक सौ आठ प्रकृतिका पीतलेस्या वाला जीव (मिथ्यात्वविषैं) बन्धकरै है। एकेंद्री, स्थावर, और आतप इन तीन बिना पद्मलेस्या वाला जीव मिथ्यात विषैं एक सौ पांच प्रकृतिनिका बन्ध करै है। तिर्यंचगति, तिर्यंच आयु, तिर्यंच गत्यानुपूर्वी, उद्योत इन च्यारि प्रकृति बिना मिथ्यात्व गुणस्थान विषैं शुक्ल लेस्या वाला जीव एक सौ एक प्रकृति का बंध करै है।

छहों लेश्यावालेनिकै बंध प्रकृतिनिका यंत्र

गु०	मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ	सू	उ	क्षी	स	अ
कृष्ण	११७	१०१	७४	७७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
नील	१ ७	१०१	७४	७७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
कापोत	११७	१०१	७४	७७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
पीत	१०८	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	०	०	०	०	०	०	०
पद्म	१-५	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	०	०	०	०	०	०	०
शुक्ल	१०१	९७	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१	१	०

—: चौरासी लाख योनियां :—

सात लाख पृथ्वीकाय सात लाख अपकाय,
सात लाख तेजकाय सात लाख वात है।
सात लाख नित्य औ इतर सात साधारन,
दस लाख प्रत्येक एकेंद्री गात है।

वे ते चव इन्द्री दो दो मानुष चोदै लाख,
नर्क स्वर्ग पशु चार चार लाख जात है।
चौरासी लाख जाति मो ऊपरि क्षमा करो,
हमहूँ नैं क्षमाकरी बैर किये घात है ॥ ६७ ॥

अब चौरासी लाख जाति का जुदा २ व्यौरा का नाम मात्र कथन—

पृथ्वी काय जीवनि की सात लाख जाति है। जल-कायिक जीवनि की जाति सात लाख है। अग्निकायिक जीवनि सात लाख जाति है। पवनकायिक जीवनि की जाति सात लाख है। नित्यनिगोदियानि की जाति सात लाख है। और इतर निगोदियानि की जाति सात लाख है साधारण की, ऐसें नित्य इतरतैं चौदह लाख जाति है। प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीवनि की दश लाख जाति है। ऐसे ऐकेंद्री जीवनि की बावन लाख जाति है। वे इन्द्री जीव दोय लाख, ते इन्द्री जीव दोय लाख, चौइन्द्री जीव दोय लाख जाति है। ऐसे विकलत्रय की छह लाख जाति भई। मनुष्यनि की चौदह लाख जाति है। नारकी जीवनि की च्यारि लाख जाति है। देवनि की च्यारि लाख जाति है। पंचेंद्री तिर्यंचनिकी च्यारि लाख जाति है। ऐसें पंचेंद्री

चोरासी लाख योनि जाति जीवनि की का यंत्र

एकेन्द्री											विकलत्रय				पंचेन्द्री					
				वनस्पति साधारण																
पृथ्वी काय	जल काय	तेज काय	वायु काय	नित्य	इतर	जोड	प्रत्येक	जोड	कुल जोड		बेइन्द्री	तेइन्द्री	चौइन्द्री	जोड	नारकी	तिर्यंच	देव	मनुष्य	जोड	जोड कुल
७०००००	७०००००	७०००००	७०००००	७०००००	७०००००	१४०००००	१००००००	२४०००००	५२०००००		२०००००	२०००००	२०००००	६०००००	४०००००	४०००००	४०००००	१४०००००	२६०००००	८४०००००

जीवनि की छब्बीस लाख जाति है। सबनि का जोड़ चौरासी लाख जाति का भया।

सो चौरासी लाख जाति म्हारै ऊपरि क्षमा करौ। अरु हमनैं भी चौरासी लाख जाति परि क्षमा करी है। और वैर भाव का करना महादुखदाई है, भव भव मैं घात का कारण है।

जिन त्रेसठ कर्म प्रकृतियों के नाश होनेपर केवलज्ञान
— होता है उनका ब्यौरा

नर्क पशुगति आनुपूरवी प्रकृति चारि,
पंचेंद्रिय विना चारि आतप उदोत हैं।
साधारन सूक्षम और थावर प्रकृति तेरै,
नर आव विना तीन मिलि सोलै होत है।
सैंतालीस घातियां की त्रेसठि प्रकृति सर्व
नाश भए तीर्थङ्कर ज्ञानमयी जोत हैं।
देवनि के देव अरहन्त हैं परम पूज्य,
तिनही को बिम्ब पूजि होहिं ऊंच गोत हैं॥९८

अब त्रेसठि प्रकृतिनि का नाश भये केवलज्ञान उपजै है तिनके नाममात्र कथन--

नरकगति, तिर्यंचगति, नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी ए च्यारि प्रकृति, पंचेन्द्री विना एकेन्द्री, वेइन्द्री, ते इन्द्री, चौ इन्द्री, ए च्यारि जाति, आतप, उद्योत, साधारन, सूक्ष्म और स्थावर ए तेरा प्रकृति १३ नाम जाननी कर्म की। मिनख आयु विना तीन आयु। ए सब मिलि करि सोला प्रकृति अघातियांनि की भई। सैंतालीस प्रकृति घातियां की ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ६, मोहनी २८, अन्तराय ५ ए सैंतालीस घातियां की। अर अघातिया की १६ मिलि त्रेसठि प्रकृति भई। इन त्रेसठि प्रकृतिनी का नास भए प्रकृति बन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभाग बन्ध, प्रदेश बन्ध सर्व नाश भए तीर्थंकर देव कै तीर्थङ्कर प्रकृति का उदय होय है। केवलज्ञान दर्शन, ज्योतिमई निजस्वभाव प्रकट होत है। तिन अर्हन्त देवाधिदेव तिनका प्रतिबिम्ब के नमस्कार कीये, पूजन कीये, उच्च गोत्र का बंध हो है। जो जीव जिनेन्द्रदेवजी की प्रतिमानैं पूजै है सो उच्चकुल विषैं उपजै है।

– चारों गतियों में बन्ध योग्य प्रकृतियों कथन –

औदारिक दोय आहारक दोय नर्क देव,
गति आउ आनुपूरवी दसौं वखानी है।
विकलत्रै सूक्षम साधारन अपजापत,

सोलैं विन सत चार देव कैं प्रवानी हैं।
एकेन्द्री थावर आतप तीन प्रकृति विना,
नर्क एक सत एक बंध जोग ानी है।
तीर्थङ्कर आहारक विना पशु सौ सतरै,
नरकै वीसां सौ सवनाशै शिवथ जानी है ॥६६॥

अब च्यारौं गति विषैं एक सौ बीस प्रकृतिनि का बन्ध का जुदा जुदा व्यौरा का कथन —

औदारिक, औदारिक अंगोपांग, आहारक, अहारक अंगोपांन, नरकगति, देवगति ए २, नरक आयु देव आयु ए २, नरक गत्यानुपूर्वी देवगत्यानुपूर्वी ए २, ए दश प्रकृति भई। वे इन्द्री, ते इन्द्री, चौ इन्द्री, ए ३, सूक्षम, साधारन, अपर्याप्त, इन सोलै विना वाकी एक सौ च्यारि प्रकृति देवगति विषैं सामान्य बन्ध जोग्य है। एकेंद्री, स्थावर, आतप, इन तीन प्रकृति बिना नरकगति विषैं नारकीनि कै सामान्य एक सौ एक प्रकृति का बन्ध होहै। देवगति की १०४ विषैं तीन प्रकृति घटाएँ तब एक सौ एक नरकगति विषैं बन्ध जोग्य जाननी। एक सौ बीस प्रकृतिनि विषैं तीर्थङ्कर, अहारक, अहारक अंगोपंग, इन तीन बिना तिर्यंचनि कै सामान्य एक सौ सत्तरा का बंध है। मनुष्य गति विषैं सर्व एक सौ बीस प्रकृतिनि का

बन्ध हो है। इन सब एक सौ बीस का बन्ध का नाश करै तब मोक्ष पदकूं प्राप्त होय यह जानना।

चारौं गति विषैं सामान्य बंध प्रकृति १२०

गुण०	मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ	सू	उ	क्षी	स	अ
मनुष्य	११७	१०१	६९	७२	६०	६३	५६	५८	२२	१७	१	१	१	०
देव	१०४	९६	७०	७२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
नारकी	१०३	९६	७०	७२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
तिर्यंच	११७	१०१	६९	७२	६७	०	०	०	०	०	०	०	०	०

— समस्त जीवों की उत्कृष्ट आयुका ब्यौरा —

मृदु भूमि बारै खर भू बाईस जल सात,
वात तीनि तरू काय की दस हजार है।
पंछी की बहत्तरि सहस वियालीस सांप,
आगि दिन तीनि वेइन्द्री वरष बार है।
तेइन्द्री दिन उनचास चौइन्द्री छह मास,
सरी सृप पूर्वाङ्ग नव आयु धार है।
मच्छ कोरि पूरव मनुष्य पशु तीन पल्य,
सागर तेतीस देव नारकी की सार है॥१००॥

एकेन्द्रियादि पंचेद्रिय पर्यन्त सब जीवनि का उत्कृष्ट आयु का जुदा २ कथन —

गेरु हरताल आदि कोमल पृथ्वीकायिक जीवनि की उत्कृष्ट स्थिति वारा हजार। पाषाण आदि कठोर पृथ्वी कायिकनि की उतकृष्ट बाईस हजार वर्ष की। जल काय जीव सात हजार वर्ष, पौन कायिक तीन हजार वर्ष, वनस्पति कायिक जीवनि की उत्कृष्ट स्थिति दश हजार वर्ष की। आकाश विषैं उडे ऐसे जे पखेरू जीव तिनकी उत्कृष्ट थिति बहत्तरि हजार वर्ष की। और सर्पनि की उत्कृष्ट स्थिति बीयालीस हजार वर्ष की। और अग्निकाय के जीवनि की उत्कृष्ट स्थिति तीन दिन की। संख आदि बेइन्द्री जीवनि की उत्कृष्ट स्थिति वारा वर्ष की जाननी। गोभिका आदि तेइन्द्री जीवनि की स्थिति गुणचास दिन की। भ्रमर आदि चौइन्द्री जीवनि की उत्कृष्ट स्थिति छह मास की। जो छाती कै पांन चलै सो जीव सरीसर्प कहिए, ता सरीसर्प की उत्कृष्ट आयु नव पूर्वांग की है। ताके वर्ष अङ्क द्वार करि सात कोडि छप्पन लाख वर्ष भए। मच्छनि की उत्कृष्ट आयु एक कोडि पूर्व की है। ताके वर्ष अंक द्वार करि इतने ७०५६०००००००००० ०००००००। और मनुष्यनि की वा तिर्यंचनि की उत्कृष्ट आयु भोगभूमियानि की पल्य तीन अर कर्मभूमियानि की कोडि पूर्व की। और देव तथा नारकीनि की उत्कृष्ट

एकेंद्रियादि पंचेंद्री जीवनि का उतकृष्ट आयु चारों गति अपेक्षा यन्त्र

वर्ग	उपवर्ग	जीव	उत्कृष्ट आयु
एकेन्द्री स्थावर		कठिन पृथ्वी	२२००० वर्ष
एकेन्द्री स्थावर		कोमल पृथ्वी	१२००० वर्ष
एकेन्द्री स्थावर		जलकाय	७००० वर्ष
एकेन्द्री स्थावर		अग्निकाय	३ दिनकी
एकेन्द्री स्थावर		पवन काय	३००० वर्ष
एकेन्द्री स्थावर		वनस्पति काय	१०००० वर्ष
विकल		बेइन्द्री जीव	१२ वर्ष
विकल		तेइंद्री जीव	४९ दिन
विकल		चौइन्द्री जीव	६ महिना
पचेन्द्री जीव	तिर्यञ्च	जलचर	१ कोड़ि पूर्व
पचेन्द्री जीव	तिर्यञ्च	कर्म भूमि नभ.	७२०००
पचेन्द्री जीव	तिर्यञ्च	भोग भूमि नभ.	३ पल्य
पचेन्द्री जीव	तिर्यञ्च	भोग० थलचर	३ पल्य
पचेन्द्री जीव	तिर्यञ्च	सर्पादि कर्म. थल.	४२००० वर्ष
पचेन्द्री जीव	तिर्यञ्च	मत्स्यादि	१ कोड़ि पूर्व
पचेन्द्री जीव	तिर्यञ्च	सरीसर्प कर्म. थल	नव पूर्वाङ्ग
पचेन्द्री जीव	मनुष्य	कर्मभूमि	१ कोड़ि पूर्व
पचेन्द्री जीव	मनुष्य	भोगभूमि	३ पल्य तीन
पचेन्द्री जीव	देव	भवनवासी	१ सागर एक
पचेन्द्री जीव	देव	व्यन्तर देव	१ पल्य एक
पचेन्द्री जीव	देव	ज्योतिषी	१ पल्य एक
पचेन्द्री जीव	देव	कल्पवासी	३३ सागर
पचेन्द्री जीव		नारकी जीवनि की उत्कृष्ट आयु सातवां नर्कको जाननी	३३ सागर

आयु तेतीस सागर की है। और मध्य जघन्य के भेद कहे नहीं ते आगम तैं देखि लेनां।

— नक्षत्रों के तारे और अकृत्रिम चैत्यालय —

षट पांच तीन एक षट तीन षट च्यारि,
दो दो पांच एक एक चौ षट तीनौं गहे।
नव चौ चौ तीन तीन पांच एक सौ ग्यारह,
दोय दो बतीस पांच तीन तारे ए लहे।
कृतिकादि ठाईस के सब दोसै इकताली,
एक एक के ग्यारह सै ग्यारै सरदहे।
दोय लाख सतसठि हजार नवसै वानूं,
सब चैताले प्रतिबिंब बांनी में कहे ॥१०१॥

कृतिका आदि अठाईस नक्षत्रनि के विमान तिनकी जुदी २ संख्या। तिन विषैं एक २ जिन मन्दिर तिनकी संख्यापूर्वक बन्दना करै है —

कृतिका के छह तारे, रोहिणी के पांच तारे, मृगशिर के तीन तारे, आर्द्राको एक तारो, पुनर्वसु के छह तारे, पुष्य के तीन तारे, अश्लेषा के छह तारे, मघा के च्यारि तारे, पूर्वाफाल्गुनी दोय, उत्तराफाल्गुनी दोय, हस्त के

पांच तारे, चित्रा को एक तारो, स्वाति को एक तारो, विशाखा का च्यार तारा, अनुराधा का छह तारा ज्येष्ठा का तीन तारा, मूल के नव, पूर्वाषाढ के ४, उत्तराषाढके ४, अभिजित के ३, श्रवण के३, धनिष्टा के पांच, शतभिसाका १११ तिनका सव तारा १२३३२१। पूर्वा भाद्रपद ५दा दोय, उत्तराभाद्रपदा दोय, रेवती बत्तीस, अश्विनी पांच, भरिणी तीन, सब उत्तर भेद कौं तारे दोय लाख सडसठि हजार नवसै बाणवै तारै भए। कृतिका आदि अठाईस नक्षत्रौं के सव भेद दोय सै इकतालीस भए। बहुरि दोय सै इकतालीस के एक २ विषै ग्यारासै ग्यारा श्रद्धान करना। इन सबनि मैं सास्वते जिनेन्द्र भगवान के चैतालै हैं तिन विषैं जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमाजी हैं। इस भांति जिनेन्द्र भगवान की दिव्यध्वनि विषैं कहा है।

अठाईस नक्षत्रनिके विमानविषैं एक एक में एक एक जिन मन्दिर तिन जुदा २ का व्योरा का यन्त्र

नक्षत्र नाम	संख्या	उत्तरभेद (तारे)
१ कृतिका	६	६६६६
२ रोहिणी	५	५५५५
३ मृगसिर	६	३३३३
४ आर्द्रा	१	११११
५ पुनर्वसु	६	६६६६

६	पुष्य	३		३३२३
७	अश्लेषा	६		६६६६
८	मघा	४		४४४४
९	पूर्वाफाल्गुनी	२		२२२२
१०	उत्तराफाल्गुनी	२		२२२२
११	हस्त	५		५५५५
१२	चित्रा	१		११११
१३	स्वाति	१		११११
१४	विशाखा	४		४४४४
१५	अनुराधा	६		६६६६
१६	ज्येष्ठा	३		३३३३
१७	मूल	९		९९९९
१८	पूर्वाषाढ	४		४४४४
१९	उत्तराषाढ	४		४४४४
२०	अभिजित	३		३३३३
२१	श्रवण	३		३३३३
२२	शतभिशाखा	११		११२३३२१
२३	पूर्वाभाद्रपद	२		२२२२
२४	उत्तराभाद्रपद			२२२२
२५	धनिष्ठा	५		५५५५
२६	रेवती	३२		३५५५२
२७	अश्विनी	५		५५५५
२८	भरणी	३		३३३३
	जोड़ २८	२४१	+	२६७७५१
		=	२६७९९२	

— जिनवाणी के सात भंग —

द्रव्यक्षेत्र काल भाव अपने चतुष्टय अस्ति,
परके चतुष्टयसैं न नासति दरव हैं।
आपसैं है परसैं न एक समैं अस्तिनास्ति
ज्यौं के त्यौं न कहे जांहि अस्ति अव्वतव्व है।
अस्ति कहें नास्ति का अभाव अस्ति अवततव्व
नास कहे अस्ति नांहि नाश अवतव्व है।
एकठे कहे न जांहि अस्ति नास्ति अवतव्व,
स्याद्वाद सेती सात भंग सधैं सब है ॥१०२॥

स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्तिनास्ति, स्यादवक्तव्य, स्यादस्ति अवक्तव्य, स्यान्नास्ति अवक्तव्य, स्यादस्तिनास्ति अवक्तव्य ऐसे भगवान की वानी के सात भंग हैं तिनका अर्थ कहिए है।

अपनी पर्यायनि कौं प्राप्त होय सो द्रव्य। अपनी सत्ता विषैं तिष्ठै सो क्षेत्र। आप रूप परनमैं सो काल। अपनी शक्ति सो भाव। द्रव्य क्षेत्र काल भाव ऐसे अपने चतुष्टय करिकै द्रव्य अस्ति है, आपसा है, यह स्यादस्ति कहिए। जो द्रव्य है सो द्रव्य क्षेत्र काल भाव ऐसे अपने अपने चतुष्टनै सब लीए है तातैं पर द्रव्य के चतुष्टय की

अपेक्षा द्रव्य नास्ति है, पर सा नांही, यह स्यान्नास्ति कहिए। अपने चतुष्टय करि द्रव्य अस्ति है, परके चतुष्टय करि द्रव्य नास्ति है। तातैं एकही बार एक ही काल द्रव्य अस्ति नास्ति है आपसैं है, परतैं नाहीं। तातैं यह अस्ति नास्ति कहिए। द्रव्य का स्वरूप एकान्त करि ज्यों का त्यौं है, सर्व न कह्या जाय, जो अस्ति कहै तो नास्ति का अभाव आवै, नास्ति कहे अस्ति का अभाव होय, अर अस्ति नास्ति एकै काल कह्या जायता नांही। तातैं द्रव्य स्यादवक्तव्य ऐसा कहिए। जो सर्वथा द्रव्य अस्ति कहिए तौ नास्तिका अभाव होयगा, द्रव्य अस्ति रूप है, पर कह्या जाय नाहीं। यह अस्ति अवक्तव्य कहिए। और जो द्रव्यनैं सर्वथा नास्ति कहिए तो अस्ति ताका अभाव होय द्रव्य नास्ति रूप है, पररूप कहा जाता नांही, तातैं यह स्यान्नास्ति अवक्तव्य है। अस्ति के कहने विषैं नास्ति का अभाव और नास्ति के कहने विषैं अस्ति का अभाव होय क्योंकि वचनक्रमवर्ती हैं, तातैं अस्ति नास्ति दोन्यौं एकठे एकै काल कहे न जाय। द्रव्य अस्ति नास्ति एकै काल है परन्तु कहा जाता नाहीं, तातैं स्यादस्तिनास्ति अवक्तव्य कहिए। स्यात् पद का कथंचित् अर्थ जानना। सब पर स्यात् पद सहित। इस भांति एक द्रव्य स्याद्-वाद सेती सप्त भंग रूप सधै है। इस सप्तभंग गर्भित

जिनवानी का विशेष कथन दृष्टान्त सहित भाषा वचनिका कर्मकाण्ड विषैं देखि लेना, पंडित हेमराजजी ने विशेष कहा है ।

सप्त भंग जिनवाणी का जंत्र

स्यादस्ति १	प्रथम
स्यान्नास्ति २	द्वितीय
स्यादस्तिनास्ति	तृतीय
स्यादवक्तव्य	चतुर्थ
स्यादस्ति अवक्तव्य	पंचम
स्यादस्तिनास्ति अवक्तव्य	षष्टम
स्यादस्तिनास्ति वक्तव्य	सप्तम

स्यात् शब्द का कथंचित् अर्थ है ।

—: सर्वज्ञ के ज्ञान की महिमा :—

जीव है अनंत एक जीव के अनंत गुण,
एक गुण के असंख परदेश मानिए ।
एक परदेश में अनंत कर्म वर्गणा है ।
एक वर्गना में अनंत परमाणु ठानिए ।
अनु में अनंत गुण एक गुण में अनंत,
परजाय एक के अनंत भेद जानिए ।

तिन तैं हुए अनंत तातैं हों हिंगे अनंत,
सब जांनै समै मांहि देव सो बखानिए ॥१०३

अब सर्वज्ञदेव का ज्ञान की महिमा दिखाइए है—

सब ही जीव अपनी २ सत्ता लिए अनन्ते हैं। जीव रासि की संख्या का प्रमाण द्विरूप वर्गधारा विषैं कह्या है तहां जानना। और एक जीव के अनन्त गुण हैं ते जीव राशि तैं भी अनन्तगुणे हैं, तो भी आलाप करि अनन्त ही कहे जाय हैं। जो जीव है सो असंख्यात प्रदेशी है और निश्चय करि जीव और गुण इनकै भेद नाहीं, अभेद है। तातैं एक २ असंख्यात २ प्रदेशी जानने, श्रद्धान करने। और जीव के एक २ प्रदेश ऊपरि अनंत२ कर्मवर्गणा है संसारी जीव के प्रदेशनि विषैं एकावगाही होइ करि परस्पर तिष्ठै है। एक एक कर्मवर्गणा विषैं अनन्तानन्त पुद्गल परमाणु हैं क्योंकि अनन्ता परमाणु मिलें बिना कर्मरूप वर्गणा होय नाहीं है। बहुरि पुद्गल की एक २ परमाणुविषैं अनन्ते २ गुण हैं। बहुरि एक२ गुण अनन्त २ परजाय रूप परिणमैं हें। यह कथन इस भांति जानना। और एक २ पराजय के अनन्त २ भेद जानिये। द्रव्य के भी अनन्त भेद हैं। सो वर्तमान काल विषैं अनन्त प्रकार रूप परिणवै है। और तिन वर्तमान

परिणतिनि तैं अतीतकाल अनन्तगुन परनया अनंतधा रूप ह्वै कैं। और अतीतकाल की परणति तैं अनागतकाल विषें अनन्त गुन परणयो अनन्त प्रकार रूप करिकैं। और केई प्रानी ए सब अतीत अनागत वर्तमान परजाय परिणति तिननैं एक समय विषैं साक्षात् देखैं और जानैं जाकी ज्ञान आरसी विषैं सब झलकै सो सर्वज्ञदेव कहिए। यह कथन बानारसीदासजी की वचनिका विषैं देखि लेना विचारना।

अब ग्रन्थ की पूर्णता अथवा कविता का करण का अनुग्रह भाव कथन--

-- कवि का अन्तिम कथन --

(छप्पय)

चरचा मुख सौं भनैं सुनैं नहिं प्रानी कानन,
केई सुनि घर जाय, नाहिं भाखै फिरि आनन,
तिनको लखि उपगार सार यह शतक बनाई,
पढ़त सुनत ह्वै बुद्धि सुद्ध जिनवानी गाई।
इसमैं अनेक सिद्धान्त का
मथन कथन 'द्यानत' कहा,

सब मांहि जीव को नाम है
जीव भाव हम सरदहा ॥१०४॥

जो पुरुष सज्जन हैं उपकारी हैं सर्वशास्त्र के ज्ञाता हैं ते पुरुष चर्चा शास्त्र न्याय मुख सौं करैं और दयाल होय सूत्र मा फक वचनिका रूप बुद्धि बल करि चर्चा करै हैं। या भांति वचनिका रूप सूत्र माफिक गुरू चर्चा करैं, सभा विषैं सुनावें परन्तु और हू प्रानी कान देकै सुनै नांही, सुननै विषैं मन लगावै नांही, और केई प्रानी चर्चा सुन करि अपने घर विषैं जाय घरके धन्धे विषैं फंसिकरि विसरि जाय हैं। घर विषैं चरचा कौं अपनै मुखसैं नांही भाषै है, फिरि २ सुनि विसरि जाय, यादि राखै नांही। तिनपरि अनुग्रह करि कै दयाल होइ कै उपकार करनैं कै अर्थि सार कहिए महामनोज्ञ गंभीर अर्थ सौं भरे यह शतक कहिए सौव कवित्त द्यानतराय जैनी आगरावाले नैं बनाये, छन्द बांधे। तिनकी पंजिका हरजीमल पानीयपथीनैं करी। तिस सौव कवित्त बन्ध चर्चा शतक के सुनवै तैं पढिवै तैं एक सौ कवित्त मन लाइ कै पढै सुनैं तिनकी महान तीक्ष्ण बुद्धि होय। इन सौव कवित्तनि विषैं एक शुद्ध जिनेश्वर देव की वानी है तिनके पढिवे तैं सुनिवे तैं महा निर्मल बुद्धि होय। इस चर्चा शतक विषैं अनेक

सिद्धान्त शास्त्रनि का कथन मथन करिकै विचारि कैं द्यानतरायजी नैं भली भांति तत्त्वसार काढ्या है, बालबुद्धी मन्दबुद्धी जीवनि के सिद्धांतनि विषैं प्रवेश होने कै अर्थि कह्या है। द्यानतरायजी कहै हैं इन सब कवित्तनि विषैं एक जीव द्रव्यका नाम ही सारभूत है। तातैं जीव पदार्थ ही का हमनें श्रद्धान किया है। जो भले प्रकार एक जीव द्रव्य का स्वरूप प्रमाण नय निक्षेपनि करि जाणि लिया सो सब ही जायगा सकल सिद्धान्त द्वादशांग जीव द्रव्य के जानणे वास्तै है।



छह काल, कर्म भूमि की स्त्री, पंचू जाति, चोदह गुणस्थान, क्षपक श्रेणी, अयोगी जिन इनके संहनन का यंत्र														
षट काल संहनन रचना	सुषमा सुषमा प्रथम १			सुषमा २		सुषमा दुषमा ३		दुषमा सुषमा ४		दुषमा ५	दुषमा दुषमा काल			
	१ आदि को			१ आदि		१ आदि को		६ सर्व		अंत के ३	१ अंतको स्फाटिक और नाहीं			
कर्म भूमि की स्त्रीनि के	३ अंत के अर्द्धनाराच १ कीलक १ स्फाटिक १													
एकेन्द्रियादि संज्ञी पंचेंद्रिय पर्यंत संहनन रचना	एकेन्द्रिय जीव			बेइंद्री		तेइंद्री		चौइंद्री		असंज्ञी पंचेंद्री		संज्ञी पंचेंद्री जीवनि के सर्व		
	०			१ अंत को		१ अंत को		१ अंत को		१ अंत को		६ वज्रवृषभनाराच वज्रनाराच नाराच, अर्द्धनाराच, कीलक,		
गुण स्थान चौदह रचना	मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ	सू	उ	क्षी	स	अ
	६	६	६	६	६	६	६	३ आदि	३ आदि	३ आदि	३ आदि	१ आदि	१ आदि	०
क्षपक श्रेणी संहनन रचना	मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ	सू	उ	क्षी	स	अ
	०	०	०	०	०	०	०	१ आदि	१ आदि	१ आदि	१ आदि	१ आदि	१ आदि	०